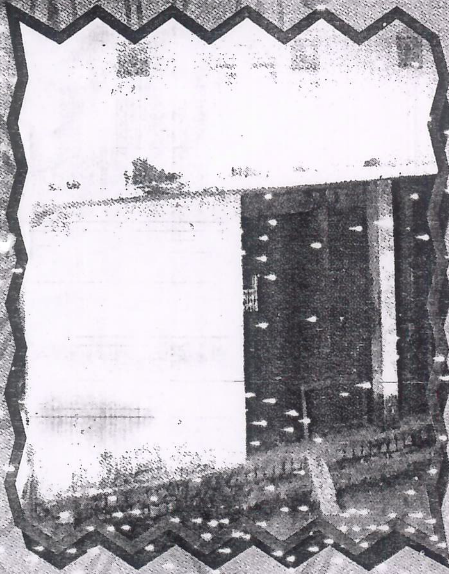
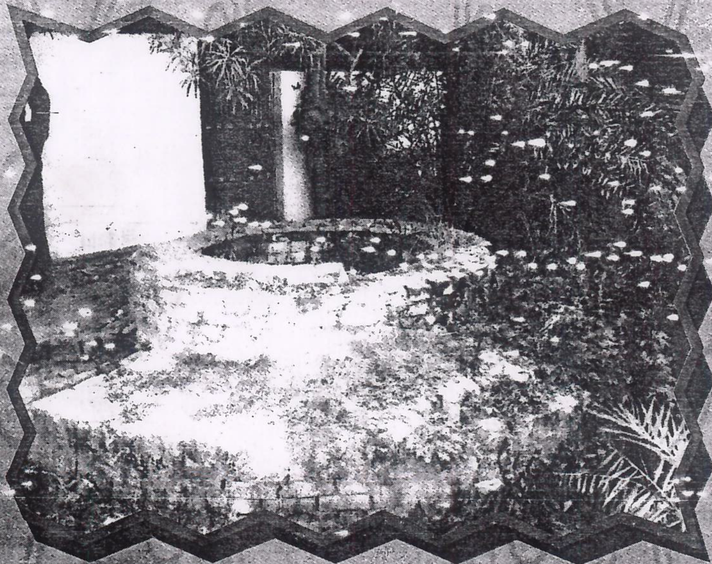
कबिलपुरक किछु विशिष्ट दर्शनीय स्थल



रमानिवास

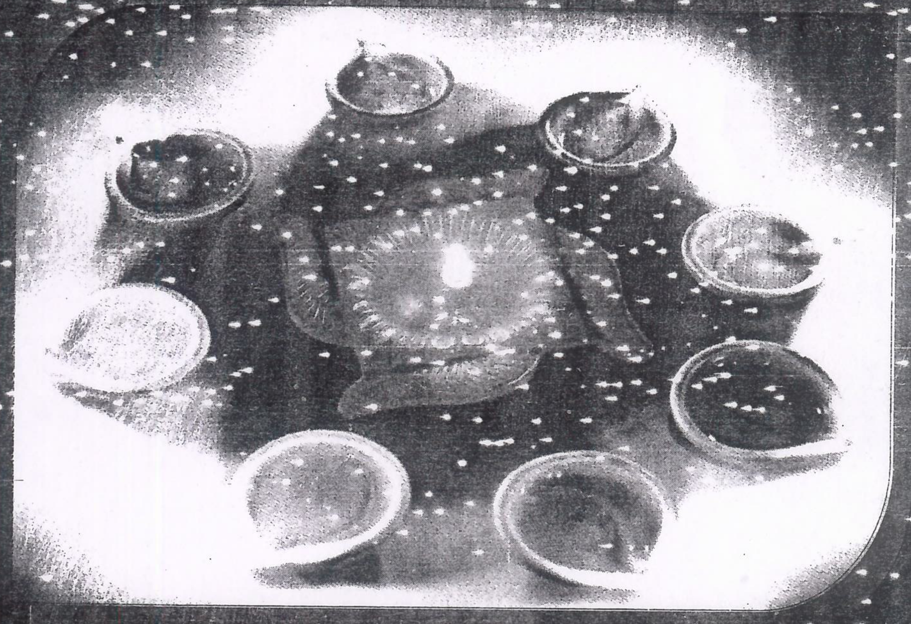


लहेरियासराय रेलवे ओवरब्रिज



विधाताझा निर्मित इनार

कथा-लोककथा

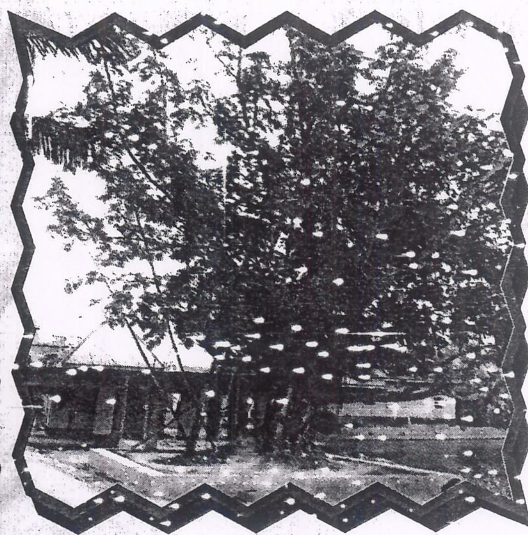


डा. योगानन्दझा

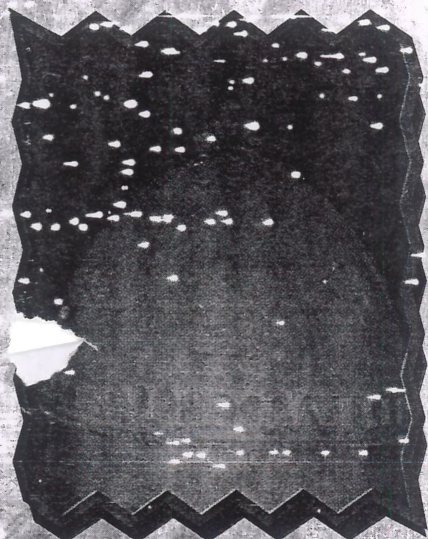
कबिलपुरक किछु विशिष्ट दर्शनीय स्थल



श्रीरामजानकी मन्दिर



श्रीकेशवेश्वरनाथ महादेव एवं ब्रह्मस्थान



श्रीमन्नारायण झूला मन्दिर



झूला मन्दिर गर्भगृह

कथा-लोककथा

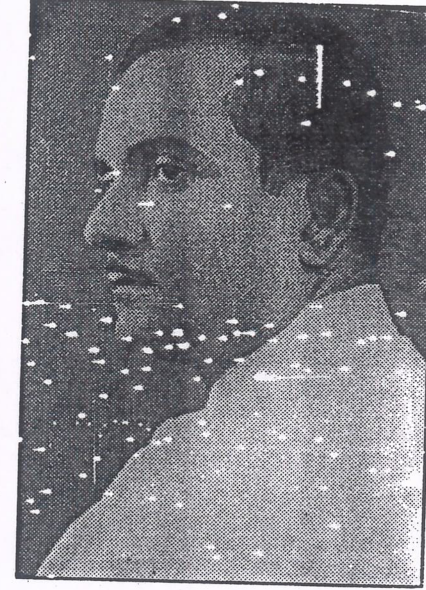
डा. योगानन्दझा



मिथिला रिसर्च सोसाइटी
दरभंगा

KATHA-LOKAKATHA A collection of Maithili Stories
by ***Dr. Yoganand Jha,*** Kabilpur, Laheriasarai
Darbhanga-846001, Bihar, Rs. 100.00

© : कीर्त्ति झा
प्रकाशक : मिथिला रिसर्च सोसाइटी
कबिलपुर, लहेरियासराय
दरभंगा - 846001
प्रकाशन वर्ष : 2010
वितरक : साहित्य निकेतन
न्यू मार्केट, लहेरियासराय
दरभंगा- 846001
मो.–09234680452
प्रति : 500
मूल्य : 100.00 (एक सय टाका) मात्र
आवरण शिल्प : सुप्रिया
मुद्रण : शेखर प्रकाशन, पटना
मो. 9334102305
सम्पर्क सूत्र : 06272-244161, 09334493330



स्व. लक्ष्मीकान्त ठाकुर
(02.01.1938—17.11.1998 इ.)

विद्या-विनय-शीलसँ नितदिन बढ़बथि जे उत्साह ।
लखनउरक घाटीमे कहियो खलखल पुण्य प्रवाह ।।
मस्त समस्तीपुरमे तैओ मिथ्या जगतेँ श्रान्त ।
तिलतोयाञ्जलि हमर यैह, हे ठाकुर लक्ष्मीकान्त ।।

जानकी नवमी
22.05.2010

योगानन्दझा

सगर राति दीप जरय
मैथिली कथालेखनक क्षेत्रमे शान्त क्रान्ति

मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे **सगर राति दीप जरय**क नामे चलल एहि शान्ति क्रान्तिक तेसर (07 जुलाइ, 1990) आ पचासम (21 फरबरी, 2004) आयोजन दरभंगा शहरमे भेल छल । मुदा, मुख्यालय लहेरियासराय आइ धरि बांचल छलैक । एहि लेल डा. योगानन्दझा धन्यवादक पात्र छथि।

राज्य सरकारक प्रशासनक केन्द्रक सन्निकट होएबाक कारणें कबिलपुरक महत्त्व बहुत पूर्वहिसँ छैक । मुदा गत किछु दशकसँ ई मैथिलीक अध्ययन-अध्यापन एवं साहित्य-सर्जनाक संग मैथिली भाषा-साहित्यक गतिविधिक नीति-निर्धारणक एक सशक्त केन्द्र रूपमे ख्याति अर्जित कए लेलक अछि। एहन महत्त्वपूर्ण स्थानमे सगर राति दीप जरय आयोजित होएब, कम आनन्दक बात नहि थिक ।

मुजफ्फरपुरसँ सुपौल धरिक सगर रातिक यात्रामे कतेको बेर निराशाजनक स्थिति आएल । कतेको गोटय एहि रतिजग्गा पिकनीककेँ बन्द करबाक परामर्श देलनि, मुदा काठमाण्डूसँ कोलकाता, विराटनगरसँ बनारस, जनकपुरसँ राँची, देवघरसँ पूर्णियाँ, सुपौलसँ जमशेदपुर धरि सगर राति दीप जरैत रहल । नव-नव कथाकार अपन नव-नव कथाक संग अपनाकेँ जोड़ैत गेलाह । विभिन्न स्थानक मातृभाषा अनुरागीक स्नेह आ सहयोग एकरा भेटैत गेलैक । सगर राति दीप अवाधित रूपें जरैत रखबा लेल ओलोकनि टेमी-बातीक ओरिआओन सुरुचिपूर्वक करैत रहलाह । जे सब एकरा अजगुत बुझैत छलाह, सहटि, लग आबि अपने आँखिए देखल । विश्वास भेलनि ।

सगर राति दीप जरय कोन पृष्ठभूमिमे आ प्रयोजनवश शुरू भेल छल, आयोजन हेतु कोन-कोन शर्त्त आवश्यक छलैक, तकरा स्पष्ट करबाक हेतु हम प्रथम तीन संयोजकक आमंत्रण पत्रक सारांश प्रस्तुत करब ।

सगर राति दीप जरयक अवधारणाक जन्म 'किरण जयन्ती'क अवसर पर 01 दिसम्बर, 1989कें लोहनामे साहित्यकारलोकनिक बीच भेल। मुदा साकार भेल प्रभासकुमारचौधरीक माध्यमसँ। ओहि अवधारणाकेँ साकार करबाक उद्देश्यसँ प्रभासकुमारचौधरी साहित्यकारलोकनिकेँ आमन्त्रित करैत छओ जनवरी 1990क पत्र द्वारा अनुरोध कएने छलाह–'आदरणीय, अपनेकेँ विदित होएत जे किरण जयन्तीक अवसरपर लोहनामे एकत्रित साहित्यकार लोकनि निर्णय लेलनि जे पंजाबी साहित्यकारलोकनिक द्वारा आयोजित 'दीवा जले सारी रात' जकाँ भरि राति कथापाठक आयोजन घूमि-घूमि कए विभिन्न स्थान पर साहित्यकारलोकनिक आवास पर होअय। पहिल आयोजन 24 दिसम्बर, 1989 केँ कटिहारमे अशोकक डेरा पर राखल गेल छल जे स्थगित भए गेल, एक दुखद घटनाक कारणें।'

आगू ओ लिखैत छथि–'हमरा पत्र द्वारा ई समाचार भेटल आ एहि आयोजनक प्रारम्भ मुजफ्फरपुरमे करबाक आग्रह सेहो। हम एहि निर्णयक स्वागत करैत दिन-राति कथा पाठ आ परिचर्चाक अष्टयामक आयोजन 21 जनवरी 1990, रवि दिन राखल अछि। सादर आमंत्रित छी। अपनेक उपस्थितिये पर आयोजनक सफलता निर्भर अछि। अपने 21 तारीखकेँ भोरे दस बजे पहुँचि जाइ हमर कार्यालय जकर पाछाँ हमर निवास सेहो अछि। ई स्थान मुजफ्फरपुरक प्रसिद्ध देवीस्थानक सामने अछि। कोनो तरहक असुविधा नहि होएत। 21 तारीखकेँ दिनुका भोजनोपरान्त कार्यक्रम शुरू होएत, जे प्रात धरि चलत। कथापाठ (नव लिखल कथा) ओ ओहि पर विशेष चर्चा होएत।

अपन अएबाक सूचना पत्र द्वारा पहिनहि दए दी तँ विशेष सुविधा रहत। अगिला कार्यक्रमक स्थान आ तिथिक निर्णय एही ठाम कार्यक्रममे लेल जाएत। डेओढ़, कटिहार, दरभंगा, पटना आ जनकपुरमे कार्यक्रम करबाक विचार अछि। अहाँक आगमनक प्रतीक्षामे–प्रभास कुमार चौधरी।'

एही प्रकारेँ सगर रातिक अवधारणाकेँ प्रभासकुमारचौधरी साकार कएल। हुनक पत्नी ज्योत्सनाचौधरी करतेबताक आँगनक गृहपत्नी जकाँ आगत साहित्यकारक स्वागत करैत भरि राति टेमी उसकबैत रहलीह। पति द्वारा आयोजित साहित्यिक कार्यक्रममे पत्नी द्वारा भरि राति टेमी उसकाएब आ अतिथिक स्वागतमे तत्पर रहबाक दोसर आ सेहो दू बेर उदाहरण प्रस्तुत कएलनि अछि–काठमाण्डूक दूनू आयोजनमे श्रीमती रूपा धीरू।

पहिल सगर रातिक आयोजनमे रमेश (थाक), शिवशंकर श्रीनिवास (बसात मे बहैत लोक), विभूति आनन्द (अन्यपुरुष), अशोक (पिशाच), सियारामझा 'सरस' (ओहि साँझक नाम), प्रभास कुमार चौधरी (खूनी), रवीन्द्र चौधरी, आदि कथा पढ़ल। डा. नन्दकिशोर हिन्दी कथाक पाठ कएने छलाह। अध्यक्षता कएल रमानन्द रेणु। कथाकारलोकनिक अतिरिक्त कथा चर्चामे भाग लेलनि जीवकान्त, भीमनाथझा, मोहन भारद्वाज, डा. रमानन्दझा 'रमण'। पठित कथापर चर्चाक उपरान्त डा. रमण अपन कथा विषयक आलेख **शैलेन्द्र आनन्दक कथा यात्राक** पाठ कएने छलाह।

साहित्यकारक स्वाभिमानक रक्षाक हेतु चर्चाक क्रममे निर्णय भेल जे समाद पर सगर रातिक आयोजनक भार लेबाक अनुरोध स्वीकार नहि कएल जाएत। आमंत्रित कएनिहार लेल स्वयं उपस्थित भए सहभागी बनब आवश्यक कए देल गेल। एकर निर्वाह अद्यावधि भए रहल अछि। एक शब्दमे कहि सकैत छी, इएह शर्त सगर रातिक प्राण थिकैक। जीवकान्तक अनुरोध पर दोसर सगर राति डेओढ़मे तीन मासक बाद करबाक निर्णय भेल।

एहि ठाम हम दोसर (डेओढ) आ तेसर (दरभंगा)क संयोजक द्वारा प्रेषित पत्रक अंश प्रस्तुत करब जाहिसँ सगर रातिक लक्ष्य तँ स्पष्ट होएबे करत पत्र लिखबाक क्रम कोन स्थितिमे सम्प्रति अछि, सेहो बूझल भए जाएत। डेओढ़ आयोजनक संयोजक जीवकान्त लिखैत छथि––'मैथिली भाषाक कथाकार लोकनि एक ठाम बैसथि, अपन नव रचना पढ़थि आ ओहि पर टीका-विश्लेषण करथि, कथाक गति देबामे सामूहिक प्रयत्न करथि। एहि उद्देश्यसँ कथा रैलीक आयोजन डेओढ़मे कएल जाइछ–सृजनात्मक उपलब्धि लेल एकरा स्मरणीय बनेबामे अपन योगदान करी।'

दोसर आयोजनमे प्रो. रमाकान्त मिश्र, कीर्तिनारायण मिश्र, डा. तारानन्द वियोगी, नवीन चौधरी आदि संग भए गेलाह। डा. भीमनाथझा आ प्रदीप मैथिलीपुत्र दुनू गोटे संयुक्तरूपें आयोजनक भार लेल जें श्रीविजयकान्त ठाकुरक सौजन्यसँ चिनगी मंच द्वारा दरभंगामे सम्पन्न भए सकल। तेसर सगर रातिक संयोजक डा. भीमनाथझा लिखैत छथि–'पत्र पत्रिकाक एहि संक्रान्ति कालमे साहित्यमे संवादहीनताक स्थिति आबि गेल अछि, कथाक स्थिति तँ आर दयनीय। स्पष्टतः कथा लेखनमे गतिरोध देखल जा रहल अछि। एकरे दूर करबाक इच्छुक किछु युवा साहित्यकर्मी कथा-संवाद लेल गोष्ठीक आयोजनक निर्णय लेलनि।'

दरभंगाक आयोजनमे एकटा नव अध्याय लिखाएल । से थिक एहि अवसर पर पोथीक लोकार्पण । सगर रातिक अवसर पर लोकार्पित पोथीक संख्या निश्चिते उत्साहवर्धक अछि । तथापि ई उल्लेखनीय अछि जे एहि अवसर पर लोकार्पित होअएबाला पहिल पोथी पण्डित श्रीगोविन्दझाक कथा संग्रह 'सामाक पौती' थिक ।

प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त आ भीमनाथझाक पत्रसँ सगर रातिक आयोजनक लक्ष्य एवं कोन परिस्थितिमे 'सगर राति दीप जरय' सन कार्यक्रम शुरू भेल छल, स्पष्ट अछि । सगर रातिक नियमक अनुसार दरभंगाक आयोजनमे चारिम सगर राति तीन मासक बाद जनकपुरमे डा. धीरेन्द्रक अनुरोध पर आयोजित करबाक निर्णय भेल छल ! मुदा, कोनो कारणवश आयोजनमे विलम्ब होइत देखि पण्डित दमनकान्तझाक पटना आवास पर पण्डित श्रीगोविन्दझाक संयोजकत्वमे चारिम आयोजन भेल । प्रसिद्ध कथाकार उपेन्द्रनाथझा 'व्यास' अध्यक्षता कएल आ कथापाठ कएल । निशा भाग रातिमे व्यासजी अध्यक्षताक भार राजमोहन झाकेँ सौंपि देने छलाह। प्रदीप बिहारी पहिल बेर एहीठाम सम्मिलित भए अगिला आयोजन बेगूसरायमे करबाक भार लए लेलनि । दमन बाबू आ' व्यासजी नहि छथि । दूटू गोटे मोन पड़ि रहल छथि । प्रभास कुमार चौधरीक अन्तिम सहभागिता बेगूसरायमे सम्पन्न उनतीसम सगर रातिमे छल । डा. धीरेन्द्र अन्तिम बेर बिरौठोमे कथा पढ़ने छलाह । बनारसमे सगर रातिक उद्घाटन कएने छलाह हिन्दीक प्रख्यात साहित्यकार ठाकुर प्रसाद सिंह । एहि ठाम हमर आँखिक समक्ष हुनकालोकनिक स्मृति साकार भए गेल अछि ।

ओना मुजफ्फरपुरसँ प्रभास कुमार चौधरीक संयोजकत्वमे सगर रातिक यात्रा आरम्भ भेल छल । मुदा केन्द्र रहल पटने । पटनामे सात खेप सगर राति आयोजित भेल अछि । कटिहारक सगर रातिमे नवानीमे आयोजनक निर्णय भेल छल । संयोजक मोहन भारद्वाज प्रो. सुरेश्वर झाकेँ कथाकार रूपमे प्रस्तुत कएलनि ! ओतय श्यामानन्द चौधरी आ झंझारपुरक तत्कालीन डी. एस. पी. सरदार मनमोहन सिंह सम्मिलित भेल छलाह । ओ बरोबरि सम्मिलित होइत रहलाह । पंजाबक कलमकेँ मिथिलाक फुलबाड़ीमे चतरल देखि प्रमुदित होइत छलाह । सुरेश्वरझा डा. रामबाबूक सौजन्यसँ सकरीमे आयोजन कएल । सकरीमे ए. सी. दीपक अएलाह । नेहरामे आयोजन भेल । नेहरामे मन्त्रेश्वरझा

सम्मिलित भेलाह । विराटनगरसँ जीतेन्द्र जीत अएलाह । नेहरामे सगर रातिक अवसर पर पठित कथाक एक प्रतिनिधि संग्रह प्रकाशित करबाक निर्णय भेल। डा. तारानन्द वियोगी एवं रमेश सहर्ष दायित्व ग्रहण कएल । कथा संग्रह **श्वेतपत्र** प्रकाशित भेल । 'श्वेतपत्र' मे पेटघाट धरि पठित कथासँ बीछल कथा संगृहीत अछि । सगर राति दीप जरय कार्यक्रमकेँ जितेन्द्र जीत नेहरासँ विराटनगर, नेपाल पहुँचाओल । विराटनगरसँ बनारस आ' बनारससँ पटना । पटनामे बुद्धिनाथझा, अर्धनारीश्वर, रा. ना. सुधाकर, केदार कानन, अरविन्द ठाकुर संग भेलाह तँ सगर रातिक दीप सुपौल पहुँचि गेल । सुपौल राँ बोकारो, ओतयसँ पैटधाट आ पैटघाटसँ रमेश रंजन जनकपुरधाम लए गेलाह । जनकपुरधामसँ इसहपुर । इसहपुरसँ श्यामानन्द चौधरी झंझारपुर आनल । ओतयसँ धोघरडीहा, बहेड़ा, सुपौल आ फेर सुपौलसँ धीरेन्द्र प्रेमर्षि काठमाण्डू लए गेलाह । काठमाण्डूसँ रामनारायणदेव राजविराज आ' ओतयसँ कोलकातामे प्रभास कुमार चौधरी सगर रातिक रजत जयन्ती आयोजित कएल । बेगूसरायसँ श्याम दरिहरे संग भेलाह अछि । कतेको सगर रातिक सहभागी डा. योगानन्दझा सपत्नीक उपस्थित भए जनकपुरधामसँ एकर दीप कबिलपुर आनल अछि । कहबाक तात्पर्य जे नव-नव लोकक अबैत रहलासँ सगर रातिक आयोजन बढ़ैत गेल। किन्तु जतय कतहु अग्रिभ प्रस्तावक संकट होइत छलैक प्रभासजी आ' फेर कमलेशजी ठाढ़ भए जाइत छलाह । एमहर आबि अशोक, प्रदीप बिहारी, श्याम दरिहरे, अजित कुमार आजाद आदि कतेको उत्साहित साहित्यकार दीपकेँ जरैत रखबा लेल सदा तत्पर रहैत छथि। जेना-जेना किछु लोक संग होइत गेलाह अछि, ओहिना किछु गोटे अपनाकेँ असम्बद्ध सेहो करैत गेलाह अछि । एकर मुख्यतः तीनि टा कारण अछि–

1. अस्वास्थ्य,
2. पठित कथाक प्रतिक्रिया पर खौंझा कए असंगत प्रहार, आ
3. प्रतिक्रिया सूनि हतोत्साहित होएब, एवं
4. कार्यालयीन व्यस्तता ।

एहि बीच नियमित एवं सक्रिय रूपसँ सहभागी बनैत कतेको साहित्यकार अपन अस्वास्थ्य अथवा वार्धक्यक कारणें आब सम्मिलित नहि भए पाबि रहल छथि जाहिमे प्रमुख छथि पण्डित श्रीगोविन्दझा, रमानन्द रेणु, सोमदेव, जीवकान्त, मोहन भारद्वाज आदि । पठित कथा पर अपन स्पष्ट

मंतव्यसँ चर्चाकेँ जीवन्त बनौनिहार प्रो. रमाकान्त मिश्र कथाकार शिवशंकर श्रीनिवास प्रतिक्रियासँ आहत भेला पर सकरीक बाद अपनाकेँ पूर्णतः समेटि लेलनि । विविधा पर साहित्य अकादमीक पुरस्कारक विरोधमे केदार काननक नेतृत्वमे कलमल सुपौलक साहित्यकारक प्रतिक्रियाक कारणें डा. भीमनाथझा जाएब छोड़ि देलनि जे प्रभासजीक मनौअलि पर पण्डित गोविन्दझाक गाम इसहपुर जएबाक लेल तैआर भेल छलाह । तकर बाद कमे ठाम गेलाह अछि। 'श्वेतपत्र' मे अपन कपचल कथासँ आहत जीतेन्द्र जीत अपन बाट काटि लेलनि। किछु गोटे एहि आशाक संग संबद्ध भेल छलाह जे लोक प्रशंसाक महल ठाढ़ कए देत, तकर पूर्त्ति नहि भेला पर उत्साह कमि गेलनि । किछु गोटेक मास्टरी नव आगन्तुक लेल आतंककारी एवं अनुत्पादक सेहो भए गेल अछि ।

सगर रातिक प्राण थिक अप्रकाशित आ अपठित कथाक पाठ । ओहि पर श्रोता अपन प्रतिक्रिया व्यक्त करैत छथि । ई प्रतिक्रिया तात्कालिक होइछ तेँ सम्भव रहैत छैक जे पुनः सुनला वा पढ़ला पर भिन्न प्रतिक्रिया हो। एहि सक्रियताक तीन प्रकारक सकारात्मक प्रभाव अछि ।

1. रचनात्मक सक्रियतामे वृद्धि
2. कथाक शिल्पमे सुधारक अवसर आ
3. व्यक्तित्वमे सहनशीलताक गुण बढ़ेबाक अवसर ।

पहिल सगर रातिमे प्रायः आठटा कथाक पाठ भेल छल । कथाक संख्या क्रमशः बढ़ैत गेल । सबसँ बेसी कथाकारक सहभागिता महिषीमे भेल छल । एहि बीच जतेक कथासंग्रह छपल अछि, अधिकांश कथा सगर रातिक अवसर पर पठित आ चर्चित अछि । वयोवृद्ध साहित्यकार श्यामानन्द ठाकुर बहेड़ामे संग भेलाह । ओहि ठामसँ संग छथि । हुनक सक्रियताक अनुमान एहीसँ कए सकैत छी जे ओ प्रत्येक आयोजन लेल दूटा कथा लिखैत छथि । एमहर आबि पठित कथाक चर्चाक स्वरूप बदलि गेल अछि । पहिने पठित कथाधरि अपन प्रतिक्रिया सीमित राखल जाइत छल । मुदा आब व्यक्त विचारकेँ कटबा पर विशेष ध्यान रहैत अछि । एहिसँ पक्ष-विपक्षक स्थिति बनि जाइछ । कतेको ठाम अप्रीतिकर स्थिति उत्पन्न भए गेल अछि । चर्चा बहकय नहि, एहि लेल प्रभासजी पूर्ण सतर्क रहैत छलाह । हुनक अभाव खूब खटकैत रहैत अछि ।

कवि सम्मेलन मनोरंजनक हेतु आयोजित होअय लागल अछि । रचनात्मक स्पर्धा अथवा सक्रियताक महत्त्व गौण छैक । तेँ कविलोकनि गओले गीत गबैत छथि । मुदा, सगर रातिक अवसर पर अप्रकाशित एवं अपठित कथा पढ़बाक बाध्यताक कारणें रचनात्मक सक्रियता बढ़ल अछि । एक बेर व्यासजी गोविन्द बाबूकेँ परामर्श दैत कहने छलथिन्ह जे घूमि-घूमि भरि राति जागब अहाँक स्वास्थ्य लेल ठीक नहि अछि । गोविन्द बाबूक उत्तर छल जे हमरा एहिसँ उर्जा प्राप्त होइत अछि । आँकड़ा कहैत अछि, सबसँ बेसी भरि राति ओएह बैसलाह अछि तथा सबसँ बेसी हुनके व्यक्तिगत पोथीक लोकार्पण एहि अवधिमे भेल अछि । ई थिक सगर रातिक रचनात्मक प्रभाव। रचनाकारकेँ उर्जस्वित रखबाक महान अवसर !

कवि सम्मेलनमे आयोजककेँ विदाइक व्यवस्था करय पड़ैत छनि । सगर राति एहि व्याधिसँ मुक्त अछि । सहभागी सत्यनारायणक पूजाक हकार जकाँ अबैत छथि आ भोर होइते घूमि जाइत छथि । एहिमे व्यावसायिकता नहि अछि, ई मातृभाषा प्रेमक सन्देश दैत अछि ।

सगर रातिक आयोजन विभिन्न स्थान पर भेलासँ स्थानीय विद्वत् समाज आकर्षित होइत छथि । एकर प्रभाव ओहि स्थानक मैथिलीक सक्रियता पर पड़ैत अनुभव कएल गेल अछि । सगर राति दीप जरय समानधर्माकेँ भरि राति एक ठाम रहबाक अवसर दैत अछि । विचारक आदन-प्रदानक केन्द्र स्वतः मैथिली भाषा आ साहित्य भए जाइत अछि । एहिसँ परिचय आ अनुभवक क्षेत्रक विस्तार होइत छैक । मैथिलीक रचनाकारमे भावात्मक संबद्धता बढ़ैत अछि ।

सगर राति दीप जरयक निरन्तर आयोजनसँ मैथिली कथा लेखनक क्षेत्रमे शान्तिपूर्ण क्रान्ति आबि गेल अछि । आन भाषाभाषी आ साहित्यकारक बीच मैथिलीक कथाकारक प्रतिष्ठा बढ़ल अछि । विशेषतः एहि हेतु जे मैथिलीक कथाकार दूर-दूरसँ अपन पाइ खर्च कए पहुँचैत छथि । कथा पढ़ैत आ सुनैत छथि । अपन कथा पर लोकक प्रतिक्रिया धैर्यपूर्वक सुनैत छथि । आ फेर अग्रिम आयोजनमे सम्मिलित होएबाक संकल्पक संग घूमि जाइत छथि। जे सगर राति, कथाकार लेल कल्पित भेल छल, समाजक सुधी समाजक अन्तःकरणमे प्रवेश कए मैथिली भाषा-साहित्यक पक्षमे अनुकूल वातावरण बनेबामे सार्थक भूमिकाक निर्वाह कए रहल अछि । जहिआ सगर

राति प्रारम्भ भेल छल एवं एखनुक जे स्थिति अछि ओहिमे गुणात्मक आ परिमाणात्मक–दूनू प्रकारक परिवर्तन स्पष्ट अछि । विकासक ई दिशा आ गति निश्चिते शुभ लक्षण थिक । एहि शुभ लक्षणक उदाहरण तँ इएह थिक जे दरभंगाक पहिल आयोजनमे पहिल पहिल दूटा पोथीक लोकार्पण भेल छल आ स्वर्ण जयन्तीक अवसर पर 36 टा पोथी लोकार्पित भेल । विद्वानलोकनि कहि सकैत छथि कोन भाषाक मंच पर एकबेर 36 टा पोथीक लोकार्पण भेल होएत। दरभंगामे एकटा अमेरिकन नागरिक मैथिलीमे कथाक पाठ कएने छलाह । सगर राति दीप जरयक दृष्टिसँ बोकारो उर्वर छल, एम्हर आबि राँची, जमशेदपुर, देवघर, पूर्णियाँ आदि स्थान मैथिली लेल जगरना कएलक अछि। इहो शुभ लक्षण थिक ।

मुदा, सगर रातिक लोकप्रियताक आ बिना वर-विदाइक साहित्यकार एवं साहित्यानुरागीक उपस्थितिक उपयोग कतहु-कतहु कथा पाठ एवं ओहि पर चर्चासँ भिन्न प्रयोजन सिद्धि लेल सेहो भए गेल अछि जे सगर रातिक मूल अवधारणाक अनुकूल नहि अछि । ओहिसँ बचबाक चाही ।

सहरसामे दोसर खेप सगर रातिक अयोजन 21 जुलाई, 2007केँ भेल छल । ओहि ठामक साहित्यकारक अनुपस्थितिक प्रसंग सूनि जीवकान्त जी 22 जुलाई, 2007क अपन पोस्टकार्डमे लिखलनि–

'सहरसा कथा गोष्ठीक खबरि भेल । कथा गोष्ठी भूतकालक वस्तु भेल । लेखन काज लेखक सभ छोड़ने जाइत छथि । सेमिनार, तकर प्रचलन बढ़ल अछि । टी.ए./डी.ए. भेटघाँट ई सभ भए गेल तँ बूझू जे लेखकीय अस्मिताक अहंकार पुष्ट भेल आ एक दोसराकेँ बल देल । सरकारी मान्यताक बाद भाषामे अनेक राजरोग उत्पन्न होइत छैक । मैथिली निरपवाद रूपें पहिनेसँ एहो रोगाहि भेल छथि । जिबैत रहओ ।'

मैथिलीकेँ सेहो राजरोग ग्रसित कए लेलक अछि । अपने नजरि दौड़ाएब तँ देखब जे एही दरभंगा शहरमे गत बीस वर्षमे विदाइबाला कतेक आयोजन भेल अछि । मुदा बीस वर्षमे शुद्ध साहित्यकारक एवं बिनु विदाइबाला ई तेसरे आयोजन थिक ।

हमरा विश्वास अछि सगर रातिक नियमित आयोजन मैथिलीकेँ राजरोगसँ मुक्त रखबामे सफल होएत ।

पटना, 05 मइ, 2010 डा. रमानन्दझा 'रमण'

प्राक्कथन

लेखक द्वारा कथा-पाठ ओ श्रोता द्वारा तत्काल प्रतिक्रिया प्रस्तुत कऽ लेखककेँ ठाठबाक पद्धतिक माध्यमे प्रकाशन सुविधासँ वञ्चित मैथिली कथा-विधाक आयाम-विस्तार आ नव-नव लेखकक सृजन मैथिली कथा आन्दोलन **सगर राति दीप जरय**क उद्देश्य रहल अछि । मैथिलीक विशिष्ट चिन्तक प्रभासकुमारचौधरी एहि आन्दोलनमे आजीवन अग्रणीक भूमिका निमाहैत रहल छलाह ।

हुनका बादो मैथिली भाषा-साहित्य-प्रेमीलोकनिक सद्प्रयासें ई आन्दोलन गतिशील रहल अछि आ नहि केवल भारतेक विभिन्न भूभाग अपितु नेपालहुमे अपन ऊर्जा प्रदर्शित करैत रहल अछि ।

वस्तुतः ई कथागोष्ठीक एक गोट विशिष्ट प्रकार थिक जकर आयोजन प्रत्येक तीन मास पर होइत आबि रहल अछि । एहि बेरुक सत्तरिम आयोजन सम्पन्न करयबाक अवसर **कबिलपुर** ग्रामकेँ प्रदान कयल गेलैक अछि। कबिलपुर ग्राम प्रमंडलीय मुख्यालय दरभंगाक कोर्ट एरिया लहेरियासरायक पूब भर लहेरियासराय स्टेशनसँ सटले रेलवे लाइनक ओहि पार अवस्थित अछि आ आब दरभंगा नगर निगमक एक गोट वार्डक (वार्ड सं.-46) अंश थिक। लहेरियासराय स्टेशनक दछिनबारी कात स्थित रेलवे ओभरब्रिजसँ पूब दिस उतरैत देरी ई बस्ती शुरू भऽ जाइत अछि । राजस्व ग्रामक नकसामे ई मौजा बलभद्रपुरक एक गोट टोल थिक आ कबिरपुर शब्दक विकसित रूप थिक । लहेरियासराय चट्टी चौकसँ पूब दिस चलि रेलवे गुमती पार कऽ दक्षिण दिस भेला उत्तर बहादुरपुर प्रखण्ड कार्यालय दिस जाइत सड़क पर किछुए आगू बढ़ला पर एकर बाह्य भाग आरम्भ भऽ जाइत छैक । एहि सड़क सँ फुटैत पश्चिम ओ दक्षिण दिसुक सड़क गामक अन्तःवर्ती भाग दऽ होइत गामक दछिनबरिया छोर पर स्थित श्री श्री 108 महामंगला काली मन्दिर दिस जाइत अछि । पञ्चकोशीक आस्थाक केन्द्र ई मन्दिर **भगवतीस्थान** नामे प्रख्यात अछि आ मौजा बहादुरपुरमे पड़ैत अछि ।

महामंगला काली मन्दिरक स्थापना कायस्थ परिवारक **स्व. मंगल सिंह दास** द्वारा लगभग तीन सय वर्ष पूर्व कयल गेल छल । कहल जाइत अछि जे स्व. दास नेपाल सरकारक दीवान छलाह आ राज दरबारसँ सम्पृक्त छलाह। एक बेर राजक खजानामे चोरि भेलैक आ तकर सुबहा पर हिनका दुनू हाथ काटि देबाक दण्ड देल गेलनि । मुदा किछुए दिनुक बाद असली चोर पकड़ल गेल आ स्व. मंगलसिंह दास निर्दुष्ट सावित भऽ गेलाह। तथापि हिनका जे दण्ड देल जा चुकल छलनि तकर प्रतिकार सम्भव नहि छलैक। अन्तत: राजाज्ञासँ हिनका प्रायश्चितस्वरूप काटल गेल हाथक सदृश सोनाक हाथ प्रदान कऽ सम्मानित कयल गेल छलनि । ओही सोनसँ ई पर्याप्त भूखण्डक मालिक बनि बहादुरपुरमे अपन निवास बनौलनि तथा दक्षिणमुखी महामंगला काली ओ गणेशक विग्रहक स्थापनापूर्वक भगवतीस्थानक निर्माण करौलनि । हुनके द्वारा मन्दिर परिसरमे छोट सन महादेव मन्दिर पूब दिस ओ हनुमान मन्दिर पश्चिम दिस बनबाओल गेल छल जे एखनहु वर्तमान अछि । एही परिसरमे मन्दिरक पार्श्वमे पूबे दिस हमरालोकनिक देखल एक गोट विशालकाय पीपरक गाछ छल जे ब्रह्मस्थानक रूपमे जानल जाइत छल । एकर पार्श्वमे दू गोट भालसरीक विशाल-विशाल गाछ छलैक । पहिला पीपरक गाछ आ कि भालसरीक गाछ तँ आब परिसरमे नहि अछि मुदा एक गोट अन्य पीपरक गाछ परिसरक दक्षिण दिस वर्त्तमान अछि जे ब्रह्मस्थानक स्थानापन्न रूपमे पूजल जाइत अछि । एही परिसरमे पूब दिस स्व. विष्णुकान्तझाक स्मृतिमे विशालकाय महादेव मन्दिरक स्थापना हुनक पत्नी स्वं. रामदाइ द्वारा इसवी सन् 1990 मे कयल गेल अछि ।

प्रखण्ड कार्यालय दिस जाइत सड़कसँ पश्चिम दिस फूटल सड़क कनेक आगू बढ़ि दक्षिण मुड़ि जाइत अछि आ **भगवतीस्थान मार्ग**क रूपमे जानल जाइत अछि । एहि सड़क पर किछु आगू बढ़ला पर **श्रीकेशवेश्वरनाथ महादेव मन्दिर** ओ **ब्रह्मस्थान** अछि । एहि मन्दिरक स्थापना स्व. केसोझा द्वारा इसवी सन् 1891 मे कयल जयबाक सूचना एहिमे प्रदत्त शिलापट्ट पर अंकित अछि ।

श्रीकेशवेश्वरनाथ महादेव मन्दिरक पोखरिक पुबरिया भीड़ दऽ जाइत भगवतीस्थान मार्गक समानान्तर सड़क आ भगवतीस्थान मार्गक पार्श्ववर्ती क्षेत्र कबिलपुर गामकेँ सीमांकित-रेखांकित करैत अछि ।

लहेरियासराय स्टेशनक रेलवे ओभरब्रिजसँ नीचा उतरैत देरी कनेक आगू बढ़ला पर दहिना कात **श्रीरामजानकी मन्दिर** अछि जकर स्थापना संवत् 2010 मे स्व. मूरतझाक धर्मपत्नी शशिमुखी देवी द्वारा कयल जयबाक सूचना एकर अग्रभागमे खचित शिलालेख पर उपलब्ध अछि । एहि मन्दिरक सामनेवला सड़क कनेक आगू बढ़ला पर भगवतीस्थान मार्गमे जुड़ि चौकक निर्माण करैत अछि जकर वाम भागमे श्रीकेशवेश्वर नाथ मन्दिर देखि पड़ैत अछि आ पूब भागक गलियारी भगवतीस्थान मार्गक समानान्तर मार्गमे गामक मध्यवर्ती अन्त:भाग होइत जुड़ि जाइत अछि ।

भगवतीस्थान मार्ग पर ऊपर कथित चौकसँ किछु दूर दक्षिण बढ़ला पर जखन ई मार्ग पूब दिस मुड़ि भगवती स्थान दिस आगू बढ़ैत अछि, ताही ठाम सँ दहिना कातक भाग बहादुरपुर मौजाक अन्तर्गत पड़य लगैत अछि । एहि स्थल पर एक गोट तेराहा बनैत अछि जकर पश्चिम दिस जाइत सड़क लहेरियासराय स्टेशनक पुबारि प्लेटफार्म पर जा कऽ समाप्त भऽ जाइत अछि।

एहि गामक उतरबारी छोर पर स्थित अछि **श्रीमन्नारायण झूला मन्दिर** जे अचारी मन्दिरक नामे प्रख्यात अत्यन्त प्राचीन मन्दिर अछि । ई मन्दिर रामानुजाचार्य मतानुयायी रामाश्रयी वैष्णव सम्प्रदायक मठ थिक जकर स्थापना 1901 इसवीमे कयल जयबाक सूचना भेटल अछि । स्व. रघुवंशझा द्वारा प्रदत्त तीन कट्ठा भूमि पर ई मन्दिर अवस्थित अछि ।

छतिबने छतिबन मूलक शाण्डिल्यगोत्रीय ब्राह्मण बहुल एहि गाममे ओना तँ सामाजिक समरसता ओ ग्राम स्वाबलम्बनक उदाहरणस्वरूप अनेक जातिक लोक निवास करैत रहल छथि मुदा सांख्यिकीक दृष्टिऐ सर्वाधिक संख्यामे ब्राह्मणक बाद दुसाध, डोम ओ धनिकार जातिक निवास अछि ।

प्रख्यात वकील स्व. जीवछ झा (1895-1985) सँ प्राप्त कुर्सीनामाक आधार पर एहि गामक इतिहास लगभग अढ़ाइ सय वर्ष पुरान अछि आ एकर आदि संस्थापक बाबूझासँ लऽ कऽ एखन धरि लगभग दस पुस्त गुजरि चुकल अछि । एक गोट लोकश्रुतिक अनुसार मुसलमानी आक्रान्तालोकनिक अत्याचारसँ सीदित दू भाइ छतिबन ग्राम (तारसराय स्टेशनसँ उत्तर दिस अवस्थित) सँ उजाड़ कऽ मौजा बलभद्रपुरमे अपन निवास बनौलनि । परवर्ती कालमे पारस्परिक बटबाराक फलस्वरूप बाबूझाकेँ कबिलपुरक जमीन्दारी भेटलनि आ ओ एतय निवास करय लगलाह । कहल जाइत अछि जे इस्ट इण्डिया

कम्पनीक राजमे जमीन्दारी टैक्स बढ़ओलां उत्तर टैक्स नहि जमा करबाक कारणे बाबूझाक जमीन्दारी नीलाम करा देल गेल छलनि मुदा ओ कम्पनीक विरुद्ध नालिश कऽ कलकत्ता हाइकोर्टसँ मुकदमा जीति इसवी सन् 1799 मे अपन जमीन्दारी पर पुनः कायम भऽ सकलाह ।

लहेरियासराय टावरक उत्तर-पूब कोनमे करीब फर्लांग भरि दूरी पर बाबूझालोकनिक द्वारा स्थापित ब्रह्मस्थान एखनो धरि कबिलपुर ग्रामक आप्त पूज्य स्थल मानल जाइत अछि आ उपनयनक क्रममे ओतय बरुआ द्वारा घोड़कलस चढ़यबाक विधानक अनुपालन भइये रहल अछि । लगभग तीन पुस्त पूर्व धरि बलभद्रपुरक संग कबिलपुरक केशकट्टीक सम्बन्धक निर्वाह होइत देखल गेल अछि मुदा आब गामोमे केशकट्टीक दृष्टिऍ अनेक खण्ड देखल जाइत अछि । एहि गामक लोक प्रव्रजित होइत रहलाह अछि आ हुनका लोकनिक सखा-पातक निवास सिनुआर गोपाल, पघाड़ी, रूपैठ आदि गाममे पाओल जाइत छनि । युवा अन्वेषक **श्रीमदन कुमार 'मधुप'** परिश्रमपूर्वक एहि गामक इतिहासक खोज कयलनि अछि मुदा हुनक अन्वेषण अनधीत-अप्रकाशित रहबाक कारणे एहि सम्बन्धमे किछु स्पष्ट नहि कहल जा सकैछ ।

र् ध्वनिक ल् ध्वनि आ ल् ध्वनिक र् ध्वनिमे परिवर्त्तन एक गोट सामान्य भाषावैज्ञानिक प्रक्रिया थिक मुदा कबिरपुरक कबिलपुरमे परिवर्त्तन एहि प्रक्रियासँ प्रभावित रहितो एहि गामक ऐतिहासिक पक्षक एक गोट महत्त्वपूर्ण विषयकेँ संजोगने अछि । रेलवे ओभरब्रिजक सामनेवला चौकक सटले उत्तर अति प्राचीने कालसँ एक घर कबिराहाक वास छलैक जकर अन्तिम खाढ़ीक छलाह **दसँई भगत** । दसँइ भगत जाधरि जीबैत रहलाह ताधरि वर्षमे एक बेर सुदूर प्रदेश सबसँ कबिराहालोकनि हुनका ओहिठाम जूटल करथि आ दू-तीन दिन धरि उत्सवपूर्वक निर्गुण गीत सभक गायन कयल करथि । ओलोकनि वाद्यक रूपमे अपन-अपन चुट्टाक व्यवहार करैत देखल जाथि । दसँइ भगतक मुइलाक बाद हुनका अपन अङनहिमे समाधि दऽ देल गेलनि । हुनक पत्नी जे दासिन नामे गाम-समाजमे जानल जाथि, भीख-दुःख माङि कऽ गुजर चलाबथि । कहियो-कहियो दसँइ भगतक चेलालोकनि आबि दासिनक सुधि लेल करथि । खास कऽ ओलोकनि दसँइ भगतक वर्षीक दिन अवश्य जमा होथि आ निर्गुण भजन गाबि-गाबि कऽ

ओहि चौककेँ गुञ्जायमान कयल करथि । पछाति जखन दासिनो दिवंगता भेलीह तँ हुनको दसँइ भगतक समाधिक पार्श्वहिमे समाधि दऽ देल गेलनि । यद्यपि आब ओहि दूनू मृत्तिकानिर्मित धिमकाक कोनो अवशेष नहि बुझना जाइत अछि मुदा एहि कबीरपंथी साधुक आवासक संग कबिरपुर नामक अवश्ये किछु सम्बन्ध छैक, से अनुमानगम्य अछि । भऽ सकैछ जे बाबूझाक अयबासँ पूर्वहिसँ ई कबिराहा परिवार ओहि वीरान स्थलमे बसल रहल हो आ तँ ओ क्षेत्र कबिरपुर कहबैत-कहबैत कबिलपुरमे परिणत भऽ गेल हो ।

श्री सोमदेवजीक शब्द मे—

पग-पग पोखरि पान-मखान
मधुर बोल मुसकी मुख पान
विद्या-वैभव-शान्ति प्रतीक
धन्य देश दरभंगा थीक

से दरभंगा नगर-निगमक ई अंश अपन आत्यन्तिक लघु आकारहुमे छओ गोट पोखरिकेँ समेटने अछि यथा—केशवेश्वरनाथ महादेव मन्दिरक गुरनी पोखरि, श्रीरामजानकी मन्दिरक नवकी पोखरि, अथन्न चौड़ी, झोटिया पोखरि, हेमनि आ भगवतीस्थान मन्दिरक देवानजी पोखरि । कहियो एहि पोखरि सभक जलसँ सार्वजनिक भोजहुमे पाक सिद्ध कयल जाइत छल । साम्प्रतिक विश्व ध्रुवीकरणक समयमे जखन अगिला विश्वयुद्ध जलेक हेतु होयबाक सम्भावना अभिव्यक्त कयल जा रहल अछि, कृषि वैज्ञानिकलोकनि भूतलक जलक निरन्तर नीचा ससरबाक प्राकृतिक प्रक्रिया पर चिन्ता व्यक्त करैत देखि पड़ैत छथि, एहि पोखरि सभकेँ सामान्यतः मल निस्सारण केन्द्र ओ प्रदूषणक जड़िक रूपमे परिणत कऽ देल गेल अछि ।

चापाकलक प्रचलनसँ पूर्व धरि एहि ठाम दर्जनो इनार छल । सुनल अछि जे एकटा पूर्व पुरुष स्वनामधन्य **विधाताझा** केवल अपन अमलदारीमे सात गोट इनारक निर्माण कऽ यज्ञपूर्वक जनसामान्यकेँ समर्पित कयने छलाह। मुदा आब तँ ने ओ देवी ने ओ ठाम । कतोक कीर्तिस्तम्भ कालक चपेटमे पड़िकी तँ खण्डहर भऽ गेल अछि किंवा भूखण्डक लोभमे विलोपित कऽ देल गेल अछि ।

द्रष्टव्य अछि श्रीउमाकान्त लाल दास, बहादुरपुर द्वारा रचित इनारक स्तुति सम्बन्धी ई पद जे इनारक सामाजिक-सांस्कृतिक महत्ताकेँ विज्ञापित करैत अछि–

हे इनार ! तोँ श्रेष्ठ कूप छह
गाम-गाम मे वरुण रूप छह
जे घट रिक्त पुराबह तकरा
जे अछि तृषित जुराबह तकरा
सब जन छथि तोहर अनुरागी
जे जल भरथि आर बड़भागी
ओ सभ वनिता तोहर संगी
साँझ पराते रंगो-चंगी
जे घट भरल माथ पर चढ़ले
जे घट भरल डाँड़ पर अड़ले
तोहरा ठामे लागए मेला
हास-विलासे ऊठए धैला
तोहर जीवन सकारथ भेल
आदि संस्कृति केर रूप लेल
सतत भरल खाली नहि कखनो
बहुत भरए पनिभरनी जखनो
तोँ संस्कृतिक अपने गाथा
सतत ऊँच छह तोहर माथा
तोँ पावन तोहर जल पावन
तोरा देखि पुलकित अन्तर्मन

गामक सुदूर दक्षिणमे बाधक ओहिपार गाछी लग प्रशस्त श्मसान भूमि अछि जकरा किचिनिञा गाछी नामे जानल जाइत छैक । एहिसँ सम्बद्ध श्रीउमाकान्तलालदासक सर्वथा अप्रकाशित पद सेहो द्रष्टव्य अछि–

गामक ओर किचिनिञा गाछी ।
जइठाँ निशि-दिन काली साक्षी ॥
जहाँ मसान तहाँ छथि काली ।
नइँ हो हिनकर खप्पर खाली ॥

कालिक केश ठेहुन धरि नमरल ।
डाकिन सबके झोंटा झबरल ॥
बसथि मसान कहाबथि शुभ ओ ।
सब अनित्य अछि इएह ध्रुव हो ॥
मरणक बेरुक इहए संगी ।
महाकाल के छथि अर्धङ्गी ॥
हिनकर वास किचिनिञा गाछी ।
अन्तकाल मे इहए साक्षी ॥
के नइँ लेलनि गाछिक नामो ।
के नइँ अयला हिनका ठामो ॥
अन्त मरण अछि सब ठाम मे ।
एहेन किचिनिञा सभ गाम मे ॥

एहि गाममे शिक्षाक दीप जरौनिहारक प्रथम पांक्तेय बंकालाल ओ प्रीतमलालक परवर्ती **स्व. श्याम नारायण उपाध्याय** प्रवासी सरयूपारी ब्राह्मण छलाह जे स्व. केसोझाक आग्रह पर हुनके द्वारा प्रदत्त भूखण्ड पर पुरनी पोखरिक उतरबरिया भीड़ पर गाममे शिक्षाक ज्योति जगयबाक निमित्त बसाओल गेलाह । मण्डन मिश्रसँ सम्बद्ध मिथिलाक प्रचलित उक्ति 'शिष्योपशिष्यैरूपगीयमानं' हिनकामे साकार भेल । ई अपन घरक चटिसार पर गामक नेना सभकेँ सहशिक्षाक माध्यमे पहिलासँ पाचम वर्ग धरिक शिक्षा प्रदान करब शुरुह कयने छलाह आ गामक अधिकांश परिवारक तीन-तीन पीढ़ीकेँ प्राथमिक शिक्षा प्रदान कयलनि । एकर फलस्वरूप आइ गाममे कतोक शिक्षाविद्, चिकित्सक, अभियन्ता आदिक धर्रोहि लागल देखि पड़ैछ । हिनक आजीविकाक साधन ताहि समयमे प्रचलित शनिचरी व्यवस्था छल आ ग्रामीणलोकनि हिनक आदेशानुसार समय-समय पर हिनक आवश्यकताक वस्तुक सेहो आपूर्त्ति करैत रहैत छलाह ।

पहिलासँ पाचम वर्ग धरि हमहूँ हिनके चटिसारमे पढ़ने छलहुँ । ताधरि हिनक चटिसार जिला परिषद संपोषित अपर प्राइमरी विद्यालयक स्वरूप धऽ लेने छल आ एहिठाम हिनक संग देबाक हेतु दुइ गोट शिक्षिकाक नियुक्ति भऽ गेल छलनि जाहिमे **श्रीमती सरस्वती देवी** गामक बहिनजीक रूपमे प्रसिद्धि पओलनि । परवर्ती कालमे स्व. उपाध्यायक इ चटिसार क्रमशः

उत्क्रमित होइत आजुक राजकीय मध्य विद्यालय, कबिलपुर ऐट बहादुरपुर (भगवतीस्थान) क रूपमे विकसित भेल आ एखनहुँ एहि गामक प्राथमिक शिक्षाक विशिष्ट केन्द्र बनल अछि ।

'संतोषी ब्राह्मण: सुखी' केँ चरितार्थ कयनिहार स्व. उपाध्याय सदृश स्मरणीय ओ स्पृहणीय आत्माक प्रति प्रणति निवेदन करैत हिनक सान्निध्यमे गणेश चौठक अवसर पर गामक घरे-घर जा कऽ शिक्षार्थी लोकनिक माता-पितासँ गुल्लो-डंटाक संग विलौकी माङल जयबासँ सम्बद्ध ई गीत ओहिना गोन अछि—

श्री गणेशजी चढ़े तुरंग
नौ सय मोती झलके संग।
एक मोती हर तालमताला
गुरु चढ़ाये मंडित माला
पंडित माला दियो अशीष
जीबहु चटिया लाख बरीस

तहिना एकटा पदक अन्तिम अंश द्रष्टव्य—

घरमे रखबऽ मूसा ले जेतऽ
बाहर रखबऽ चोर ले जेतऽ
गुरुजी के देब तऽ नाम हो जेतऽ

हिनक पुत्रद्वय क्रमश: श्रीरामाश्रयउपाध्याय ओ श्रीकृष्णदेवउपाध्याय तथा हिनकालोकनिक शाखा-सन्ततिलोकनि नीक-नीक पद पर सुस्थापित भऽ अपन परिवारक शैक्षणिक परम्पराकेँ गौरव प्रदान कऽ रहल छथि ।

कबिलपुरक कीर्त्तिपुरुषक रूपमे कमसँ कम दुइ गोट नाम अत्यन्त व्यापक अछि । एहिमे पहिल थिकाह स्व. पं. मूरतझा जे अंग्रेजक जमानामे पुलिस इन्सपेक्टरक पद धरि पहुँचलाह आ विप्लवीलोकनिक हाथें कालक ग्रास बना देल गेलाह । ज्योतिषाचार्य, कविवर पं. सीताराम झा 1341 साल (इसवी सन् 1934)क भूकम्प वर्णन काव्यमे हिनक प्रशस्तिमे कहने छथि—

श्रीमूरतिझा वीर पुलिस इन्सपेक्टर मनसौं ।
फैलन्हि रक्षा अपन डिवीजन भरिक जतन सौं ॥
जनिक प्रशंसा योग काज होइत अछि सबटा ।
लागि सकत नहि पार जकर किछु अंश लिखबटा ॥

दोसर थिकाह स्व. **पं. दामोदरझा** जे पुलिसक सिपाहीक पदसँ हवलदारक पद धरि पहुँचल छलाह । 1942क भारत छोड़ो आन्दोलनमे हिनका विप्लवी भारतीयं छात्र समुदायक जुलूस पर लाठी चार्ज करबाक आदेश भेटल छलनि । राष्ट्रीय भावनासँ अभिभूत स्व. झा अपन अधिकारीक आदेशक अवहेलना कयलनि । परिणामस्वरूप हिनका नौकरीसँ बर्खास्त कऽ देल गेलनि। तत:पर विपन्न आर्थिक स्थितिमे निर्वाह करितो ओहि राष्ट्रीय यज्ञमे प्रदत्त अपन आहुतिक कारणे ई जीवन भरि राष्ट्रभक्तिक उत्साहसँ प्रदीप्त रहलाह । परवर्ती कालमे हिनक धर्मपत्नी श्रीमती सावित्रीदेवीकेँ अवश्ये भारत सरकार स्वतंत्रता सेनानी पेन्शन प्रदान कऽ हिनक त्यागक सम्मान कऽ सकलनि ।

श्रीसत्यप्रकाशझा नवका पीढ़ीमे गामक कला शिक्षाकेँ वर्द्धिष्णुता प्रदान करबामे तत्पर भेल छथि । हिनका द्वारा संचालित **शत्रुघ्नझा संगीत महाविद्यालय** (स्था. 1985) गामक एक गोट विशिष्ट शिक्षा केन्द्रक रूपमे विकसित भऽ रहल अछि । प्रसिद्ध मैथिली साहित्यकार पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' जीक बम्बै डायरीक अनुसार कन्यादान फिल्ममे हुनका द्वारा लालककाक भूमिका निमाहबाक हेतु कयल गेल यात्रामे एही गामक श्रीरत्नेशझा हुनका संग देने छलथिन ।

एहि गामक आवासी दुसाधवर्गमे अधिकांश शिक्षित, शीलवान ओ सामाजिक प्रकृतिक भेटताह । तथापि ओहि समुदायसँ जातीय कार्यक हेतु जाहि समर्पित व्यक्तित्वकेँ हमरालोकनि देखने छियनि, से छलाह **स्व. जगदेव पासवान** (आत्मज स्व. बाबूलाल पासवान) । ई यावज्जीवन गाममे राहु पूजा करबैत रहलाह जाहिमे खीरक खौलैत टोकनाकेँ भगत अपना हाथसँ लाड़ैत छल, तरुआरिक धार पर सहज भावें पैर दऽ हुमचैत छल आ मन्त्र बलें प्रज्वलित अग्नि होइत लोककेँ सुरक्षित टपबैत छल । स्व. पासवान सलहेस पूजामे सेहो अग्रेसर रहैत छलाह आ विभिन्न स्थान पर नियत तिथि पर बार्षिक सलहेस पूजा बेहरीक माध्यमे करबैत छलाह । पूजा तँ एखनो आब दू-दू ठाम विभिन्न तिथिमे होइत अछि जाहिमे कबिलपुर ओ बहादुरपुरक दुसाधवर्ग खण्डित रूपमे देखि पड़ैत छथि । गामक पश्चिम-दक्षिण सीमान्त पर स्थित सलहेसक भव्य गहबर एक गोट दर्शनीय स्थलक रूपमे विकसित भेल अछि।

स्व. जगदेव पासवानक अमलदारी धरि गाममे लगभग प्रति वर्ष बाहरसँ मंडली मङाय सलहेस नाच कराओल जाइत छल । एहि नाचक आनन्द समस्त गामक लोक जातिनिरपेक्ष रूपमे उठबैत छलाह । हमहूँ नेनपनमे ई नाच देखने छी जकर आरम्भक सुमिरन पदक ई अंश मात्र मोन अछि–

सुमिरन सुमिरन सुमिरन करै छी ।
छप्पन कोटि देवकेँ हम सुमिरन करै छी यो ।

मुदा सांस्कृतिक पक्षक ई नाच जेना आब गामक हेतु इतिहासक विषय बनि गेल अछि ।

एहि गामक व्यवसायी वर्गमे निर्धन साहुक नाम अत्यन्त आदरक संग लेल जाइत रहलनि अछि । भगवतीस्थान मार्ग पर अवस्थित **सोनियाँ-निर्धन निवास** हिनक स्मृतिकेँ जोगौने अछि ।

गामक पूब दिस स्थित बहादुरपुरक एकटा टोल पर मुसलमान लोकनिक वास रहलनि अछि । एहि ठाम एक गोट मस्जिद सेहो अछि जतऽ समय-समय पर बाहरसँ मुल्लालोकनि आबि प्रवचन (जलसा) कयल करैत छथि । एहि टोल पर मुहर्रमक अवसर पर लगभग दू सप्ताह धरि राति-राति भरि अस्त्र क्रीड़ा जमैत अछि आ सौंसे गाम समवेत भऽ तकर आनन्द लैत छथि । एहि टोल पर दाहा बनयबाक दुइ गोट अखाड़ा वर्त्तमान अछि आ मुहर्रमक दिन दुनू दाहाकेँ सौंसे गाममे परिभ्रमण कराओल जाइत अछि । मुहर्रमक अवसर पर राति-राति भरि झरनीक स्वरसँ सम्पूर्ण ग्राम गुञ्जायमान होइत रहैत अछि आ हिन्दू-मुसलमान सभ गोटे मिलि झरनीमे भाग लैत छथि। कोनो दुर्घटनामे दहिना पैर कटि जयबाक बादो अपन व्यवसायमे प्रवीण बड़ही जातिक स्व. जनक शर्मा उर्फ **चौठी शर्मा** झरनी गायनक विशेषज्ञक रूपमे परिचिति पओने छलाह । हिनकासँ सूनल एक गोट झरनी गीत एखनो मोन पड़ैत अछि–

हम दूर देशिन गे बेटी, जेबै अपन सासुर
बाबा जे बिआहल गंगा पारे जी ।
सबके बिआहल बाबा, देश तिरहुतबा
हमरा बिआहल गंगा पारे जी ।
कोना हम जेबै हो बाबा कोना हम अयबइ
कोना हम हेबइ गंगा पारे जी ।

डोली चढ़ि जइहें गे बेटी डोली चढ़ि अबिहें
नैया चढ़ि होइहैं गंगा पारे जी !
साओन-भादव केर उमड़ल नदिया
कोना जेबइ गंगा पारे जी !
सिकिया जे चीरि-चीरि बेड़बा बनेलियै
ताहि चढ़ि हेबै गंगा पारे जी ।
टूटि गेल सिकिया बाबा बुड़ि गेल बेड़बा
बुड़ि गेलै बेटी मझधारे जी !
नहिरा के लोक सब करुणा करैये
ससुरामे बाजै छै बधाबा जी ॥

साहित्यिक-सांस्कृतिक गतिविधिक दृष्टिऐ ई गाम सुदूर पूर्वहिसँ अत्यन्त संवेदनशील रहल अछि । सत्तरिम 'सगर राति दीप जरय'क साक्षी **रमानिवास** एहि गामक समृद्ध ओ प्रसिद्ध **साहित्य पुस्तकालय**क ऐतिहासिक स्थल थिक जे ज्ञानक दीपकेँ स्नेह प्रदान करबाक विशिष्ट केन्द्र छल । एहि केन्द्र पर मिथिला-मैथिल-मैथिलीसँ सम्बद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक कार्यक्रमक निरन्तरता रहैत छलैक । विद्यापति दिवस ओ महापुरुषलोकनिक जयन्ती मनयबाक हेतु एहि परिसरकेँ प्रशस्त मानल जाइत रहलैक । विभिन्न विद्यापति दिवसक अवसर पर पं. त्रिलोकनाथ मिश्र, प्रो. रमानाथ झा, डा. धर्मप्रियलाल, पूर्णानन्ददास, बाबू साहेब चौधरी, देवनारायण झा सदृश मनीषी लोकनि एतय पदार्पण कऽ चुकल छथि । महामना **पं. सुरेन्द्र झा 'सुमन'**क सातम दशकक पूर्वार्द्धमे मनाओल एक गोट जयन्तीक दृश्य एखनहुँ हमर मानसपटल पर अछि जाहिमे हमहूँ सुमनजीकेँ श्रद्धा-सुमन समर्पित कयने छलियनि । अवश्ये ताहि समय हम अल्पवयस्क नेना रही ।

एहि गामक दुइ गोट संस्था क्रमशः **भारती कला परिषद्** ओ **दुर्गा ड्रामेटिक क्लब** प्रतिवर्ष खास कऽ शारदीय नवरात्राक अवसर पर भगवती स्थानमे सोल्लास नाट्यमंचनक आयोजन कयल करैत छल । एहि मंचनक माध्यमे अनेको मैथिली नाटक सभ अभिनीत होइत रहल यथा–**घटकैती, बसात, उगना, चीनीक लड्डू, सुखायल डारि नव पल्लव, एक राति, एना कते दिन** आदि । प्रसिद्ध नाट्यसंस्था **लक्ष्मी अभिनयम्** सेहो दीपावलीक अवसर पर मैथिली नाटकक मंचन करैत छल । **तुलसी मानस गोष्ठी** (स्थापित 1985इ.) ओ **महिला मानस गोष्ठी** गाममे रामचरित मानसक एकाह्न पारायण एवं नवाह्न पारायण तथा साप्ताहिक सुन्दरकाण्ड पाठक आयोजन करैत रहल अछि । नामधुन संकीर्त्तनपरक नवाह, भजन-कीर्त्तन,

यज्ञादि, भागवत कथा, होलीक अवसर पर नगर भ्रमण, कातिक मासमे श्रीउमाकान्तलालदास द्वारा आयोजित नाम-संकीर्त्तनपरक नगर भ्रमण, देवोत्थान एकादशीक अवसर पर झूला मन्दिरक भगवानक विग्रहक नगर-परिभ्रमण आदि एहि गामक सांस्कृतिक चेतनाक विभिन्न स्वरूपकेँ प्रस्तुत करैत रहल अछि । राष्ट्र चेतनाक दृष्टिएँ कुसहा बान्ह टुटला पर कोशीक विभीषिकासँ ग्रस्त मानव समुदायक सहायतार्थ महिला मानस गोष्ठी द्वारा धन एकत्र कय प्रधानमंत्री राहत कोषमे जमा करबाक उद्योग उल्लेखनीय तँ अछिये संगहि एहिठामक नारी-शक्तिक जागरूकताक प्रतीक थिक ।

मैथिली साहित्यक विकास मार्गकेँ प्रशस्त करबाक हेतु प्रतिबद्ध एहि गामक निवासी निविष्ट प्राध्यापक, वरेण्य समालोचक, प्रसिद्ध कथाकार-नाटककार-निबन्धकार ओ मैथिली जगतमे **सव्यसाची**क नामे ख्यात कीर्त्तिपुरुष **डा. रामदेवझाकेँ** एक गोट अवदानक रूपमे देखल जाइत छनि । साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक मौलिक (1991) ओ अनुवाद (1994) पुरस्कारसँ सम्मानित एहि मनीषीक अनेक ग्रन्थ पुस्तकाकार प्रकाशित भऽ साहित्यक भंडारकेँ परिपूरित करैत रहल अछि । हिनक कतोक रचनावली असंगृहित रूपमे पत्र-पत्रिका सभमे विकीर्ण पड़ल छनि । ई साहित्य अकादेमीक मैथिली भाषाक परामर्शदातृ समितिक एक दशक धरि सदस्य आ इसवी सन् 1998 सँ 2002 धरि संयोजक एहि चुकल छथि । हिनक प्रसिद्ध कथासंग्रह सभ छनि क्रमश: **एक खीरा: तीन फाँक, मनुक सन्तान, धरती माता** ओ **आजी माँ** । बालकथा लेखनक दृष्टिएँ हिनक **इजोती रानी** मानक ओ मार्गदर्शक मानल जाइत छनि । हिनक महिला लेखनपरक तीन गोट पत्रात्मक शैलीक धारावाहिक उपन्यास, एक गोट नाट्यसंग्रह, चारि गोट अनूदित ग्रन्थ, दस गोट अनुसन्धान-आलोचनापरक ग्रन्थ आदि प्रकाशित छनि । तदतिरिक्त ई मध्यकालीन मैथिली साहित्यक नओ गोट ग्रन्थक स्वतंत्र सम्पादन ओ तीन गोट ग्रन्थक संग-सम्पादन कयने छथि । प्रसिद्ध मैथिली पत्रिका वैदेही कतोक वर्ष धरि हिनक सम्पादन-कलाक लाभ उठौने अछि । हिनक द्वारा सम्पादित संकल्प लोकक स्मारिका **संकल्प** (1 सँ 5) शोध-पत्रिकाक प्रशस्ति पओने अछि । लगभग अर्द्ध शतकहुसँ बेसी कालसँ अद्यपर्यन्त ई मैथिली लेखन-कार्यक निरन्तरता बनौने छथि आ हिनक कतोक रचनावली विभिन्न भाषामे अनूदित-प्रकाशित भऽ मैथिली-लेखनक परिसर-विस्तार कयने अछि ।

डा. रमानन्दझा एहि गामक दोसर विभूति थिकाह । ई इतिहास विषयक प्राध्यापन करैत शिक्षण जगतमे प्राचार्यक पद धरिकेँ सुशोभित कऽ अवकाश ग्रहण कयने छथि । हिनक अनधीत-अप्रकाशित शोध-प्रबन्ध **'हिस्ट्री ऑफ सरकार तिरहुत अण्डर इस्ट इंग्डिया कम्पनी १७५५-१८५६** ज्ञान-गरिमाक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि ।

एहि पंक्तिक लेखक सेहो एखन धरि मा मैथिलीक चरणारविन्दमे अनेको पोथी सभक समर्पण कऽ चुकल छथि, यथा **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य, आलेख सञ्चयन; लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा, मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली** आदि । हिनका द्वारा रचित **स्नेहलता** विनिबन्ध पर्याप्त प्रशस्ति पओलक अछि । मिथिलाक लोकप्रज्ञाक प्रतिष्ठापनक दृष्टिएँ ई विनिबन्ध महत्त्वपूर्ण अछि । एखन धरि हिनक तीन गोट अनूदित ग्रन्थ सेहो प्रकाशित भेलनि अछि जाहिमे पी. सी. रायचौधुरी कृत अँग्रेजी पोथी **द फॉक टेल्स ऑफ बिहार**क मैथिली अनुवाद **बिहारक लोककथा** पर हिनका वर्ष 2005 क साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार प्रदान कयल गेलनि । इहो अनेक ग्रन्थक सम्पादन कयने छथि आ लेखन कार्यक निरन्तरता बनौने छथि।

एम. एल. एस. एम. कॉलेज, दरभंगाक प्राध्यापक डा. मुरलीधरझा मैथिली गतिविधिसँ संपृक्त रहैत दुइ गोट ग्रन्थक सम्पादन कयने छथि क्रमशः **भूकम्प काव्य ओ हन्त ! अयोध्याकाण्ड** । हिनक शोधग्रन्थ **चन्दाझा ओ लालदासक रामायणक तुलनात्मक अध्ययन** मैथिली रामकाव्यक विवेचन-विश्लेषणक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि । सर्वनारायणसिंहकालेज, सहरसाक व्याख्याता डा. भाग्यनारायणझाक शोधग्रन्थ **चन्द्रनाथ मिश्र अमरक साहित्यमे हास्य-व्यंग्य** हालेमे प्रकाशित भेलनि अछि ।

युवा पत्रकार डा. शंकरदेवझाक मैथिली गतिविधि अनन्य बूझल जाइत रहलनि अछि । क्षेत्रीय अनुसन्धान ओ निर्भीक आलोचना हिनक साहित्यिक जीवनक अंग रूपमे वर्तमान छनि । अंगी रूपमे कथाकारिता ओ गेय मधुर पदावलीक रचनामे ई संलग्न देखल जाइत छथि । हिनक कथासंग्रह **'सन्धि-समास'** साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित छनि । **अमरजीक साहित्य संसार ओ पत्राचार** हिनक अन्य प्रकाशित पोथी थिकनि । **चन्दाझा स्मारणिकाक** संगहि ई साम्प्रतिक मैथिलीक एकमात्र दैनिक **मिथिला समाद**क प्रथम वार्षिकांकक सेहो सम्पादन कऽ चुकल छथि ।

आधुनिक मैथिली कथालेखनक दुइ गोट विशिष्ट हस्ताक्षर क्रमशः डा. राजाराम प्रसाद ओ डा. लालपरी देवी क्रमशः कबिलपुर ग्रामक जामाता ओ दुहिता थिकीह मुदा एतहि बसि गेल छथि । डा. राजाराम प्रसादक **कथा परिधि** ओ डा. लालपरी देवीक **नहि, किछु नहि** कथासंग्रह प्रकाशित छनि।

एकर अतिरिक्तो एहि गामक जाहि लेखक-लेखिका लोकनिक रचनाशीलता दृष्टिपथ पर अबैत रहल अछि से सभ छथि—श्रीसत्यनारायण झा, डा. श्रीमती योगमायाझा, श्रीअमरनाथझा 'अमर', श्रीगौड़ीशंकरझा, श्रीमती केवलाझा, श्रीमदनकुमारमधुप, श्रीकृष्णदेवझा, श्रीरामाश्रय उपाध्याय आदि ।

गामक भगवतीस्थानक पार्श्ववर्ती टोल बहादुरपुरक कायस्थ कुल सम्भूत स्व. राधानाथ दास ओ श्री उमाकान्तलालदास मैथिलीमे रचनाशील रहल छथि । स्व. राधानाथ दासक एक मात्र प्रकाशित पोथी छनि **गीता-माधुरी** जे श्रीमद्भगवद्गीताक ललित पद्यानुवाद थिक । श्री उमाकान्तलालदासक **मिथिला संस्कृति सौष्ठव** ग्रन्थ मिथिलाक ग्रम्य संस्कृतिक पद्यमय कोष थिक, मुदा ई अप्रकाशिते अछि।

कबिलपुरक पूबमे स्थित एकबद्ध विष्णुपुर डरहार मैथिली साहित्य लेखनक दृष्टिएँ स्व. रामचन्द्र चौधरीक माध्यमे प्रतिष्ठा पओलक । स्व. चौधरी द्वारा रचित **सभागाछीक बड़द, वन्दिनी वधू** ओ **पिया मोर बालक** मैथिली नाट्य लेखनकेँ विशिष्ट आयाम प्रदान कयने छल । मैथिलीक संगहि ई हिन्दी-अंग्रेजी लेखनगे सेहो निष्णात छलाह । हिनक किछु प्रमुख कृतिक रूपमे भगवती सीता (प्रबन्ध), किसी की याद मे, कोई देख लेगा, आधी रात के बाद, सात पत्नियों के एक पति, बेटर इंगलिस शौर्ट स्टोरीज आदिकेँ जानल जाइत छनि ।

डरहारेक श्रीजीवछझाक नेतृत्वमे लहेरियासरायमे नवम दशकमे संकल्प लोक संस्थाक माध्यमे विद्यापति पर्व चरम परिणतिकेँ प्राप्त कयने छल। एहि संस्था द्वारा प्रायोजित संकल्प स्मारिका मैथिलीमे शोध पत्रिकाक रूपमे यशस्वी मार्गदर्शक सिद्ध भेल । हिनके महासचिवत्वमे संकल्प लोक विद्यापति पर्वक अवसर पर मैथिली पोथी प्रकाशनकेँ अङ्गीकार कय प्रो. मायानन्द मिश्र रचित मैथिली उपन्यास **मंत्रपुत्र** ओ डा. रामदेवझा रचित मैथिली नाट्यसंग्रह **पसिझैत पाथरक** प्रकाशन कयने छल । ई दूनू पोथी साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत कयल गेल आ संकल्प लोकक गरिमाकेँ बढ़बैत विद्यापति पर्वक अवसर पर पोथी-प्रकाशनक योजनाक महत्ताक परिचायक सिद्ध भेल ।

लहेरियासराय क्षेत्रमे कन्या महाविद्यालयक अभाव बहुत पहिनेसँ अनुभव कयल जा रहल छलैक । सामान्य वर्गक अभिभावक अपन कन्याकेँ सुदूरवर्ती एम. आर. एम. कालेज धरि पठयबामे असौकर्यक अनुभव करैत छलाह । शिक्षा जगतक मनीषीलोकनि निरन्तर प्रयत्नमे लागल छलाह जे नारी जगतकेँ उच्च शिक्षाक हेतु लहेरियासरायमे महिला महाविद्यालयक स्थापना हो। श्रीजीवछझाक सद्प्रयासें इसवी सन् 1984 मे **नागेन्द्र झा महिला महाविद्यालयक** स्थापना कयल गेल जकर ई संस्थापक सचिवक रूपमे अद्यावधि जुड़ल छथि । हिनक एहि प्रयाससँ नारी शिक्षाकेँ एक गोट नव आयाम भेटलैक अछि । यद्यपि एखनहुँ धरि एहि महाविद्यालयकेँ विश्वविद्यालयक अंगीभूत एकाइक स्तरीयता नहि प्रदान कयल जा सकलैक अछि, तथापि लहेरियासरायक पञ्चकोशी क्षेत्रक नारीलोकनिक उच्च शिक्षाकेँ आगू बढ़यबाक विशिष्ट केन्द्रक रूपमे ई प्रख्यात होइत चल गेल अछि ।

कबिलपुरक दयादवादक रूपमे जानल जाइत बलभद्रपुर गामक स्व. डा. सावित्रीझा रचित शोध ग्रन्थ **आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'क गद्य-गरिमा** मैथिली आलोचना-अनुसन्धानक क्षेत्रमे विशिष्ट अवदान थिक ।

एहि तरहेँ कबिलपुर गाम ओ ओकर चौहद्दी साहित्यमात्र ओ खास कऽ मैथिलीक सेवामे दत्तचित्त रहल अछि । तथापि पश्चिम ओ उत्तर दिस क्रमशः पसरैत नगर सभ्यताक विकास, क्रमिक जनसंख्या वृद्धिजन्य पारस्परिक बँटबारा, सुदूर दक्षिणमे स्थापित रुग्ण कागत कारखाना आदिक कारणें एहि गामक लोक जोता जमीनसँ हाथ धोइत रहल छथि तथा आजीविकाक हेतु अधन चाकरी पर अवलम्बित होइत चल गेल छथि । मुदा सेहो चाकरी आब शिक्षाक व्यवसायीकरणक जाल एवं अन्य कतोक सामाजिक-राजनीतिक कारणवश ततेक जटिल होइत जा रहल छैक जे नूतन पीढ़ीक भविष्य चिन्तनीय भऽ गेल छैक ।

अस्तु, एहि गाममे आयोजित 'सगर राति दीप जरय'क सत्तरिम आयोजन नूतन पीढ़ीकेँ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रति प्रतिबद्धताक मार्गदर्शन मे मीलक पाथर सावित होयत, से अपेक्षा कयल जा सकैछ । ताहि दृष्टिएँ ई आयोजन सर्वथा महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैछ ।

हमरा एहि आन्दोलनसँ जोड़बाक श्रेय जाइत छनि साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीसँ कथा विधाक पोथी **सरोकार** पर सम्मानित युवा रचनाधर्मी श्रीप्रदीपबिहारीजीकेँ । पछिला शताब्दीक अन्तिम दशकमे हमर पदस्थापन बेगूसरायमे भेल आ ओतय हुनक सहज सम्पर्कमे अयबाक अवसर भेटल । ताही क्रममे ओ अपन संयोजकत्वमे बरौनी रिफाइनरी टाउनशिपमे आयोजित 'सगर राति दीप जरय' मे भाग लेबाक हेतु आग्रह कयने छलाह आ हम भरि राति जागि ओहि कार्यक्रमक आनन्द लेने रही, किछु कथा पर अपन तात्कालिक प्रतिक्रियो व्यक्त कयने रही । विदा होइत काल श्रीबिहारी अन्यान्य कथाकार-समालोचकलोकनिक संगहि हमरो देवाल घड़ी दऽ सम्मान प्रदान कयने रहथि ।

मैथिलीक एहि कार्यक्रमसँ अभिभूत भऽ हम यदा-कदा पलखति ओ साधनक अनुरूप जुड़ैत रहलहुँ जाहिमे खास कऽ श्रीकमलेशझाक संयोजकत्वमे आयोजित **अन्दौली**क, श्रीप्रशान्तक संयोजकत्वमे आयोजित **भागलपुर**क, श्रीरमाकान्तराय 'रमा'क संयोजकत्वमे आयोजित **मानाराय टोल, नरहन**क 'सगर राति दीप जरय' स्मृतिपटल पर अछि । **बेनीपुर**मे आयोजित एहि कार्यक्रमक बाद एकर स्वर्ण जयन्ती (पचासम आयोजन) पड़ैत छलैक, जाहिमे एकरा प्रवासक बदला **दरभंगा** अनबाक हेतु पर्याप्त प्रयत्न कयल गेल छल । पछिला उनहत्तरिम आयोजन जनकपुरमे आयोजित छल आ जगज्जननी जानकी मैथिलीक ओहि धामक पावन तीर्थाटनक संगहि 'सगर राति दीप जरय'क सुकठीक बनिज ओ पशुपतिक दर्शनक लोभवशात् हमहूँ जनकपुर जयबाक नेयार कयल।

अवश्ये एहि कार्यक्रममे हमर सहभागिताकेँ अनुप्राणित करबा मे सर्वाधिक प्रोत्साहन प्रदान करबाक श्रेय डा. रमानन्दझा **'रमण'**जीकेँ छनि जे एकर अधिकांश गोष्टीमे समुपस्थिते नहि रहलाह अछि अपितु हिनक एहि नियमितता ओ प्रतिबद्धताक कारणे कतोक ठाम हिनका सम्मानितो कयल जाइत रहलनि अछि । अपन तकनीकी माध्यम द्वारा ई निरन्तर हमर सहभागिताकेँ सुनिश्चित करबाक हेतु दत्तचित्त रहलाह अछि जे हिनक औदार्यक प्रतीक थिक।

साहित्य अकादेमीसँ कथाविधाक पोथी **काठ** पर पुरस्कृत प्रयोगधर्मी रचनाकार श्रीविभूतिजीक बेर-बेर आग्रह होइत रहलनि जे 'सगर राति दीप जरय' मैथिली मनीषी ओ सिद्ध कथाकार **डा. रामदेवझा**क गामहु मे होमय, तकर बीड़ा अहाँ उठा सकैत छियैक । हमहूँ कतोक वर्षसँ प्रयत्नशील छलहुँ आ अन्ततः जनकपुरमे हमर प्रस्ताव स्वीकृत कऽ हमरा जे सम्मान देल गेल ताहि हेतु समस्त रचनाधर्मीलोकनिक आभारी छियनि ।

मैथिलीक प्रति हमर प्रतिबद्धताक समग्र श्रेय मिथिला-मनीषी, डा. श्रीरामदेवझाजीकेँ रहलनि अछि, जनिक आत्मीय निर्देशनमे हमर मैथिली गतिविधि संचालित होइत रहल अछि । हिनका प्रति आभार-प्रदर्शन औपचारिकताक अनुपालन मात्र बूझल जा सकैछ। विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण एहि पोथीक कतोक कथाकेँ उपलब्ध करयबाक श्रीगणेश कयनिहार हमर स्नेही पाठक श्रीगणेशझा उर्फ **गणेश कवि** (नवादा), सम्प्रति पुस्तकाध्यक्ष, पटना चिकित्सा महाविद्यालय, पटनाक प्रोत्साहन-सम्वर्द्धनक प्रति प्रणत छी । कार्यक्रमक सफलताक प्रति सन्नद्ध कबिलपुर निवासी समाज सम्मानक पात्र छथि जनिकालोकनिक आशीर्वचन ओ पृष्ठपोषण एहि सत्तरिम सगर राति दीप जरयकेँ मानक स्तरीयता प्रदान करबाक युक्तिमे हमर संबल बनल रहल अछि। स्वागत समिति ओ कार्यकारिणीक प्रत्येक सदस्य ओ सदस्यालोकनिक प्रति आभार व्यक्त करैत छियनि । हमरालोकनिक वार्ड सं. 46क युवा नगर पार्षद बन्धु श्रीरमेशकुमारझाजीक तत्परता हमरा 'अग्रे धावति धावति' मंत्रक अनुकूल बनौने रहल अछि । हिनका शुभाशीर्वाद प्रदान करैत हिनक उज्ज्वल भविष्यक कामना करैत छियनि । पटनामे एहि पोथीक समय पर प्रकाशनक हेतु निरन्तर संग देनिहार श्रीकृष्णकान्तझा 'शीला' सेहो साधुवादक पात्र छथि ।

'सगर राति दीप जरय'क शुल्क रूपमे नूतन लिखित कथाकेँ प्रश्रय प्राप्त छैक आ तेँ हमहूँ कथालेखन दिस उन्मुख भेलहुँ । संयोगसँ कतोक 'सगर राति दीप जरय' मे हमरा कथा-पाठ करबाक अवसर सेहो भेटैत रहल जकर नमूना एहि पोथीमे देखल जा सकैछ । साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2005 मे प्राप्त कयलाक बाद मैथिलीक अनुवाद कार्यकेँ पुरस्सर करबाक दायित्वबोध बढ़ल आ संस्कृत, हिन्दी आदिक कतोक कृतिक मैथिली अनुवाद कऽ पत्र-पत्रिकामे पठायब शुरूह कयल । तकरो नमूना एहि पोथीमे अनुगुम्फित कयल गेल अछि । मैथिली अनुवादक दायित्वबोधक फलस्वरूप गाँधी-दर्शनक परिचयात्मक पोथी **मंगल प्रभात**क अनुवाद कयल जे श्रीविनोदकुमार द्वारा संचालित विद्यापति टाइम्स, मैथिली पाक्षिक, लहेरियासराय,

दरभंगाक माध्यमे मार्च, 2007 सँ अक्टूबर, 2009क अवधिमे चौदह गोट किस्तमे प्रकाशित भेल अछि आ शीघ्रे पुस्तकाकार भऽ समक्ष आबि सकैछ । किछु लेखक ओ प्रकाशकक आग्रहक बादो हुनका द्वारा निर्दिष्ट अनुवाद कार्य पलखतिक अभाव ओ चंचल वृत्ति-पक्षक कारणे संभव नहि भऽ पाबि रहल अछि । लोकवृत्त हमर अभिरुचिक आत्मीय क्षेत्र रहल अछि आ तेँ ओहू पक्षक तीन गोट नमूना एहि पोथीमे समाहित कयल गेल अछि। पोथीक समापन स्व. जीवछ झासँ उपलब्ध कबिलपुरक संक्षिप्त कुर्सीनामाक संग कयल गेल अछि ।

कबिलपुरक सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक गतिविधिक ऐतिहासिक केन्द्रस्थल एवं कहियो साहित्य पुस्तकालयक माध्यमे अज्ञान तिमिर पर विजयश्री प्राप्त करबाक हेतु प्रख्यात **रमानिवास**मे आयोजित सत्तरिम 'सगर राति दीप जरय', मैथिली दधीचि बाबू भोलालालदास द्वारा सम्पादित ओ लहेरियासरायसँ संचालित मैथिली पत्रकारिताक दुइ गोट आधार-स्तम्भ **मिथिला** ओ **भारती**क समन्वयक आधार पर आख्यात भेल अछि आ तेँ ई आयोजन **कथाः मिथिला-भारती** नामे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

अन्तमे एतबे कहब जे जाहि आयोजनक अवसर पर कतोक **दस्तावे**जक सन्धान भऽ चुकल हो, **कथा कुंभ** मे **श्वेतपत्र** आ **घोषणा पत्र** समाहित होइत रहल हो, **कथासेतु** पर चलैत **भरि राति भोर** भऽ गेल हो, ताहि आयोजनमे कथा पोथी प्रकाशनक वर्त्तमान लौलकेँ औपचारिकता मात्र बूझल जा सकैछ । तथापि जँ एहि लघुकाय पोथीसँ मैथिली कथा-आन्दोलनकेँ कनेको प्रेरणा ओ गति भेटि सकलैक तँ हम अपनाकेँ कृतकार्य बूझि सकब । इत्यलम् ।

योगानन्दझा
भगवती स्थान मार्ग, कबिलपुर
लहेरियासराय, दरभंगा-846001
सम्पर्क सूत्र : 09334493330

मैथिली दिवस
दिनांक 22.05.2010

कथाक्रम

मौलिक कथा

शास्त्र--चिन्ता

पछिला राति ओ भयंकर स्वप्न देखने छलाह । स्वप्नक बात सभ रहि-रहि कऽ हुनका मोनकेँ उद्वेलित कऽ रहल छलनि । दिन भरिक समय गंभीर चिन्तामे व्यतीत भऽ गेल छलनि ।

स्वप्न भोरहरियामे आयल छलनि । कहल जाइत छैक जे भोरुक पहरक स्वप्न सत्ये घटित भऽ जाइत छैक । तेँ अनिष्टक आशंकासँ ओ दिन भरि आक्रान्त रहल छलाह ।

निन्न टुटैत देरी ओ स्वप्नमे देखल बात सभकेँ मोन पाड़य लागल छलाह । मोन पड़लनि जे जेड़क जेड़ आततायी सभ हिमवत् प्रदेशकेँ आक्रान्त करैत जा रहल अछि । गाम-नगरकेँ तहस-नहस करैत ओ सभ आगू बढ़ल जा रहल अछि । ओकरा सभकेँ ने अपन प्राणक मोह छैक आ ने दोसराक प्राण लेबामे कनेको ममता । क्रमशः समस्त भारतीय प्रदेश ओकरे सभक अधीन भऽ गेल छैक । केओ ओकरा सभक विरोध नहि कऽ पाबि रहल छैक। सभ क्यो जान लऽ कऽ की तँ पड़ा रहल अछि अथवा मारल जा रहल अछि। कोनो प्रतिरोध नहि, कोनो विरोध नहि । जेहन भेड़ी-बकरीक झुंडक स्थिति, सैह भारतीय सन्तानक गद्धति ।

ओ एहि दृश्य सभकेँ मोन पाड़ैत रहलाह । राष्ट्रीय अनिष्टक आशंका हुनका मोनकेँ मथैत रहलनि । क्रमशः ओ आत्मस्थ भेलाह । तावत् पूब क्षितिज पर उगैत रवि-किरण क्रमशः तीक्ष्णसँ तीक्ष्णतर भऽ गेल छल । स्नान-पूजाक नित्य-नैमित्तिक काजमे बिलम्ब भऽ गेल रहबाक कारणे ओ कनेक व्यथित भऽ उठलाह आ लगले पुण्यसलिला गंगाक प्रवाह दिस विदा भऽ गेलाह ।

मुदा आइ गंगाक धार जेना ठहरल-स्तब्ध बुझना गेलनि । आजुक गंगाजलमे ओ स्निग्धता नहि बूझि पड़लनि जकर आन दिन अनुभव करैत रहल छलाह । अन्यमनस्क भावें ओ स्नान-ध्यान-पूजा-तर्पणादिक कर्म कऽ सूर्य भगवानकेँ अर्घ्य ओ भूतनाथकेँ जल दऽ अपन कुटीमे घुरि अयलाह ।

कुटी छलनि तँ बाँसे-काठसँ निर्मित मुदा छलनि धरि भव्य । झाँझन, फड़की आ माटिक दुलेब पर ढेउरल चूनक ऊपर विविध आकृतिक लिखिया सभसँ ओ सहजहिँ आकर्षक लगैत छल । खढ़क छारनिवला छत आ गोमय सँ नीपल सतह सब ऋतुमे सुखदायक रहैत छल । ई हुनक जीवनक अन्तिम पहरक विश्रामालयो छल आ कार्यस्थलो । एतहि रहि कऽ ओ एकान्त जीवन बिता रहल छलाह ।

कुटीक पूर्वोत्तर कोनमे एकटा रेहल पर रामायण, गीता, उपनिषद् ओ विभिन्न पौराणिक ग्रन्थ सभक प्रति राखल रहैत छलनि । एकरे निकट एकटा छोट सन दीयठि पर दीपो राखल रहैत छल । एकटा दोआतिमे मोसि भरल छलैक आ ओकरा लगहिमे वन्य काष्ठसँ निर्मित दू-चारि गोट लेखनी पड़ल छलैक । किछु तालपत्रक एक गोट गेंठ आगू दिस धयल छलैक जाहि पर सुरेबगर आखर आ ललित चित्रकारीक संग आकर्षक लेखन कयल गेल छलैक। दहिना कात सादा तालपत्रक एक गोट गेंठ राखल छलैक । कुटीक दछिनबारी भागमे भीतरे दिस एकटा खाट पूबे-पछिमे ओछाओल छलैक जाहि पर एकटा साधारण कम्बलेटा पाटल छलैक । बासनक नाम पर घरमे खाली एकटा सुराही आ तामक जलपात्रटा देखि पड़ैत छल ।

पयर पखारि ओ कुटीमे आबि गेलाह आ अपन आसन पर बैसि गेलाह । तत:पर देहकेँ सिक्त कऽ भस्मक त्रिपुण्ड कयलनि, चानन घसि भाल पर उर्द्धवपुण्ड्र बनौलनि आ ताहि पर भयबगर ठोप कऽ लेलनि । आब हुनक आकृति बेस आकर्षक ओ दिव्य भऽ उठल छल । रुद्राक्षक माला हाथमे लऽ ओ बड़ीकाल धरि जाप करैत रहलाह आ जखन जाप खतम भऽ गेलनि तखन नित्ये जकाँ गीताक पोथी आगू कऽ लेलनि । आने दिन जकाँ आइयो गीताक दू अध्यायक पाठ कयलनि । ई सभटा काज ओ नैष्ठिक कर्मकाण्डी जकाँ सम्पादित करैत रहलाह मुदा मोन धरि बेर-बेर स्वप्नेक दृश्यावली पर जा कऽ ठमकि जाइत रहलनि । फेर-फेर राष्ट्रक अनिष्टक भयसँ सीदित हृदय ओकरे चिन्तामे लीन भऽ गेल करनि ।

एहि चिन्तककेँ अपना लेल कोनो चिन्ता रहबे किएक करतनि ? राजकीय संरक्षणमे जीवन बिता रहल छलाह । अपना ने आगू नाथ छलनि ने पाछू पगहा । तखन चिन्ता करितथि ककरा लय ? मुदा जाहि माटि पर ई जन्म लेने छलाह, जकर अन्न खा कऽ संबलित होइत रहल छलाह, जकर प्रकृतिक कण-कण हिनक हृदयकेँ उल्लसित-प्रफुल्लित कयने रहैत छलनि, तकर अभ्युन्नतिक चिन्तन, तकर सन्ततिक मार्ग प्रशस्त रखबाक चिन्तन हिनका नेनपनहिसँ दार्शनिक प्रकृतिक बना देने छलनि । राष्ट्र आ समाजक प्रति एही हितचिन्तनक कारणे ई साहित्यकारक रूपमे जगजियार भऽ गेल छलाह । नेना सभकेँ नैतिकता ओ राजनीतिक पाठ संगहि संग सिखयबाक हेतु ई पशु-पक्षीकेँ माध्यम बनाय कतोक कथा गढ़ने छलाह आ ओकर सभकेँ **हितोपदेश** ओ **मित्रलाभ** नामक संकलनमे विष्णुशर्माक उपनामसँ संगृहीत करौलनि । लोकजगतक अध्ययनक क्रममे हुनका जे फुरा जाइत रहलनि तकरा सभकेँ लिपिबद्ध कऽ एकटा आर संकलन तैयार करौलनि जकर नाम राखल **नीति-दर्पण** । मुदा एतबेसँ की हुनका संतोष भऽ सकलनि ? तँ ने एहि बुढ़ारी वयसमे एकटा पोथी छानि बैसल रहथि जकर नाम रखने छलाह **अर्थशास्त्र** । एकर तीन गोट अध्याय लिखलो भऽ गेल छलनि । एहि पोथीक द्वारा ओ शासन-पद्धतिक मानदण्ड उपस्थापित करऽ चाहैत छलाह जकर अनुसरण शासक ओ प्रजावर्ग दुनूक हेतु हितकारक भऽ सकैत छलैक । ई हुनक दृढ मान्यता छलनि । यद्यपि आँखि आब संग नहि दऽ रहल छलनि, हाथो थरथराय लागल छलनि, तथापि अपन जीवनक एहि अभिलाषाक पूर्त्यर्थ ओ पहरक पहर अपन आसन पर गुनगुनाइत आ लिखैत रहैत छलाह । हुनका ई इच्छा छलनि जे शीघ्रे ई पोथी पूर्ण भऽ जाय । तखन जँ गोलोकोक बाट धऽ लेताह तऽ परवाहि नहि । कर्मण्यता समाप्त होइत देरी मृत्युक वरणेकेँ ओ मनीषी श्रेष्ठतर बुझैत छलाह। तेँ जीवनकाल धरि किछु-किछु करैत रहबाक भावनासँ निरन्तर उत्प्रेरित रहैत छलाह ।

मुदा आइ तालपत्र आगूमे राखल छलनि । लेखनी मोसिमे डुबाओल छलनि । ओकरा हाथमे पकड़नहु छलाह । तथापि एक आखर पर्य्यन्त पोथीकेँ आगू नहि बढ़ा पाबि रहल छलाह । स्वप्नक बात सभ मोनकेँ गर्हित कयने छलनि ।

क्रमश: दिन बीति गेल । गोधूलि बेला आयल आ साँझ पड़ि गेल। जखन हुनका चारू कात अन्धकारमय बुझाना गेलनि तँ दीपकेँ प्रज्वलित कऽ देलथिन आ सन्ध्यावन्दनक तैयारीमे बाहर निकसि पड़लाह ।

सायंकृत्य समाप्त कऽ कऽ ओ फेर अपन आसन पर जमि गेलाह। हृदयस्थ भाव सभ तालपत्र पर उतरय लगलनि आ किछु अंश धरि पोथीओ आगू बढ़ल। मुदा लगले ओ थकथकायल सन अनुभव कयलनि । लेखनीकेँ राखि खाट पर पड़ि रहलाह । गीताक श्लोक मोन पड़लनि—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत !
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

तँ की प्रत्येक युगमे धर्मक ग्लानि आ अधर्मक उत्थान होइते रहत? की धर्मक संस्थापन ओ दुष्कृतीलोकनिक विनाशक लेल भगवानकेँ सशरीर बेर-बेर अवतरण लेबऽ पड़तनि ? तखन ओ प्रत्येक दिन प्रत्येक पहर किएक ने अवतरित होइत छथि ? धर्मविरुद्ध काज आ अत्याचार तँ प्रतिपल होइते रहल अछि आ होइते रहत । की एकरा सभकेँ प्रारब्धक भोग मानि लेल जाय? की एकरा विरूद्ध कर्म नहि कयल जाय ? तखन ई राष्ट्र बाँचल रहि सकत की?

गीता पर अटूट विश्वास रहितो हुनक मोन डगमगा गेलनि । एहि आप्त वाक्य पर विचार करऽ लगलाह । मोन नहि जे मानलकनि । धर्मविरुद्ध क्रियाक प्रति नहि केवल आक्रोश अपितु विरोध ओ विद्रोहक अग्निशिखा पर हुनक हृदय दग्ध भऽ उठलनि आ दण्ड प्रक्रियाकेँ कठोरतम बनयबाक उपाय सभ पर ओ विचार करऽ लगलाह ।

राति निसबद भऽ गेल छल । ओ फेर अपन आसन पर आबि जमि गेल छलाह । लेखनी प्रवहमान भऽ उठल छलनि । कुटीक बाह्य वातावरणमे कखनो-कखनो झिंगुरक शब्द गुञ्जायमान भऽ रहल छल । यत्र-कुत्र भगजोगनी सभ अपन झुकझुकिया बारि ओहि अन्हरियाकेँ प्रकाशमे बदलबाक असफल प्रयत्न कऽ रहल छल ।

सहसा कोनो आहट पाबि ओ पाछू दिस घूमि पड़लाह । देखल, एकटा युवक हुनक मन्दिरक दुआरि पर ठाढ़ अछि ।

—अभिवादन स्वीकार हो, गुरुवर !

—'आयुष्मान भव !' ओ कहि तँ देलथिन मुदा आगन्तुककेँ चीन्हि नहि सकलथिन । आवाज अनचिन्हारो नहि बुझना गेलनि । आगू बजलाह—'आउ, आउ ! के थिकहुँ अपने ? हमर कोनो प्रयोजन ?'

युवक लग आबि गेल आ हुनक चरण पर खसि पड़ल । 'अशोक, अपनेक प्रियदर्शी अशोक ! हमरो नहि चीन्हि सकलहुँ, गुरुवर !'

ओ अकचकायले रहि गेलाह । ने पूर्वसूचना, ने राजकीय परिधान, ने अंगरक्षक, ई अशोक कोना भऽ सकैत छथि ? जकरासँ दिग्विजयक आशा लगौने छलहुँ, एही हेतुएँ प्रतिज्ञा करा चुकल छलहुँ जे हमर दर्शन-अभिवादनोक लेल आबी तँ शस्त्ररहित भऽ कऽ नहि । ई तकर अवज्ञा करबाक साहस कोना कयलनि ?

तावत् युवक आर लग आबि गेल छलनि । गुरुवर ओकरा आँखि निराड़ि कऽ आपादमस्तक देखैत रहलाह । मुदा, अरे ! राजकीय परिधान, शिरस्त्राण, कवच, पदत्राण आ ठेहुन धरि लटकैत तरुआरिक स्थान पर घुट्ठी धरि सोहराइत काषाय वस्त्र आ काषाये उत्तरीय !

—ई की अशोक ? ई काषाय वस्त्र ? ई शस्त्ररहित राजपुरुष ?

—क्षमा कयल जाओ गुरुदेव ! अस्त्र हम त्यागि देल । कलिंग प्रदेशक युद्ध हमर मोनकेँ बदलि देलक । हम बुद्धक शरण धऽ लेल अछि । धरतीक लेल युद्ध, युद्ध आ युद्ध, मारब-काटब-चढ़ब-कब्जा करब-प्रबन्ध करब । की होयत ई सभ कऽ कऽ ?

—की कहल ? एक बेर फेरसँ दोहराउ तँ ! हा अनिष्ट ! शस्त्र त्यागि देल । तखन राष्ट्रक रक्षा कोना होयत ?

—दयामय ! हम तँ संघक शरणमे चल गेल छी । सत्य, अहिंसा, अस्तेयक मार्ग पकड़ि चुकल छी ।

—हा हन्त ! ई की कयल अशोक ? की सत्यक पालन सामान्य जन कऽ सकत ? की हिंसाक बिना अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचारकेँ बन्द कराओल जा सकत ? की शस्त्रविहीन राष्ट्र सांसारिक अब्दकोशमे कायर राष्ट्रक रूपमे नहि परिगणित होमय लागत ? की शस्त्रसँ अरक्षित राष्ट्रमे शास्त्रकेँ आगिमे झोंकि देबाक आततायीलोकनिक प्रयत्नकेँ कहियो रोकल जा सकत ?

— से जे होउक गुरुवर । हमर अवज्ञा माफ कऽ देल जाय । हम लाचार छी । एकरा भने दुःसाहस, दुष्कर्म बूझल जाय, मुदा हम अस्त्रधारण

नहि कऽ सकैत छी । ओना तकर जे दण्ड देल जयतैक से शिरोधार्य अछि, स्वीकार्य अछि ।

—दण्डधरकेँ दण्ड । सेहो एहि अशक्य हाथसँ । संभवे नहि । मुदा इतिहास अहाँकेँ माफ नहि करत, क्षमा नहि करत, अशोक ! शस्त्र बिनु शास्त्रक रक्षा नहि भऽ सकत । भारतक दुर्दिन आबि गेल अछि । एकरा बचा सकी तँ बचाउ । अशोक ! शस्त्र उठाउ आ हमर अर्थशास्त्रकेँ बचयबाक प्रयत्न करू ।

—हम से नहि कऽ सकब, गुरुवर !

—हा हन्त ! हमर स्वप्न-महलक की होयत ? हम किएक अपन कार्यभार राक्षसकेँ प्रदान कयल ? हम किएक शास्त्र-रचनामे प्रवृत्त रहलहुँ ? की शस्त्रविहीनता अराजकताक कारक नहि होयत ? की उपदेशटासँ औचित्यक रक्षा भऽ सकत ? ओकर सुरक्षाक हेतु शस्त्र भय आवश्यक छैक, अशोक !

अशोक गुम्मे रहलाह । गुरुवरक मनोमस्तिष्कमे पछिला रातुक स्वप्नक बात सभ फेर घुरिआय लगलनि । ओ हिमवानकेँ दलित, सामान्य जनकेँ पीड़ित आ दीन, भयग्रस्त ओ भूख-रोगसँ आक्रान्त देखऽ लगलाह । कल्पना जगतमे जाय ओ देखलनि जे पारस्परिक वैमनस्य बढ़ि रहल छैक, भाइ भाइक दुश्मन बनल अछि, अनाचार आ लूटिक बाजार गर्म छैक, गाय सन निरीह पशुकेँ आहारी बना देल गेल छलैक, शासक आ प्रजा साप आ सपनौर जकाँ अपन अपन गोटी सुतारबामे लागल अछि...। भविष्यक चिन्ता हुनका ग्रस्त कऽ लेलकनि ।

महर्षिक आँखिमे नोर भरि अयलनि । एक बेर ओ काषायवस्त्रधारी अशोकक झुकल आनन दिस ताकि लेलनि आ तत्पर अपन समस्त शास्त्रक पुलिंदाकेँ काँख तर समेटि राजपथ दऽ होइत गायघाटक कलकलनिनादिनी गंगाक बालुकाराशि पर आगू बढ़ैत गेलाह—आगू बढ़ैत गेलाह ।



45म सगर राति दीप जरय, भागलपुरमे पठित आ मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना, दिसम्बर' 2002 मे प्रकाशित

फैसला

'गोपनीय' लिखल लिफाफा आगूमे टुकटुक ताकि रहल छलनि । राघवजी बारह बजे प्रतिवेदन लिखऽ बैसल छलाह । देवाल पर टाङल घड़ी दिस ध्यान गेलनि । चारि बाजि चुकल छलैक । दुनू प्रकारक प्रतिवेदन फाइनल भऽ गेल छलनि । आब एकटाकेँ एहि लिफाफामे घुसिया कऽ सील कऽ देबाक छलनि । ओ जोरसँ निसास छोड़लनि आ मन्द स्वरमे बाजि उठलाह—'जमुनी छी ये ?'

भीतरसँ आवाज आयल—हँ, हँ, की कहलहुँ ?

राघवजी गुम्मे रहलाह —पत्नी पार्वती देवी आँचर सरिअबैत ड्राइंग रूममे अयलथिन आ टेबुल पर कपमे चाह ओहिना धयल देखि खौंझाय लगलथिन—'देखू तऽ जरलाहा के ? एहनो कतहु लोक भेल अछि ? अहींटा लिखै-पढ़ै छी कि आनो हाकिम-हुक्कामकेँ से करऽ पड़ैत छैक ? दू घंटा भऽ गेल चाह देला आ से ओहिना पड़ल अछि । धन्य पुरुष छी अहूँ !'

राघवजी नजरि ऊपर उठौलनि आ पत्नीक दिस साकांक्ष दृष्टिजे देखैत बजलाह—'जाउ ने, एकरा गर्म कऽ कऽ लेने ने आउ ।' ओ चाहक कप आगू बढ़ा देलथिन ।

जमुनी देवी ठढ़ल चाहक कप उठबैत चलि देलथिन । भीतरसँ हुनक आवाज सुनि पड़लनि—'सेरा कऽ पानि तँ भऽ गेल छैक । आब कोन स्वाद अओतैक एहिमे ? फेरसँ बनाबहे पड़त । भरि दिन एतबे लुरू-खुरूमे लागल रहू ।'

राघवजी चुपचाप अकानैत रहलाह । जमुनी देवीक बड़बड़ायब चालू छलनि—'हिनका तँ कोनो वस्तुक होशे ने रहैत छनि । एक भिनसर जे निकललाह से दुपहरमे घुरलाह । ने स्नान, ने ध्यान, खाली चाह आ पान । अबिते घरमे घुसि गेला । एहन कोन लिखनी जे चाह दइओ अयलियनि सेहो पीबाक होश नहि । जेना आन केओ दरमहे ने उठबैत होइ । कहाँ कहिओ दासजी, की बी.डी.ओ. सेहैब आ कि शरणजीकेँ एना हड़बड़-दड़बड़ करैत देखलियनि ? समय पर भोजन, समय पर विश्राम । आ एकटा ईहो छथि ।

कहता की तँ लिखऽ पढ़ऽकाल हमरा रूममे केओ ढूकय नहि, डिस्टर्ब नहि करय । बड़ा भेला हय डिस्टर्ब होअऽयला ।' चौकामे चूल्हि पजारबाक, बासन ढनमनयबाक ध्वनि सेहो सूनि पड़लनि आ राघवजी आश्वस्त भऽ गेलाह ।

पत्नीक नैहरक नाम छलनि पार्वती जे क्रमशः परबतिया, परिया, पारोसँ क्रमशः उत्क्रमित नाम छल, मुदा हिनक चामक रंग प्रगाढ़ श्याम वर्णक छलनि । तेँ सासुरमे पैर रखैत देरी हँसिते-हँसिते सासु कहने छलथिन-'बाउ तँ खूब नीक कनिञा अनलनि । ई तँ हमरा खुरहेकेँ बदलि देति । केहन जामुन सन कारी छथि हमर बहुरिया रानी।' सासुक ई बोल पार्वतीकेँ सोहायल नहि छलनि प्रत्युत् छेदि देने छलनि । मुँह तामसे लाल भऽ गेल छलनि । मुदा ताधरि पतिक शील-सोभावक परिचय भऽ गेल छलनि । किएक ने, पाँच बरिस पर दोंगा भेल छलनि । राघवजीक निश्छलता आ सिनेहसँ अभिभूता रहैत छलीह । सासुक हेतु कोनो अपशब्द मुँह पर तँ नहिञे मोनोमे नहि आबि सकल छलनि । कनेक तिलमिलायल जरूर छलीह एहि प्रथमे स्वागत वचन पर ।

समयक चक्र अपना गतिञे आगाँ बढ़ैत रहल । राघवजी मैट्रिकसँ आगू पढ़ैत-पढ़ैत बी. ए. कऽ चुकल छलाह । पार्वती सेहो दूटा सोन सन नेनाक माय भऽ गेल छलीह आ जखन लगले राघवजीकेँ निसपीटरक नोकरी भऽ गेल छलनि तँ घरक लछमिनिञा सेहो । सासु-ससुर आब कनिञाक बेस खेयाल राखऽ लागल छलथिन । मुदा राघवजीकेँ जखन पड़ि लगनि तँ ओ अपन कनिञाकेँ जमुनी देवी कहि कऽ कचकचाबथि आ सैह जमुनी नाम आब पार्वती देवीकेँ बेस दीव लगैत छलनि । आब एही नामे ओ पतिक दुलरैतिन छलीह । जहियासँ ई परिवार बाले-बच्चे क्वाटरमे रहऽ लागल छल, आथल-गेल लोकक 'मेम साहेब' राघवजीक हेतु जमुनीञे भऽ गेलि छलीह ।

जमुनी देवीक गर्जन-तर्जन आ बासनक उठापटक चलैत रहलनि । ता बीचमे राघवजी पहिल प्रतिवेदनकेँ उठौलनि आ आद्योपान्त पढ़ि गेलाह । ततःपर दोसरो प्रतिवेदनकेँ उठौलनि आ ओकरो पढ़ि गेलाह । दुनू प्रतिवेदन पढ़लाक बादो ओ ई निश्चय नहि कऽ सकलाह जे कोन प्रतिवेदन लिफाफबद्ध होयबाक चाही ? मुदा कोनो एकटाकेँ तँ बन्द करबाके छलनि । काल्हि भोरे डी. एम. साहेब लग जमा कऽ देबाक रहनि । तथापि ओ किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनले रहलाह ।

तावत् ड्राइंग रूमक पर्दा हटल आ हुलसैत-फुलसैत, पतिकेँ कनडेरिञे तकैत जमुनी देवी एकटा ट्रेमे दू कप चाह आ गोड़ दसेक बिस्कुट लेने जूमि गेलथिन । ओकरा टेबुल पर एक कात रखैत पुछलथिन-'जऽलो लेबै ।'

'नहि ! नहि ! बैसू ने । बड़ा विपत्ति भऽ गेलए । की करी किछु ने फुराइछ । जँ साँच करै छिअइ तँ नोकरी पर आफदि अबैए आ जँ झूठ करै छिअइ तँ एकटा निर्दोषक गरदनि रेता जेतइ ।'

'करियौ त साँचे मुदा जँ नोकरी नहि रहत तऽ ई सैहबी कोना चलत? बाबू एको धूर जमीनो तँ नहि अरजने छथि जे जांतियो कऽ खायब ।'

'तखन साँच करियौ कोना ? अशोक आ भारतीक इसकुलवला तँ नहि मानत । दूध आ गैसक दाम कोना जूटत ? भोजनो आ वस्त्रक टूटिये भऽ जायत । क्वाटर, से खाली करऽ पड़त ।'

'तँ एहन कोन नोकरी भेल जे झूठ-फूस कऽ कऽ धिया-पुताकेँ पोरू आ अपनो मौज करू आ साँच करैत देरी मटियामेट भऽ जाउ ? मुदा जँ अहाँक झूठसँ ककरो गरदनि रेता जेतइ तँ ओकर बाल-बच्चाक आहि हमरा बाल-बच्चा पर पड़त । हे, कने से धरि जरूर सोचवइ ।'

जमुनी देवी एक कात राखल कुर्सी पर बैसि गेलीह आ चाहक कप उठाय राघवजीकेँ बढ़बैत स्निग्ध दृष्टिञे हुनका देखऽ लगलीह । राघवजीक नजरि हुनक गरदनिमे लटकैत मोहरमाला आ दुनू कानञे झूलैत झुमका पर पड़लनि । अपन तात्कालिक सम्पन्नतासँ ओ झूमि उठलाह मुदा प्रासंगिक विपन्नताक ध्यान अबैत देरी भावलोकमे विचरण करऽ लगलाह । चाहक कप हुनका हाथमे आबि गेल छलनि मुदा ठोर धरि नहि जा सकल छलनि ।

जमुनी देवी पतिक तन्द्रा भंग करैत बजलीह-'की सोचऽ लगलियै? जे बुझना जाय से करू । हम की जानऽ गेलिअइ ? पहिने चाह तँ पीबि लिअऽ । मुदा भेलैए की ?

'एही दुआरे कहै छै जे ऑफिसक काज घर पर नहि करी । यै, सबटा बात अहीं बुझि जेबै ? ई सरकारी मामिला थिकै, कोनो आमा माइक खिस्सा नहि । चाह पीबू आ जाउ, हमरा देखऽ दियऽ ।'

जमुनी देवी कने अपरतीभ सन भऽ गेलीह । हुनका बूझि पड़लनि जे पति हुनक अपमान कऽ रहल छथिन । 'जँ ओहो आइ दू आखर पढ़ि-लिखि कऽ दू पाइक आबलम कयने रहितथि तँ एना नहि ने सुनऽ

पड़ितनि? जँ ई हमर खोराकी जोडै छथि तँ ने एहन बात ।' हुनक मुँह लटकि गेलनि ।

राघवजी हुनक मुखाकृति देखि ठेकना लेलथिन आ पत्नीक गरदनि पर हाथ फेरैत कहलथिन–'खिसिया गेलियै की ? हम तँ ओहिना कहि देलहुँ। असलमे हमरा एकटा फैसला करबाक अछि, मुदा से कऽ नहि पाबि रहल छी। बुझू जे अकबका गेल छी ।'

'फैसला करबा काल कोनो आइये अहाँक मोन अकबकायल अछि। जहिया हमरा संग बिआहक फैसला भेल रहय तहियो तँ मोन बौआइते रहय। मुदा ताहिसँ की भेल ? जे लिखल छल सैह ने भेल । तहिना जे उचित बुझाय से कऽ दिऔ । बुझबै विधाताकेँ सैह मंजूर छलनि ।'

'तखनुका फैसला दोसरकेँ करबाक छलैक आ हमरा से मानबाक बाध्यता छल । नहि तँ आइ अहाँ एतऽ रहितहुँ ? रहितहुँ कोनो करिलुट्ठाक कपार पर । हमर माथ तँ नहि चटितहुँ ? मुदा आइ फैसला हमरा करबाक अछि आ ओकर भोग जकरा भोगऽ पड़तैक, से कदाचित् हमरा सरापय नहि, तकर भय अछि ।

'तँ तेहन फैसले ने करिऔक जे बाल-बच्चा पर पड़ि जाय'– धर्मभीरु जमुनीक टोन छलनि ।

'हँ, हँ, हम तँ अहींसँ पूछि कऽ ने सभटा काज करब ? आ नोकरी छूटि गेल तँ अहाँक पिताजी तँ छथिहे दुनू नाति-नातिनकेँ डेबबाक हेतु ।'

'से कोनो हमरे बाबूजीक भरोसे ओकरा दुनूकेँ जनमेने रहियैक ? आ जकरा नोकरी नहि रहै छै से बाल-बच्चा के पोसै छै की कतहु कऽ फेकि अबै छै ?'

'पोसतैक किएक ने ? मुदा अहाँक बेटा-बेटी जकाँ अंग्रेजी इसकूलमे नहि ने पढ़ौतैक ? मासमे तीनटा कऽ सूट नहि ने बदलबौतैक ।'

'से की कोनो अहाँक बेटा-बेटी नहि छी । आ साल भरिमे जँ दू-तीन सेट कपड़ा दैये दै छियै तँ कोन बेसी भेलै ? कोनो नङटे तँ नहिञे रहतै ।'

पत्नीक रूखि बदलैत देखि बातकेँ मोड़बाक हेतु राघवजी कहलथिन–'बुझलहुँ, हे, ई उलहन-उपराग रहऽ दियऽ आ कने पान लेने आउ।'

जमुनी देवी जेना आकाशसँ खसल होथि । बहसमे हुनका ई पते ने लगलनि जे हुनक घरवला चाह खतम करैत देरी पान खयबाक आदति पोसने छथिन आ सेहो घर पर हुनके हाथें । मुदा हुनका चाह खतम कयलाक पन्द्रह मिनटक बादो धरि ओ बतंगरमे लागि पान आनब बिसरलि रहलीह । तँ ओ चटपट दुनू कपकेँ ट्रेमे समटैत बहरा गेलीह । राघवजी हुनक ऐंचैत देह दिस एक बेर वक्र दृष्टिञे ताकि लेलनि ।

हुनका जाइत देरी राघवजी पुन: सोचमे पड़ि गेलाह । जँ ई प्रतिवेदन दैत छथिन तँ डी. एम. साहेबक डाँट-डपट सूनऽ पड़तनि, भऽ सकै छै जे कोनो कारण लगा कऽ सस्पेंड कऽ देल जयतनि, नोकरीयोसँ हाथ धोअऽ पड़ि सकैत छनि । आ तखन बूढ़ माय-बापक सेवा-सत्कार, दूटा राष्ट्रीय भविष्यक भविष्य आ अपन युगल जीवन केहन भऽ जयतनि ? सिहरि उठलाह ओ । देह भुलकि गेलनि । नयनक कोर सिमसिमाह भऽ गेलनि । चेतना तखन भेलनि जखन जमुनी देवी पानवला हाथ मुँह पर दैत जर्दा-सुपारीवला हाथ आगू बढ़ौलथिन। ओ पान चाभऽ लगलाह । एकान्तक आवश्यकता बूझि जमुनी देवी लगले ड्राइंग रूम छोड़ि देलथिन । राघवजी हुनका रोकबो नहि कयलथिन ।

ओ सोचय लगलाह–'जँ से नहि करैत छियैक आ दोसर प्रतिवेदन दऽ दैत छियैक तँ की हेतैक ? यैह ने जे निर्दोष महन्थकेँ गिरफ्तार करतैक, नीक जकाँ कुटुम्मस करतैक आ भरि जिनगीक लेल लाल घरमे बन्न कऽ देतैक। सर-समाजमे, जिला-जयवारमे, कार्यालयसँ लऽ कऽ राजधानी धरि हमर नामक जय-जयकार होमऽ लागत । मुदा की से उचित हेतैक ? मुदा राजक मुखियो सैह चाहै छै आ डी. एम. तँ अमला थिकै, 'यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि, ऊँ शान्ति:' केँ फेर बैसारमे दोहरबैत रहतैक ।'

मोनक बन्हनमे पड़ल राघवजी अकुला रहल छलाह । हुनका मार्ग नहि भेटि रहल छलनि । हुनका दूध-माछ दुनू बाँतर भऽ गेल छलनि । एहने ठाम कहैत छैक–साप छुछुन्नरिक पड़ि । ने घोंटने बनि रहल छलनि आ ने उगिलने । ओ करथि तँ की करथि ? तावत् मुँहमे बेस पीक जमा भऽ गेल छलनि । ओ कुर्सी परसँ उठि पिकदानी तकलनि आ पिच्च ।

फेर स्वस्थ भऽ कऽ कुर्सी पर आरामक मुद्रामे बैसि गेलाह । सामने टेबुल पर दुनू प्रतिवेदन आ तकरा दबने हुनक कलम देखि पड़लनि । ओ कलमकेँ हाथमे उठा लेलनि आ माथमे सटबैत फुसफुसयलाह–'हे अन्नदाता!

हे मा सरस्वतीक वरदान ! अहींक कृपासँ जेना छी, आनन्दमे छी । आइ धरि अहाँसँ ककरो अहित नहि भेलैक । मुदा आइ ई की भऽ रहल अछि ? हमर रक्षा करू ।' मोनेमोन बिधुनैत रहलाह राघवजी । ओ जखन कार्यालय पहुँचथि तँ जेबीसँ कलम निकालि हाथमे लऽ शीश झुका देथि आ मोनेमोन ई प्रार्थना करथि जे आइ एहिसँ ककरो अकल्याण नहि होइक, लाभ जकरा जतेक भेंटि सकैक, इष्ट जतेक लोकक सधि सकैक आ ओही कलमक लिखल प्रतिवेदन लऽ कऽ राघवजी आइ झखि रहल छलाह ।

बात छलैक तेहने सन । हिनका जाहि विषयक इन्क्वायरी भेटल छलनि से राजनीतिक बेसी भऽ गेल छलैक आ न्यायिक कम । मुदा हिनका न्यायकर्त्ता बना देल गेल छलनि । हिनके प्रतिवेदन पर आगूक प्रशासनिक कार्रवाइ होइतैक जे हिनका ब्रह्मफांसमे फँसा देने छलनि ।

राजधानीमे तीन दिन पहिने एकटा उग्र प्रदर्शन भेल छलैक । एहि प्रदर्शनमे हजारो पार्टी कार्यकर्त्तालोकनि रोड घेरि लेने छलाह आ यातायातकेँ अस्त-व्यस्त कऽ देने छलथिन । पुलिस जखन जाम साफ करयबाक हेतु एकत्र भेल आ प्रदर्शनकारी लोकनिसँ अनुनय-विनय करऽ लागल आ कि पुलिस पर चारू कातसँ रोड़ाबाजी होमऽ लगलैक । एहि आकस्मिक आक्रमणसँ पुलिसक किछु सिपाही आहत भऽ गेलाह । तत:पर लाठी चार्ज भेल छलैक, आँसू गैस आ गोली चलल छलैक जाहिमे दुइ गोट प्रदर्शनकारी घटनास्थले पर मारल गेल छलाह । दोसर दिन प्रदर्शन उग्र भऽ गेल छल । दुनू मृतकक लाशकेँ रोड पर राखि पुनः प्रदर्शन कयल गेल छल । सौंसे राजधानीकेँ बन्द कऽ देल गेल छलैक । जाम तखने टूटि सकल जखन स्वंय मुख्यमंत्री आबि दुनू मृतकक परिजनकेँ दू-दू लाख टाका देब गछलथिन आ इहो गछलथिन जे वस्तुस्थितिक विवेकपूर्ण अध्ययन पर आधारित प्रशासनिक कार्रवाइ कयल जायत ।

राजधानीमे भेल पहिल दिनुक प्रदर्शनक कारण छल मालीपुर गामक घटना । मालीपुर गाम आजमनगर जिलाक पूर्वी सीमान्त भागमे छल । एहिठामक महन्थकेँ एकटा रामजानकी मन्दिर छलनि । मन्दिरक व्यवस्थाक हेतु कोनो विधवा सय साल पूर्वहि पचीस बीघा जमीन दान देने छलथिन ।

एहि जमीनमे किछु कलमबाग, एकटा पोखरि आ शेष जोता छलैक । कलमबागमे अनेक प्रकारक बेख सभ छल जाहिसँ सालो भरि जारनि तँ चलिते छलैक, आमक मासमे बेस नगदी सेहो उपलब्ध भऽ जाइत छलैक । पोखरिक जलकरसँ सेहो मन्दिरकेँ पर्याप्त नगदी आमदनी छलैक । जोता जमीनमे अधिकांश तिनफसिला छलैक । धान, गहूम, बूट, सरिसो आदि विभिन्न प्रकारक अन्नसँ मन्दिरक बखार सभ भरल-पूरल रहैत छलैक । महन्थजी नीक गृहस्थ छलाह । कोठारी, भंडारी, पुजेगरीक संगहि चारि गोट मजूराकेँ सालो भरि मन्दिरेसँ गुजर चलैत छलैक । मन्दिरकेँ अपन ट्रैक्टर, थ्रेसर, जेनरेटर, हर-बड़द आदि कृषि संसाधन सभ छलैक । तीन थान गाय आ चारि थान महींस सेहो पोसल जाइत छलैक । मन्दिरक खर्चाक बाद जे दूध बचि जाइत छल, सेहो नगदीक बेस साधन छल ।

सन्यासी मन्दिर रहबाक कारणे एकर महन्थ अविवाहिते छलाह । ओ अपन शिष्यवर्गमेसँ एकटाकेँ अपन उत्तराधिकारीक रूपमे चयन कऽ ओकरा संस्कृत शिक्षा ग्रहण करबाक हेतु काशी पठा देने छलथिन । सभटा नीक जकाँ चलि रहल छलैक ।

भोरे मन्दिरक पट फूजि जाइत छलैक । पुजेगरी लगले स्नानं कऽ मंगला आरती करैत छलाह । तत:पर भगवानकेँ चाहक भोग लगैत छलनि । ओहिकाल जे केओ मन्दिर परिसरमे विराजमान होथि, सभकेँ चाह प्रसाद भेटल करनि । भानस भऽ गेलाक बाद भगवानकेँ भोग लगा कऽ कोठारी-भंडारीकेँ छोड़ि सभक संगे महन्थजी भोजन करथि । कोनो अतिथि-अभ्यागत छूटि ने जाथि, तकर बेस खेयाल राखल जाइक । संध्याकाल भगवानकेँ घी सानल चूड़ाक भूजा आ तत:पर चाहक नैवेद्य लगैत छलनि आ ओकरा उपस्थित सभ गोटे प्रसाद रूपमे पाबथि । एहि काल लग-पासक गरीब-गुरबाक धीया-पुता बेस जुटि गेल करय । मुदा सभकेँ भूजा प्रसाद देने बिना कोठारी-भंडारी अपने ग्रहण नहि करथि । रातिमे संध्या आरती होइत छल आ तखन भगवानकेँ भोग लगा सभ गोटे प्रसाद पाबथि । भोजनकाल पंक्तिबद्धता ओ पंक्तिछेदमे जाति-आश्रमक बन्धन नहि रहैक आ ने वैष्णवे-साकठक भेद राखल जाइक। महन्थजीकेँ अवश्य अपन खास आसन आ बासनेमे प्रसाद परसल जाइनि ।

पोखरि स्थानसँ करीब दू किलोमीटर दूर पड़ैत छलैक । एहिमे बारहो मास पानि रहिते छलैक । चारू कातक भीड़ पर बेस अकठ लागल छलैक । भीड़ पर खऽढ़ो खूब उपजैत छलैक आ बाँसोक अनेक गोठि सभ

छलैक । स्वच्छ शीतल जलसँ भरल ई पोखरि सहजहिं आकर्षक छल । एकर जाठि पर एकटा लोहाक मजूरक आकृति बैसाओल छलैक जे पोखरिक भव्यताकेँ आर बढ़ा देने छलैक । लगपासक गाम सभक हरवाह-चरवाहलोकनिक हेतु ई पोखरि वरदानें छल ।

पछिला सात किछु मुसहर सभ पोखरिक भीड़ पर छोट-छोट खोपड़ी बना लेलक । महन्थजीकेँ सूचना गेलनि । कहलथिन-'जाय दहक । बसबे ने करतैक । खाली उपद्रवटा नहि करै जाय ।' बात आयल गेल भऽ गेलैक ।

मुदा एहि बेरुक चुनाओमे ओहि मुसहरी पर एकटा दबंग नेता पहुँचि गेल छलाथिन आ अपन एहि वोट बैंककेँ आकर्षित करबाक हेतु की सभ विकट उपदेश देलथिन से तँ नहि जानि, मुदा तकर बादहिसँ ओ सभ मन्दिरक गाछीकेँ अपन गाछी जकाँ पाङऽ-छकरऽ-काटऽ लागल, पोखरिमे जखन-तखन माछ मारऽ लागल । हाँट-दबार भेलैक, मुदा के मानैत अछि ? अनन्तः जे मलाह ओ पोखरि जोतैत छल से जीरा देब बन्द कऽ देलकै आ संगहि मन्दिरकेँ जलकरक गाइ सेहो । महन्थजीकेँ ओ स्थितिसँ अवगत करा देलकनि।

महन्थजी सदलबल पोखरि पर जा जुमलाह । मुसहर सभकेँ बुझबय चाहलथिन मुदा उन्टे किछु युवक सभ हुनका पर तनि गेलनि । महन्थजी थाना-पुलिसक गोहारि कयलनि मुदा के सुनैत अछि ? हारि-थाकि कऽ बैसि तँ नहि गेलाह मुदा न्यायालयक दरबारमे मन्दिरक संचित पूजीक अंश देब शुरू कऽ देलनि । थानाक पुलिस पोखरि आ मन्दिर पर दौगब शुरू कऽ देलक । नेताजीक दौरा सेहो पड़ऽ लगलनि ।

एहि बेर मन्दिरक खेत सभमे धान अगड़ा कऽ फड़ल छलैक । कहियो काल महन्थजी स्वयं खेत सभक आरि पर जाय तुलसीफूलक शीश सभसँ अबैत सुवासक आनन्द लेल करथिं । मुदा मुसहर सभकेँ हरलैक ने फुरलैक, ओ सभ राताराती हिनक जजाति काटि भीड़ पर जमा कऽ लेलक आ जखन महन्थजी अपन लूटल धानक पता लगाबय पोखरि दिस चललाह तँ देखैत छथि जे सौंसे मुसहरीक घर सभ धू धू कऽ जरि रहल अछि । मुसहर सभ केस कयने छलैक जे महन्थक कारोबारी सभ ओकरा सभकेँ उपटयबाक

हेतु ई अग्निकांड कयने छल । एही कथित शोषण वृत्तिक विरोधमे राजधानीमे प्रदर्शन भेल छलैक जे शीघ्रतिशीघ्र अपराधीलोकनिकेँ सजाय देल जाय आ मुराहरीकेँ राष्ट्रीय योजनाक माध्यमे शीघ्र पक्का मकानक आवासमे परिणत कयल जाय ।

मुदा होयबाक किछु आ भऽ गेलैक किछु । सभ पार्टीक प्रतिनिधि पोखरि पर क्रमशः जा जा कऽ लोकसभकेँ सहानुभूति देखौलथिन आ आवास निर्माणक आश्वासन दैत गेलथिन । दोषीक पता लगयबाक हेतु जाँच कमिटी बनल आ जिला स्तरीय प्रतिनिधिक रूपमे राघवेजीकेँ एकर अध्यक्ष बनाओल गेलनि । जखने हिनका पत्र भेटलनि कि लगले राजनैतालोकनिक दबाब पड़ऽ लगलनि जे धनिकहा महन्थकेँ गरीब-दलितकेँ उजारबाक आरोपी सावित कयल जाय जाहिसँ सेरगर भोटक लाभ होयतैक, अन्यथा हिनका तकर फल भोगऽ पड़तनि ।

तीन दिन तीन राति धरि अनवरत श्रमपूर्वक राघवजी एहि अग्निकांड मे शोषणक दिशाक जे अभिज्ञान कयलनि से अचम्भित कऽ देने छलनि । मुदा नोकरियो तँ करबाके छलनि, तेँ महन्थक पक्ष आ विपक्ष दुनूमे प्रतिवेदन तैयार कयने छलाह आ ब्रह्मफांसमे पड़ल छलाह ।

तखने डेराक, आगूमे बस रुकबाक ध्वनि भेलैक । हुनक अशोकक अयबाक समय भऽ गेल छलनि । ओ स्कूल-बससँ उतरि पीठ पर बस्ताक भारी बोझ लेनहि हिनक ड्राइंग रूममे घुसल आ टेबुल परसँ कलम लऽ कहऽ लगलनि-बाबूजी, हम ई कलम लऽ लै छी । यावत् ई ओकरा खेहारथि तावत् ओ मायवला कोठलोमे ढुकि गेल छल । राघवजी प्रत्यागत भेलाह आ महन्थक पक्षवाला प्रतिवेदनकेँ मोड़ि लिफाफामे धऽ ओकरा सील करबाक उद्योगमे लागि गेलाह ।



49म सगर राति दीप जरय, बेनीपुरमे पठित तथा मिथिला महान, पटना, अक्टूबर-दिसम्बर, 2003मे प्रकाशित

सपनाक डाक

सुखलाल सर्वे कैम्प परसँ भऽ आएल छल । अमीन साफे कहि देने छलै जे आब हम किछु ने कऽ सकै छी । यावत् अहाँ खतियान आ कि कोनो दस्तावेज नहि देखायब तावत् खाली ई कहलासँ जे गाछी हमरे थिक, हम कोना मानि लिअऽ । जँ गाछी अहाँक थिक तँ से कचहरीमे जा कऽ फड़िछा लेब । हमरा तँ जे कागत देखौलक तकर नाम टीपि देलियैक । आब अहाँ आगू नालिश करू गऽ ।

ओकर मोन अपरतीभ भऽ गेलै । बूझि पड़ै छलै जेना केओ ओकरासँ गाछी छीनि लेने होइक । अपन मोनक व्यथाकेँ अङेजने ओ गाछी बचयबाक गुनधुनमे पड़ल रहल ।

सुखलालक गाछी इलाका भरिमे नामी भऽ गेलै । गाछीक चारू कात आरगार विभिन्न प्रकारक बेख लागल छलै आ भीतरमे एक पतियानीसँ आमक गाछ सभकेँ लगाओल गेल छलै । छोट-पैघ आकृतिक आ विभिन्न स्वादक आमसँ जखन गाछी लदि जाइत छलैक तखन ओकर वासन्ती सुषमा कोनो बटोहीकेँ कनेक काल सुस्तएबाक निमंत्रण दऽ दैत छलैक । बाट-बटोहीकेँ आग्रहपूर्वक आम खोआयब आमक मास भरि सुखलालक दिनचर्या छलैक, तँ सभ केओ ओहि गाछीसँ परिचित छल । मुदा आइ एही सम्पत्ति पर आपत्ति आबि गेल छलैक जे सुखलालक आमदक श्रोतसँ बेसी प्रतिष्ठाक सूचक भऽ गेल छलैक ।

सुखलाल की करय की नहि से ओकरा फुरा नहि रहल छलै : ई गाछी ओ अपने अमलदारीमे लगौने छल तँ एकरा प्रति ओकरा बेस दरेग छलैक । पहिने ई गाछी नहि, डीह छलैक । ओकर पिता ओहि डीह पर बेस धान आ मकइ उपजबैत छलथिन । मुदा जखन मालजाल आ लोकक उपद्रव बढ़ऽ लगलैक आ एसगरुआ सुखलाल अपन बेबसायमे व्यस्त रहबाक कारणें खेतपर समय देब संभव नहि बुझलकैक तँ ओहिमे आरा कटबा देलक, चारू

कात अनेक प्रकारक बेखसभ लगा देलक आ बीचमे एक पतियानीसँ आमक गाछसभ लगौलक । बेख लगयबासँ लऽ कऽ आम रोपबा धरि ओकरा जे परिश्रम आ ओगरवाही करऽ पड़लैक, तकर ओ एसगरे साक्षी बनल रहल। मुदा गाछसभ जखन सम्हरि गेलै आ पहिल बेर विभिन्न प्रकारक बीजू आमक संगहि कलकतिया, मालदह, कृष्णभोग आदि आमसँ गाछी भरल-पुरल देखयलैक तँ ओकर समय-परिश्रम जेना सार्थक बूझि पड़लैक । गाछीक आम बाट-बटोहीकेँ अहगरसँ बँटैत रहबाक प्रवृत्तिक कारणें सुखलाल जे यश अर्जित कयलक से ओकर कतोक गोतिया-दयादकेँ अखरऽ लगलै । किछु गोटे ओकरासँ इरखा सेहो करऽ लागल ।

इरखाक कारण इहो छलै जे सुखलाल अपन बेबसायमे व्यस्त ककरो आगू-पाछू नहि करैत छल । बेर-बेगर्तामे सभ ठाम ठाढ़ भऽ जाइत छल आ सभा-पंचैतीमे उचित बात बाजि दैत छल ।

सुखलालक देयादीमे छलथिन फकीरा सहनी । हिनक गोठ जेरगर छल आ सम्पत्तिशाली सेहो । सम्पत्ति तँ क्रमशः पुस्त-दर-पुस्त बँटाइत जयबाक कारणें ओछ भऽ गेल छलनि—तथापि तकर प्रभाव किछु खराब लतिकेँ परिवारमे प्रवेश करा देने छलनि । हिनकालोकनिक धियापुता सभ बाप-पित्तीक प्रभावे तास-चौपड़िक संगहि चिखना आ ताड़ीकेँ दैनिक जीवनक अंग बना लेने छलाह । तकरे फेरीमे बेच-बिकिन करैत-करैत साकिन होमऽ पर भऽ गेल छलाह । एक दोसराक काठ-बाँस बेचि लेब तऽ साधारण बात भऽ गेल छलनि आ तँ दिन-राति हिनकालोकनिक बीच त्वञ्चाहञ्च होइतहि रहैत छलनि । एही फकीरा सहनीक परबाबासँ सुखलालक परबाबा ई गाछीवला जमीन लिखौने छलथिन, से सुखलाल सुनने छल । अपना धरि तेसर पुस्तमे ओ ओहि जमीनकेँ जोति रहल छल, मुदा कोनो विवाद कहियो ने उठल छलै जे ओकर निराकरणो भऽ गेल रहितै । मुदा सर्वेमे तँ फकीरा गाछीक जमीनपर अपन नाम दर्ज करा देने छलथिन आ खतियान सेहो देखा देने छलथिन । गुनधुनमे पड़ल सुखलाल एकटा गाछ उखारलनि आ लोटामे जल लऽ दलाने पर लगलाह दतमनि करऽ । तावत् धरफरायल मोहनकेँ अबैत देखलथिन आ औपचारिकता बस टोकि देलथिन—

—की भाई ? की हालचाल ? आइ एम्हर कोना ढुलि गेलियै ?

—हालचाल तँ देखिये रहल छी । जे ने करय ई अमीन सभ । सौंसे गाममे हंगामा मचा देने छै । जेहो बात ने सेहो बात सभ सुनै छी ।

—से की हौ ?

—की कहियऽ भाइ । हमरा एकटा चारि कट्ठाक प्लौट अछि चमराही बाधमे । ओकर कोनो कागत-पत्तर तँ छै नहि । होयबो करतै तँ चौंतीसक भूकम्पमे आ छत्तीसक प्लेगक हल्लामे जे पुरखा सभ एहि घराड़ीसँ ओहि घराड़ी आ ओहि घराड़ीसँ एहि घराड़ी करैत गेल होयताह ताहिमे हेरा-ढेरा गेल होयतैक आ कि साले-सालक बाढ़िमे पड़ि गेल हेतै ।

—से भेलइ की ?

—भेल अछि ई जे आब अमीन कहै छै जे यावत् कागत नहि देब तावत् ओकरा अहाँक नामे कोना लिखि दी । सुनै छियै जे ओहि खेतक खतियान हमर पितियौतक लग छैक । ओ जँ अमीनकेँ कहि दै जे ओ चारू कट्ठा ओकर नहि हमर थिक तँ भऽ सकैछ जे हमरा कोट-कचहरीक हुज्जतिमे नहि पड़ऽ पड़य। तँ एलियऽ तोरे कहै लेल जे कने हमरा भातिजकेँ समझा-बुझा दहक ।

—हौ भाई ! चलमे तऽ नहि हर्ज । मुदा से ओ सुनतऽ तहन ने । एखन तँ जमीन लेल लोक गायो गिड़बाक लेल तैयार अछि । हमरो गाछी तँ फेरमे पड़ल अछि । सुनै छियै जे ओहिमे फकीरा अपन नाम दर्ज करा देलथिन अछि आ खतियानो देखा देलथिन अछि ।

—अन्हेर भऽ रहल छै, अन्हेर ! घोर कलियुग बीति रहल छै ! एखन उपकारो हत्येक बरोबरि छैक । हौ, हमरा ओ जमीन भेटल अछि घराड़ीक बदलामे । जखन हमर पित्तीकेँ घर नहि बैसि रहल छलनि तँ हमर बाबूजो हुनका एक कट्ठा घरारी देने छलथिन जकर बदला ओ चारू कट्ठा बदलैन भेल छलै । कागत-पत्रक हाल तँ हमरा बूझल नहि अछि ।

—'चलऽ ने, देखै छियै' कहि सुखलाल कुरुड़ कयलनि आ मोहनक संग हुनका टोल दिस विदा भऽ गेलाह । मोहन आ हुनका पितियौतमे टोकाचाली नहि छलनि मुदा जखन सुखलाल पहुँचल तँ मोहनक पितियौत रामू हुनका दुनू गोटेकेँ गोर लगलकनि आ बैसऽ कहलकनि । सभटा रामकहानी सुनलाक बाद ओ बाजल—यौ कका, हिनकर परिवार हमरा सभकेँ बसौने अछि। हम अन्याय नहि करब । हम आइये अमीनकेँ कहि दैत छियैक जे हमरा कोलामेसँ चारि कट्ठा ककाक नामे कऽ देतनि । मोहन आ सुखलाल भोजन-भात कयलाक बाद सर्वे कैम्प जयबाक विचार कयलनि ।

जखन दुनू गोटे ओतऽ पहुँचला तँ लोकक करमान लागल देखलनि। इलाकाक लोकसभ जूटल छल । सभकेँ अपना-अपना तरहक समस्या छलै । ककरो पैघ खेतकेँ छोट नक्शा काटि देल गेल छलै । ककरो खेत अनका नामे लिखा गेल छलै । सभ अमीन सभक खोसामदिमे लागल छल । इलाकाक शैतान लोक सभ चारू कात घुरिया रहल छल आ भाइ-भाइकेँ लड़ैबाक हेतु आ अमीन सभकेँ कमैबाक हेतु जोगाड़ कऽ रहल छल ।

ताकि-हेरि कऽ मोहन आ सुखलाल अमीनकेँ पकड़ि लेलक । अमीन मोहनक बात सुनलाक बाद हुनका एकान्तमे बजा कऽ कहलकनि—''देखू मोहनजी, अहाँक भातिज ई तँ कहि गेल छथि जे ओ चरिकठबा अहींक थिक मुदा अहाँ लग तँ कोनो कागत-पत्र नहि अछि । तखन हम एकरा अहाँक नामे कोना कऽ दिअऽ ?

मोहन गिरगिराय लागल—अमीन साहेब, जखन जमीनबला कहिते अछि तखन बाधा की अछि ? कऽ दिऔ हमरा नामे ।'

अमीन बाजल—से हम बिना कोनो कागत-पत्रक कोना कऽ देब । यौ, हमहीं मालिक नहि ने छियैक ? देखै ने छियै हाकिमकेँ । भरि दिन हमरा सभसँ तेला-बेला कराओत आ भरि राति हमरे सभक देल नोट गनैत रहत ।

मोहन अमीनक इशारा बूझि गेल। ओ लगले दूटा नमरी निकालि कऽ हुनका दऽ देलक । अमीन चट ओकरा राखि बाजल—देखू मोहन बाबू, काज तँ अहाँक भऽ सकै अछि मुदा ई हाकिम मानत तखन ने ? यौ, नहि किछुओ तँ बीसो हजारक सम्पत्ति अछि । कमसँ कम पाँचो सय तँ दिऔक।

हारि-दारि कऽ मोहन दू सय टाका और दऽ कऽ अमीनसँ जान छोड़ौलक । ओकर काज भऽ जयबाक आश्वासन भेटि चुकल छलै । मुदा सुखलालक काजक हेतु अमीन कागत पर अड़ले रहलै । साँझ पड़ि रहल छलै। दुनू गोटे घर घुरबाक लेल छल आ कि मोहनक नजरि फकीरा पर पड़ि गेलै । ओ सुखलालकेँ संग लऽ कऽ फकीरा लग पहुँचल । फकीराक आँखि चढ़ल छलै आ देह डगमगा रहल छलै । ओकर मुँहसँ ताड़ीक तीक्ष्ण दुर्गन्ध आबि रहल छलै । मुदा ओ होशमे छल, तँ मोहन ओकरा टोकैत कहलकै—'यौ फकीरा भाइ ! सुखलालक गाछी दऽ तऽ कहियो ने सुनलहुँ जे अहाँक थिक। तखन बेचारा के किअय लटपटा रहल छियै ?'

फकीरा बाजल—देखू मोहन भाइ । हम अहाँक इज्जत करै छी । अहाँ बेइमानक ओकालति करै छी, से नीक बात नहि । ओ गाछी हमरा सभक छल से तऽ खतियाने कहै छै । नहि किछुओ तँ पाँच लाखक प्रोपर्टी छै, कोना कऽ छोड़ि दियै । लिखितम्कें आगू वक्तम् की ? हँ, सुखलाल जे ओकरा जोतैत रहल, से हमरा सभक अबूझमे । एकर पुरखा सभ दबंग होयथिन आ हमर बाबा-परबाबा छलाह एकखुटिआ आ अब्बल । तँ बेइमान सभक फेरीमे पड़ि गेल होयताह । जँ एकरे छैक तँ निकालओ ने दस्तावेज जे हमर कोनो पुरखा एकरा कहिया जमीन लिखि देलथिन । ओ तँ धनि बुझू जे सर्वेक कागत सभ तकैत काल हमरा ओ खतियानो देखि पड़ल, ने तऽ ई बेइमान सभ हमर बाप-दादाक जमीन पर एहिना कब्जा कयने रहैत ।

बेइमान आदि शब्द आ बजबाक ढंग देखि मोहनकें फकीरा लग अधिक काल रहब नीक नहि बुझना गेलै । सुखलाल कनेक अगुतायल आ फकीराकें जबाब देबऽ चाहलकै मुदा मोहन ओकरा सम्हारि लेलक ।

दोसर दिन मोहन सुखलालकें लऽ कऽ सुपौल जा जूमल । ओतऽ ओ सभ निबन्धन कार्यालयमे तहकीकात करौलक । पाइ तँ अवश्य बेस खर्च भेलै मुदा ई पता लागि गेलै जे फकीराक परबाबा अपन बेटीक बिआहक हेतु सुखलालक परबाबाकें साठि साल पूर्वहि जमीन लिखि देने छलथिन । ताहि दिनमे ओकर दाम केवल एक सय टाका देबऽ पड़ल छलनि । सुखलाल एक दिन आर रहि कऽ ओकर पकिया दस्तावेजक प्रति निकलबा लेलक आ घर घूरल ।

ओहि राति ठेहिआयल सुखलाल कय दिनुक बाद सुखनिन्दमे सूतल छल । सपनामे ओ अपनाकें गाछीक मचान लग देखलक । आमक समय छलैक । भटाभट आम खसि रहल छलै । ओकर दुनू बचबा आम बोछि-बीछि कऽ ढेरी लगौने जा रहल छलै । ओ बटोही सभकें आग्रह कऽ कऽ आम खोआ रहल छल । तावते मे व्यापारीक एकटा दल ओकरा लग पहुँचलै आ गाछीक डाक करऽ लगलै । मुदा सुखलाल जोरसँ बाजि देलक—'नहि, नहि, एहि साल गाछीक आम नहि बिकायत' आ ओकर निन्द टूटि गेलै । पूब दिस सँ अबैत सूरजक किरण जेना आमक पात सभसँ छना कऽ ओकर माथ पर पड़ि रहल छलैक । 

---

46 म सगर राति दीप जरय, पटनामे पठित एवं नैमिकानन, जनकपुरधाम, वर्ष 1 अंक 3, अप्रील-जून 2003 मे प्रकाशित

अनूदित कथा

स्वाभिमानक मार्ग

'की यौ मीत सभ ! अहाँ सभ एखन धरि एहि ठाम बैसल-बैसल की कऽ रहल छी?' ईंजिनियरिंग कॉलेजक होस्टलक एकटा कोठलीमे बैसल अनेक मीत सभक गप्पक क्रमकेँ भंग करैत सुगन्ध प्रवेश कयलक ।

सुगन्धक अबैत देरी सभक ध्यान ओकरे दिस चलि गेलैक । ओहिमे सँ मिताली प्रसन्न होइत बजलीह–'की कहू मीत ! हम सभ अहींक प्रतीक्षा कऽ रहल छलहुँ ।'

'कोनो खास बात की ?'

'देखू ने ! (एकबार आगू बढ़बैत) रेल विभागमे हमरालोकनिक लेल अनेक भैकेन्सी निकलल अछि...आरक्षणोक सुविधा छैके...नौकरी पक्के बूझू ।

'अधलाह नहि मानब संगीलोकनि ! अहाँ सभक एहन सड़ल मानसिकतासँ हमर स्वाभिमान आहत भेल अछि ।'

'से किएक ?

'अएँ यौ ! हमरालोकनि ककरासँ कम छी ? की हमरालोकनि आन सभसँ कनेको कम पढ़लहुँ अछि ? की हमरालोकनिमे प्रतिभा नहि ? जाय दिअऽ...अहाँ सभ चाहे जे सोची...हम सामान्ये श्रेणी जकाँ एपीयर भऽ कऽ अपन प्रतिभा आ कर्मण्यता सिद्ध करब...हमरा विश्वास अछि जे हमर चयन होयबे करत । तखन रेले विभागमे किएक ? सरकार हमरा कतेक देत?'

'तखन अहाँ की करबैक ?' सामूहिक स्वरमे सभ क्यो प्रश्न कयलक ।' हमरा संभक अन्तिम वर्ष समाप्त भऽ गेल अछि...श्रेष्ठ अंकसँ हमरालोकनि उत्तीर्ण होयबे करब...बहुराष्ट्रीय कम्पनीवला सभ परिसर-चयनक हेतु अयबे करत...ओकरा सभमे जे बेसी दरमाहा गछत, तकरे ओहिठाम ज्वाइन कऽ लेब...बुझैत गेलहुँ कि ने ।'

'आरक्षणक लाभ लेबामे की हर्ज ?'

'हर्ज छैक...हमरालोकनिक स्वाभिमान पर धक्का पड़ैत अछि...एहि सँ यैह बुझना जाइत छैक...हमरालोकनि कमजोर आ प्रतिभाहीन छी...ई अनुभूति जीवन भरि हमरालोकनिकेँ कुंठित करैत रहत...हम कोटासँ आयल छी। छीया, छीया ! धिक्कार अछि...हम तँ एहि कोटा-फोटामे विश्वासे ने करैत छी ।'

'वाह बन्धु ! वाह !! केहन टोनगर बात कहल...हमहूँ कोटाक लाभ नहि लेब । हमहूँ अपन प्रतिभा सिद्ध करब । हमरालोकनि ककरोसँ कम नहि छी !...हम अहाँक संग छी ।' ई मितालीक स्वर छलनि ।



डा. श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्रक हिन्दी लघुकथा संग्रह 'छँटता कोहरा' सँ भाषान्तरित तथा मिथिला महान, मैथिली त्रैमासिक, पटना, अक्टूबर-दिसम्बर 2004 मे प्रकाशित

अपन-अपन पानि

ऋषि ओहि समय जाप कऽ रहल छलाह । हुनक अर्द्धनिमीलित नेत्र दूर क्षितिजक कोनो बिन्दु पर गड़ल छलनि । ओहि समय एकटा चिड़ीमार आयल आ दण्डवत् कऽ कऽ सोझाँमे ठाढ़ भऽ गेल । ऋषिक कोनो शिष्य ओकरा सोझावला खुलल जमीन पर बैसि जयबाक संकेत कयलथिन । चिड़ीमार बैसि गेल । कनेक कालक बाद एकटा गरीब किसान आयल आ निहुरि कऽ दण्डवत् कयलक । ओकरो सोझहिमे बैसि जयबाक संकेत भेटलैक।

ओहि दिन कोनो अपूर्व संयोगे छल जे किसानक बैसलाक कनेक कालक उपरान्त नगर-सेठ आयल आ ओ प्रक्रिया दोहरौल गेल । नगर-सेठक अयलाक बाद राजा सेहो अयलाह । राजाकेँ बूझल छलनि जे ऋषिक आश्रममे अमला-फइला लऽ कऽ प्रवेश करबाक मनाही छैक । तँ एकसरे आबि प्रणाम कयलथिन । हुनको सामने बैसि जयबाक संकेत भेटलनि । राजा देखलनि जे ओहि ठाम एके पाँतीमे चिड़ीमार, किसान आ नगरसेठ बैसल अछि । ओना ओहि पाँतीमे बैसबा काल नगरसेठोक गोनमे अपमानबोध भेल छलैक, मुदा व्यवसायी होयबाक कारणें मोन मारि कऽ काज करबाक ओकरा आदति छलैक, तँ बैसि गेल छल । मुदा राजाक अहंकार जगले रहलनि आ ओ बैसलाह नहि । थोड़ेक दूर हटि कऽ घूर-बहूर करऽ लगलाह ।

ऋषिक जाप समाप्त भेलनि । ओ प्रफुल्लित मनसँ बैसल चिड़ीमार आ किसानकेँ देखलनि, थुथुन लटकौने नगरसेठ पर नजरि घुमौलनि आ राजाकेँ भौंह तनने घूर-वहूर करैत देखलनि । ऋषि सभटा बात बूझि गेलाह।

ओ सभकेँ अपना लग बजौलथिन आ कहलथिन-'हम अहाँ सभक आनल जल ग्रहण करब । निकटक नदीसँ कने-कने पानि लेने अबै जाउ ।' ऋषिक कमण्डल समक्षहि राखल छलनि । ओ सभकेँ ओहिमे पानि धऽ

देबाक इशारा कयलथिन । सभ केओ सैह कयलक । तखन ऋषि कहलथिन–'राजन् ! अपने महान थिकहुँ, नरपति थिकहुँ । हम पहिने अपनेक द्वारा आनल जल पीब । कृपापूर्वक कमण्डलसँ अपन जल बहार कऽ कऽ हमरा दऽ देल जाओ ।'

राजा बुद्धिमान छलाह । ऋषिक चरण पर निहुरि गेलाह । 'ऋषिवर! हमरा क्षमा कयल जाय । हम मोहग्रस्त भऽ गेल रही । राजा, नगरसेठ, किसान आ चिड़ीमार समाजक देल पदवी छैक । प्रकृति तँ ओकरा सभकेँ मनुष्य बनौलकैक अछि, जेना नदीक पानि एके होइत छैक खाहे ओ राजा आनथि वा चिड़ीमार ।'



डा. श्रीमती मिथिलेशकुमारीमिश्रक हिन्दी लघुकथा संग्रह 'छँटता कोहरा' सँ भाषान्तरित तथा मिथिला महान, पटना, अक्टूबर-दिसम्बर, 2004 मे प्रकाशित

वसुधैव कुटुम्बकम्

कोनो बंगाली युवक विज्ञानक उच्च शिक्षाक हेतु इंगलैंड गेल । ओतय ओ कोनो अंग्रेज मित्रक संग रहऽ लागल । ओ अंग्रेज कोनो सरकारी संत्रामे लागल छल । ओकर पत्नी अपन इकलौता पूतकेँ ओहि बंगाली युवक लग छोड़ि प्रतिदिन अध्ययनक हेतु विद्यालय चल जाइत छलीह । ओ युवको ओहि बालकक संग नीक जकाँ समय गुदस्त कऽ लैत छल । जखन मास बितलैक तखन ओ युवक अपन मित्रकेँ किछु टाका दऽ देबाक इच्छा प्रकट कयलक । ताहि पर ओ कहलकैक–'यार, एहि द्रव्यक कोन प्रयोजन छैक ?'

'हमर भोजनादिमे अहाँ जे खर्च-बर्च कयल, तकरे सधायब ने प्रयोजन ।'

'मुदा अहाँ जे हमरा लेल कयल से कोना सधत ?'

'मित्र, हम की कयलहुँ अछि ?'

'हमर पुत्रक सुरक्षा आ मनोरंजन।' ओहि अंग्रेजक पत्नी बजलथिन।

'ई तँ मानवधर्म थिक । हम तँ एहि बुतरू संगे सुखपूर्वक समय कटैत रहलहुँ । दोसर बात ई जे 'बसुधैव कुटुम्बकम्'क आदर्शक अनुरूप हम से सब कयलहुँ अछि । एहिमे हमरा कोनो प्रयासो नहि करऽ पड़ल ।'

''तहिना वसुधैव कुटुम्बकम्' केँ अवधारि लेबाक कारणें हमरो आयास नहिञे ने करऽ पड़ल ।'



डा. श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्रक संस्कृत लघुकथासंग्रह लघ्वीसँ भाषान्तरित एवं विद्यापति टाइम्स, मैथिली पाक्षिक, लहेरियासरायक १६ फरवरी सँ २८ फरवरी, २००६ अंकमे प्रकाशित

अभिनन्दन ग्रन्थ

कोनो विद्यालयमे एकटा मंत्री महोदयक आगमन भेलनि । ओ ओही विद्यालयक पूर्व अध्यापक छलाह । शिक्षक आ छात्रलोकनि ओहि महामहिमक भव्य स्वागत कयलनि । बेस पैघ सभाक आयोजन भेल । सभामे अपन मंत्रीक दर्शनक हेतु उत्सुक ग्रामीणलोकनि सेहो एकत्र भेलाह । सभामे मंत्री महोदयकेँ प्रधानाचार्यक द्वारा एक गोट अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित कयल गेलनि । ताहि पर हर्षातिरेकक संग घनघोर नारेबाजी भेल आ थपड़ी पिटाइत रहल ।

मन्त्री महोदय बजलाह–'साधुवाद ! साधुवाद !! हम एहि सम्मानसँ कृतार्थ भेलहुँ ।' पछाति ओ ग्रन्थकेँ खोलि कऽ देखलनि तँ पओलनि जे आहिमे केवल कागतकेँ गाँथि कऽ ग्रन्थक स्वरूप दऽ देल गेल छैक । ओ पुछलथिन–-'प्राचार्य महोदय ! एहिमे तँ किछु लिखले ने अछि ।'

निर्भीक स्वरमे प्रधानाचार्यो उत्तर देलथिन–'महाशय ! अपने द्वारा एहि विद्यालयक हेतु कोनो काज तँ कयल नहि गेलैक अछि, तखन किछु लिखबाक प्रयोजने की ?'

'अच्छा' कहैत मंत्री महोदय अपन भाषण शुरू कऽ देलनि ।



डा. श्रीमती मिथिलेश कुमारी मिश्रक संस्कृत लघु कथा संग्रह लघ्वीसँ भाषान्तरित एवं मिथिला महान, मैथिली त्रैमासिक, पटना, अप्रैल-जून 2007 अंकमे प्रकाशित

दुर्लभ सत्यनारायण पूजा

एकटा भक्त सत्यनारायण व्रतकथाक हेतु वृहत् आयोजन कयने छल। ओ एकटा विद्वान कथावाचक लग गेल आ हुनका कहलकनि–'पंडितजी! हमरा घर मे सत्यनारायणक व्रतकथा आयोजित अछि । हमर साञ्जलि निवेदन जे अपने पूजा करा देल जाय आ सत्यनारायण कथा सुना देल जाय।'

पंडितजी कहलथिन–'महोदय' ! आइकाल्हि 'सत्यक ज्ञान अनन्त ब्रह्म सदृश अछि, सत्येक विजय होइत छैक' आदि शास्त्रोक्त वचन तँ केवल लोकक जीहेटाक आभूषण बनि गेल छैक । जे किछु एहि जगतमे देखैत छी, अनुभव करैत छी, से की सत्य नहि थिक ? तखन सत्यनारायण पूजा की ?

भक्त बजलाह–'पंडितजी ! हमर पत्नी रोगग्रस्ता भऽ गेलि छलीह। तँ हम कथा करयबाक संकल्प बहुत पूर्वहि कऽ चुकल रही । आब ओ पूर्ण स्वस्थ छथि । पूर्वमे संकल्पित सत्यनारायण व्रतकथाक अवहेलना नहि होयबाक चाही ।'

पंडितजी जबाब देलथिन–'मुदा ओ सत्य अछि कतऽ जकर अहाँ व्रत करऽ चाहैत छी ? सदिखन सत्येक आचरण करी, से पहिल शर्त्त थिक आ तकरे ने अवहेलना करबाक उदाहरण व्रतकथामे अनुगुम्फित भेल अछि । वस्तुतः ने हमहीं सदिखन सत्य बजैत छी, ने अहीं आ आनो सैह करैत छथि। तखन पूजा-आराधनाक कोन मोल ? 'सब किछु सत्येमे प्रतिष्ठित अछि' ई अवधारि सत्यनारायणक व्रत करू । एहीसँ लोकमंगल होयत ।



डा. श्रीमती मिथिलेशकुमारीमिश्रक लघुकथासंग्रह लघ्वीसँ भाषान्तरित एवं मिथिला महान, पटना, अप्रैल-जून, 2007 मे प्रकाशित

लोकवृत्तात्मक कथा

धानक हड्डी

अपना ओहिठाम कहबी छैक जे पहिने धानक गाछमे चाउरे फड़ैत छलैक । एक दिन एकटा ब्राह्मण जबारी नोत खा कऽ अपना गाम दिस विदा भेलाह । ताहि दिन आरिये-धूरे चलि कऽ लोकके एक गामसँ दोसर गाम जाय पड़ैत छलैक । भोज खयला उत्तर ब्राह्मण अफरल तँ छलाह मुदा जखन कोस-दू-कोस चललाह तँ देह किछु हल्लुक भेलनि । आब जाहि आरि पर दऽ कऽ ओ जा रहल छलाह तकर दुनू कात धनखेती छलैक आ चाउरक दानाक शीश लहलहा रहल छलैक । पकबाक हेतु उताहुल चाउरक ओहि शीशसँ सम्पूर्ण वातावरण महमहा रहल छलैक । पेटकेँ कनेक हल्लुक भेल देखि ब्राह्मणकेँ हड़लनि ने फुरलनि, ओ शीश सुरड़ि कऽ मुट्ठीमे लैत गेलाह आ फक्का लगबैत गाम घुरलाह । मुदा विधाताकेँ हुनक ई कृत्य नहि सोहयलनि । ई मनुक्ख थिक कि मनुक्खक झऽड़ । एना तँ असमये खेतक खेत उपटि जायत । ओ लगले चाउरमे झाँपन दऽ देलथिन आ ओ भुस्सासँ बन्द होमऽ लागल । ओहि फसिलक अन्नकेँ सद्यः खायब दुरूह भऽ गेलैक। ओ धान कहबऽ लागल आ अपन प्रकृत स्वरूपमे जेना आइकाल्हि देखि पड़ैत अछि, तेना परिवर्त्तित कऽ देल गेल । कहल जाइछ जे विधाताक रचनामे एहि प्रकारक हस्तक्षेपेक कारणे ब्राह्मणकेँ खाधुर बुझल जाय लगलनि आ एखनहुँ दैवी शापवशात् ओ दरिद्रताकेँ अङेजने छथि । 'ब्राह्मण जाति अन्हरिया राति, एक रत्ती दही-चूड़ा लय घुसकल जाथि' कहबी एही परम्पराक देन थिक।

मानवक मूलभूत आवश्यकतामे भोजनकेँ प्रथम स्थान रहलैक अछि आ एकरे खोज-बीनमे ओ सृष्टिक आदिकालेसँ लागल रहल अछि । जँ पेटे नहि तँ हमरा अहाँक भेंटे की ? मानवक समस्त क्रियाकलाप आ पारस्परिक सम्बन्धक मूलमे अन्ने रहल अछि । 'अन्नं ब्रह्मं विजानीयात्' 'अन्नाद् भवन्ति भूतानि' आदि भारतीय मनीषाक उद्घोषणाक गंभीरतामे गेला उत्तर ई प्रतीत

होइछ जे मानव अन्नक प्रति सभ दिनसँ संवेदनशील रहल अछि । अन्नोमे धान नहि केवल भारत अपितु सम्पूर्ण विश्वमे विख्यात रहल अछि । मिथिला तँ धानक हेतु प्रसिद्ध अछिये । अनेक लोककथा-उपकथामे धान, चाउर, भात एवं चाउरक विभिन्न पकमानक उल्लेख होइत रहल अछि । विश्व मानवक संस्कृति ओ संस्कार, प्रसन्नता ओ अवसन्नता तथा स्वाधीनता ओ परतंत्रता कोना चाउरक परित: आघूर्णित रहल अछि, तकर एकटा स्वरूप एहि चीनी लोककथामे भेटैत अछि–

बहुतो दिन पहिनेक कथा थिक । एकटा राजा छलाह । हुनका राजमे लोक सभ धानक भुस्सा खा कऽ जीवन-यापन करै छल । ओकरा सभकेँ ई नहि बूझल छलै जे भुस्साक भितरका दाना उत्तम खोराक होइत छैक। ओ सभ ओकरा धानक हड्डी बूझि फेकि दैत छल आ भुस्साकेँ धानक मासु बूझि खा लैत छल ।

राजाक महलमे बहुतो चाकर आ बहिकिरनी सभ छलनि । ओहिमे एकटा बहिकिरनीक नाम छलै–रनिञा । ओ खास कऽ रानीक सेवा-बरदाइस करै छल । रानी कने चंठ प्रकृतिक छली । ओ अपन बहिकिरनी सभक संग कठोर व्यवहार करै छली । रानीक आदेश पर छोटो-मोट गलती पर बहिकिरनी सभकेँ नहि केवल गारि-बात सुनऽ पड़ै छलै अपितु ठुनका-लात सेहो सहऽ पड़ै छलै । अपन बहिकिरनी सभकेँ रानी भुखले खटा कऽ प्रताड़ित करैत रहै छली । एक दिन रनिञाकेँ पानि अनबामे देरी भऽ गेलै ! एहि पर खौंझाएल रानी बरसि पड़ली–'दुर जो गे धोंछी रनिञा ! भरि दिन घुसुर-घुसुर खाइ छें आ पड़ल रहै छें । जेहन नीक-निकुत खाइ छें, तेहन सेवा-टहल नहि कऽ पबै छें । आब तोरा तकर मजा चिखबै छियौ । आइसँ तोरा खेनाइये नहि भेटतौ, तखन बुझबीही ।'

रनिञा जनै छली जे ओकरा भोजन भेटौ कि नहि, रानीक सेवा तँ करहि पड़तैक, तँ ओ भुखले पेटे रानीक सेवा करऽ लागलि । मुदा भूखे भजन नं होंहि गोपाला । तकर परिणाम भेलै जे ओ किछुए दिनमे सुखा कऽ काँट भऽ गेलि । अन्ततः ओ कोनो काज करबाक योग्य नहि रहलि । ओ सोचलक–'भोजन तँ हमरा केओ देत नहिञे । तँ की एहिना भुखले मरि जाइ? नहि, से नहि हैत । हम धानक हड्डीये बरु खायब मुदा जीबैत रहब ।' ई

सोचि ओ एक मुट्ठी चाउर लऽ कऽ फाँकि लेलक । गाल तर गेलाक बाद जखन ओकरा चिबौलक तँ ओकर मधुर स्वादसँ मोन हर्षित भऽ उठलै । अरे, ई तऽ धानक मासुओसँ नीक छैक । ओ भरि पेट चाउर खा लेलक आ पानि पीबि तृप्त भऽ ढेकार कयलक । एना ओ प्रतिदिन करऽ लागल । लगले ओकर सुक्खल देह लहलहा उठलै । धसल गाल मलपूआ भऽ गेलै, सुक्खल बाँहि गसा गेलै, ठोढ़मे लाली फेकि देलकै, देहमे पहिनेसँ दुगूना बुत्ता आबि गेलै, डाँड़ आ जाँघ गदरा गेलै । ओ ततेक सुन्नरि भऽ गेलि जे जकरा दिस आँखि उठा कऽ देखि लिअय से अपूर्व आकर्षणसँ बिद्ध भऽ जाय । समय बितैत गेलै आ खियौटी रनिञा सेठानी जकाँ सर्वाङ्गसुन्नरि भऽ गेलि । ओकर मुस्की पर कतेको नवजवान अपन जान देबा लय तैयार रहऽ लागल । आन चाकर-बहिकिरनी सभ रनिञाक ई बदलल रूप देखि एक दिन ओकरासँ पूछि बैसलै–'गे रनिञा दीदी । तोहर गोराइ तँ बढ़ले जाइ छौ, कहीं राजा के नजरि पड़ि गेलौ तँ जुलुम भऽ जेतौ । मुदा कने हमरो सभकेँ ओ दवाइ बता ने दे जे खा-खा कऽ तोँ पलड़लि जाइ छें जखन कि भरि दिन लुरू-खुरूमे लगले रहैत छें । अयँ गे, तोरा तँ खेनाइयो बन्द छौ तखन कोन जाँताक चिक्कस खा-खा कऽ सिलौट भेल जाइ छें ।

रनिञा अपन संगी-साथीक गप्प सुनि ठठा देलक आ ओकरा सभकेँ कहलकै जे तोँ सभ सत्त कर तँ सत्य बता देबौ । 'एक सत्त दू सत्त तीन सत्त, जे नहि करय से अस्सी कोस नरकमे पड़य ।' संगी सभ सत्त कऽ लेलकै । तखन ओ ओकरा सभकेँ एहि बातकेँ गुप्त रखबाक सप्पत खुआ कऽ जना देलकै जे ओ भुखले नहि रहैत अछि आ धानक हड्डीये खयलासँ भरिसक एते कठमस्त आ सुन्नरि भऽ गेल अछि । ताहि दिनसँ ओकर संगीयो सभ नुका-चोरा कऽ धानक हड्डी खाय लागल ।

रानी देखलनि जे रनिञा तँ ततेक सुन्नरि भऽ गेलि अछि जे कहीं जँ राजाक नजरि एकरा पर पड़लै तँ ओ जरूरे एकरा अपन रानी बना लेताह। सौतिनिञा डाहसँ जरैत रानी रनिञाक सुन्दरताक रहस्य बुझबाक हेतु अपन ईर्ष्याकेँ दबबैत उपरे मोने ओकरा दुलारऽ-पुचकारऽ लगली । ओ ओकरा इनामक लोभ देलथिन । अप्पन सप्पत दैत कहलथिन–'देख रानू, जँ तोँ हमरा ई रहस्य नहि बतयबें तँ हम जान हति लेब । तोँ तँ नीक घरक बेटी छें । तोरा

सन दयामान एहि दुनिआमे के हैत । काजुल तँ तोरा सन हम जिनगीमे ककरो देखबे नहि कयलहुँ । हमरा बूझल अछि जे तोँ सुन्दर होयबाक उपाय बता कऽ हमरा अवश्ये उबारि लेबें ।

मुदा रनिआ तँ रानीक रग-रग चिन्हैत छलि । ओहि खेलड़िया दिस घृणापूर्ण नजरिसँ ओ देखैत रहलि । ओकरा मुँहसँ एकोटा शब्द नहि निकसलै।

अपन प्रयासमे हारलि रानी फेर अपन स्वरूपमे आबि गेली आ चेतबैत कहलथिन–'देख रनिआ, जँ तोँ दू दिनक भीतर हमरा सुन्दर बनबाक रहस्य नहि जनौलें तँ रनिवासक सभटा दास-दासीकेँ शूली पर लटकबा देबौ। बड़ मानै छौ तोरा ओ सभ ।'

ओ दू दिन, दू राति रानीक हेतु कालक पहर आ कालरात्रि बनल रहलै । ओ कछमछ, छटपट करैत बितौलनि आ रनिआक टुटबाक प्रतीक्षा करैत रहलि । ने आँखिमे निन्न छलनि आ ने मोनमे चैन । आँखिसँ दहो-नोर नोर जाइत रहलनि ।

एम्हर रनिआक सेहो सैह हाल छल । अपन संगी सभक अकाल मृत्युक कल्पना कऽ ओ सिहरि उठै छल । अन्तमे ओ ओकरा सभक लग गेलि आ चेतौनीक सभटा गप्प ओकरा सभकेँ सुना देलक । संगी सभ मरबाक हेतु तैयार छल मुदा रनिआक रहस्यक उद्घाटन, सेहो ओहि चंठिनी लग नहि चाहैत छल । मुदा रनिआ अपन संगी सभक प्रेमक प्रति अभिभूत भेल टूटि जयबाक लेल तैयार छल ।

अन्तमे रनिआ रानीक कक्षमे जा जुमलि । ओ रानीसँ वचन लेलक जे ओ ओकर सभटा संगी-साथीकेँ गुलामीक जोवनसँ आजाद कऽ देथि, तखने ओ अपन सुन्दर होयबाक रहस्य खोलि सकैत छलि । रानी लगले तैयार भऽ गेली । सभटा दास-दासी मुक्त कऽ देल गेल । सभकेँ राजक दिससँ रोजी-रोटीक व्यवस्थाक हेतु प्रचुर धन दऽ देल गेलै ।

एम्हर रनिआ रानीकेँ कहलकै–'रानी जी ! हमरा जखन अहाँ सहा कऽ मारि देबा पर वृत्त भेलहुँ तँ हम सोचल जे कादर जकाँ काहि काटि मरबा सँ नीक जे वीरे जकाँ जीबी । तेँ हम संकल्प कऽ लेल जे खाइ का नहि खाइ, काजमे खूब मन्न लगायब आ जीबैत रहब । सैह भेल, हम जीबैत रहलहुँ आ सुन्नरो भऽ गेलहुँ । जँ अहूँ से चाहै छी तँ एखनेसँ दृढ संकल्प कऽ खायब छोड़ि दिअऽ आ मोनकेँ बहटारने रहू ।'

रानी रनिआक बात पर विश्वास कऽ सुन्नरि बनबाक अभिलाषामे भोजनक परित्याग कऽ देलनि आ लटुआय लगलीह । रनिआकेँ पुछथिन तँ ओ हुनका दृढ संकल्पक बात कहि बहटारि देल करनि । अन्ततः रानी कमजोर होइत-होइत एक दिन मरिये गेली । हुनके शोगमे राजा सेहो मरि गेला आ राजा-रानीक सभटा गुलाम हुनक सम्पत्ति पर कब्जा कऽ आनन्दसँ रहऽ लागल।

आइयो जखन चीन देशमे कोनो आदमी सुगंधित भातक स्वाद पबैत अछि तँ ओकर जीह पर सहजे रनिआक नाम आबि जाइत छैक आ ई कथा मोन पड़ि जाइत छैक।

एहि लोककथामे शोषण, उत्पीड़न ओ अन्यायक विरूद्ध विद्रोही मानव स्वभावक संगहि मानवक जिजीविषा, प्रतिशोधक अखण्ड भावना एवं प्रेम ओ सहानुभूति आदिक व्यापक चित्र उरेहल गेल अछि जे आजुक मानव समुदायक हेतु सेहो ओतबे सत्य, जते पूर्वमे छल, आदिम सांस्कृतिक अवस्थामे छल ।



मैथिली अकादमी पत्रिका, अप्रैल-दिसम्बर, २००८ मे प्रकाशित

सात बहिन

अपना देशमे हितोपदेश, मित्रलाभ सदृश लोककथापरक रचना द्वारा लोकशिक्षणक परम्परा रहलैक अछि । मुदा बुझना जाइत अछि जे ई परम्परा सम्पूर्ण विश्वमानवक हेतु सभ प्रदेशमे व्यावहारिक ज्ञान-प्राप्तिक एकटा सशक्त माध्यम रहल अछि । एहन कथा सभमे पात्रक रूपमे बहुधा पशु, पक्षी आदिकेँ सेहो स्थान देल जाइत रहलैक अछि । एतऽ धरि जे रामायणहुमे वानर, रीछ आदि पात्रक रूपमे आयल अछि ।

स्वार्थ मनुष्यक प्रकृतिगत धर्म छैक, मुदा जेना-जेना मानव सभ्यताक विकास होइत गेलैक, मनुष्यकेँ परमार्थ दिस लऽ चलबाक सदुपदेश देल जाइत रहलैक जाहिसँ 'वसुधैव कुटुम्बकम्'क भावना क्रिया रूपमे परिणत भऽ मानव मात्रक हेतु कल्याणकारी भऽ सकैक । समस्त पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, वैधानिक प्रक्रियाक विस्तारक मूलमे मानवमात्रक कल्याणेटा उद्देश्य रहल अछि। कारण, जखन व्यक्तिगत स्वार्थ माथ पर चढ़ि कऽ नाचऽ लगैत छैक तँ कैकेयीक जन्म होइत छैक, जे सम्पूर्ण परिवारकेँ ध्वस्त करबा पर तुलि जाइत छैक । एहिना जखन भरत सन परमार्थीक उद्भव होइत छैक तँ टूटल परिवार फेर जुटि जाइत छैक । स्वार्थक अतिरेकें महाभारतक कारण होइत अछि आ मानवधर्मक क्षय दृष्टिगोचर होइत छैक । तँ की स्वार्थक प्रति मानवक व्यामोह खतम भऽ सकतैक ? कथमपि नहि । आब तँ एकर विस्तार एतऽ धरि भऽ गेलैक अछि जे ने माय अपन यौवनक्षयक भयसँ नेनाकेँ दूध पियाबऽ चाहि रहल छैक आ ने सन्ततिये बूढ़-झुनकुट माता-पिताक बोझ उठबऽ लय तैयार छैक । एहनमे परिवार, समाज, प्रदेश, राष्ट्र आ विश्वमानवक कल्याणक हेतु चिन्तन पद्धतिक की स्थिति भऽ सकैछ, से स्वयं अनुमेय अछि। आ यैह कारण थिक जे व्यक्तिसँ लऽ कऽ व्यक्तिसमूह धरि एकसर होइत जा रहल अछि आ मानव मात्र आतंकित जीवन जीबाक हेतु विवश भऽ गेल अछि । ने धनिकहाकेँ गरीबक पेटक चिन्ता रहलै ने गरीबहाकेँ धनिकक

जीवनक । सौंसे संसार आणविक-परमाणविक ओ जैव अस्त्रसँ एक दोसरा पर घात-प्रतिघात करबाक हेतु तत्पर देखि पड़ैत अछि ।

एहनो परिस्थितिमे जे अपन धर्म ओ दायित्वकेँ बूझैत अछि आ समूहक कल्याण भावनासँ क्रियारत अछि, तकर जय होइतहिं छैक, एहिमे कोनो सन्देह नहि । एहने सन तथ्य पर आधारित अछि चीन देशक ई लोककथा। एहिमे अपन दायित्वकेँ पूर्ण करबाक मर्यादाक रक्षाक हेतु व्यवहारपरक जीवन-पद्धतिक चित्रांकन भेल अछि । कथा एहि प्रकारक अछि–

बहुत दिनक बात थिक । पहाड़ी इलाकामे एकटा गाम छल । ओहि गाममे केवल दू-तीन घर बसैत छलैक । ओहिमे एकटा घरमे सात बहिनिक वास छलनि । हिनकालोकनिकेँ माता-पिता तँ नहि छलथिन, मुदा अपन हाथक हुनरसँ ईलोकनि ततबा कमा लैत छलीह जे भरिपेट अन्न आ भरि देह वस्त्र भेटि जाइत छलनि । सातो बहिनिक नाम क्रमशः–सोम , मंगली, बुधियां, बेरहसपतिया, सुखड़ाही, शनिचरी आ रविरतनी छलनि ।

गामसँ दूर पहाड़ी पर सातटा हुड़ार रहैत छल । एक दिन रातिमे ओ सातो चकैठ जवानक रूप धारण कऽ आहार तकबाक हेतु नीचा उतरल । सातो हुड़ार ओहि बहिन सभक घर लग जा जूमल । दरवज्जाक गहसँ हुलकी मारला पर ओ सभ सातो बहिनकेँ बैसैत-उठैत देखलक आ कुण्डी खटखटौलक । बहिन सभ बेरा-बेरी केवाड़क गह दऽ कऽ हुलकी-बुलकी मारलक तँ देखलक जे किछु अनचिन्हार लोक दरवज्जा लग ठाढ़ अछि । ओकरा सभकेँ केवाड़ खोलबाक हिम्मति नहि भेलैक । हुड़ार सभ बाजल–'हे ये दीदी, केवाड़ खोलू ने, किछु खाइ लय दिअऽ । हमरा सभकेँ भूख लागल अछि । हम सभ भोजनेक ताकमे निकलल रही मुदा पयरा बिसरा गेल । हमरा सभकेँ राति भरि रहऽ दिअऽ ।'

बहिन सभ बाजलि–'हमरा सभक माय-बाबूजी बाहर गेल छथि, तँ हम सभ अहाँ सभकेँ घरमे नहि लऽ सकै छी । कोनो दोसर ठामक बाट धरू ।'

'ठीके छै, हम सभ बेसी काल नहि रुकब मुदा कने सुस्ता तँ लेबऽ दिअऽ'–हुड़ार सभक दिससँ कहल गेलैक ।

सातो बहिन एतबा सुनैत देरी केवाड़ खोलि देलकैक आ अभ्यागत सभकेँ भीतर कऽ लेलक ।

जखन सोमनी अभ्यागत सभकेँ बैसबाक हेतु खिनहरि लाबऽ गेलि तँ देखलक जे ओकरा सभकेँ नाङरि छैक । ओ डरे सर्द भऽ गेलि, मुदा चुपचाप मुँह बन्न कयने घरसँ बहरा गेलि ।

मंगली जखन अभ्यागत सभक हेतु जल लऽ कऽ आयलि तँ देखलक जे ओकरा सभक हाथ पर पैघ-पैघ केश छैक । ओहो घबड़ा गेलि आ अपन आन बहिन सभकेँ बिनु किछु कहने घरसँ बहरा गेलि ।

बुधिया अभ्यागत सभकेँ पैर धोअयबाक हेतु लोटा लाबऽ गेलि तँ देखलक जे ओकरा सभक पैर बेस पैघ-पैघ केशसँ छारल छैक । ओहो ततेक डेरा गेलि जे बिनु किछु बजने बहरा गेलि ।

बेरहसपतिया अभ्यागत सभकेँ खोअयबाक हेतु बगिया बना कऽ अनलक । ओ देखलक जे अभ्यागत सभ बगियामे अपन चाङुर गड़ा ओहिमे भूर कऽ देलकै । डरे ओ थरथर काँपऽ लागलि । ओकरा हाथसँ बगियाक बासन खसि पड़लैक ।

सातो अभ्यागत खिनहरि पर बैसल नहि । ओ सभ ने हाथ-मुँह धोलक ने बगिये खयलक । ओ सभ ओहि बहिन सभकेँ पुछलकैक–'अयँ ये दीदी सभ, अहाँ सभ एना डेरायल किएक छी ?'

चारिम बहिन चिचिआइत भागऽ चाहैत छली मुदा ओकर अक्-बक् बन्न भऽ गेलैक । ने ओ किछु बाजि सकलि आ ने ओतऽसँ भागिये सकलि। अपनाकेँ सम्हारैत ओ बगिया सभकेँ उठा कऽ फेर बासनमे धऽ देलकैक ।

तकर बाद ओ टकुरी काटऽ लागलि । अभ्यागत सभ खिनहरि पर बैसि जाइत गेल । ओ सभ बेरा-बेरी हाथ-मुँह पखारलक, पानि पीलक आ बगिया खाय लागल ।

टकुरी कटबाक आवाज ओहि घनघोर रातिमे एहन सन बूझि पड़ैत छलैक जेना कोनो दुखिया महिला करुणा करैत हो । बेरहसपतिया कननमुँह भेलि सुखड़ाही, शनिचरी आ रविरतनीक कानमे मुँह सटा कऽ कहलकै–'ई सभ हुराड़ थिक आ जुआन मरदाबाक रूप धयने अछि । ई सभ हमरा सभकेँ खा जायत ।'

एतबा सुनैत देरी तीनू छोटकी बहिन हिचुकऽ लागलि । हुराड़ सभक डरें ओ सभ भोकाड़ि पाड़ि कऽ कानियो नहि सकैत छलीह ।

रविरतनी शनिचरीकेँ कहलकैक–'गे दीदी, तोँ तँ हमरासँ नमहर छें। तेँ हमर सभक रक्षा करब तोहर धर्म छौ ।'

शनिचरी सुखड़ाहीकेँ कहलकैक–अएँ गे दीदी, तोँ तँ हमरासँ जेठि छें, तेँ हमर रक्षा तोरे कर्त्तव्य छौ ।'

सुखड़ाहीकेँ बचबाक कोनो उपाय नहि छलैक । ओ बेरहसपतियाकेँ कहलकैक–'दीदी गे, तोँ तँ हमरोसँ पैघ छें । तेँ कोनो तेहन उपाय कर जे हमरा सभक रक्षा भऽ सकय ।'

बेरहसपतिया जनैत छलि जे भगलासँ काज चलऽवला नहि छैक । तेँ चलाकीसँ काज लेल जयबाक चाही । ओ अपन तीनू छोटकी बहिन सभकेँ कहलकैक–'हमरा सभक तीनू जेठ बहिनकेँ खाली अपन-अपन जान बचयबाक खेयाल अयलैक । ओसभ हमरा सभकेँ बिनु सतर्क करौनहि पड़ा गेलि । तेँ आब हमरा सभकेँ अपन सुरक्षा हेतु अपने कोनो उपाय करऽ पड़त। हमरा सभकेँ कोनो तेहन चक्कर अवश्ये चलयबाक चाही, ने तँ ई हुड़ार सभ हमरा सभकेँ मूड़ी मचोरि कऽ खाइये जायत ।'

तीनू छोटकी बहिन चारिम बहिनिक बात मानि लेलक । ओ सभ टकुरीयो कटैत रहल आ बचबाक उपाय सेहो सोचैत रहल ।

आब टकुरी कटबाक आवाज कोनो दुखिया महिलाक करुणा सन नहिं लगैत छलैक । चारू बहिन कानब छोड़ि देने छलीह । हुनकालोकनिकेँ युक्ति पकड़ा गेल छलनि । बेरहसपतिया उठलि आ अभ्यागत सभ लग जा कऽ बाजलि–'हमरा सभकेँ औंघी लागि रहल अछि । की आब अहाँ सभ जाइ लय तैयार छी ?'

सातो हुड़ार एके स्वरे कहलक–'एखन कोन अबेर भेलैए ? जाधरि अहाँक आरो तीनू बहिन नहि आबि जाइत छथि ताधरि तँ अहूँ सभ नहिञे सूति सकैत छी । तेँ एतहि चलि आउ आ घूर तापू ।'

बेरहसपतिया सोचलक जे ई नीक मौका थिक । बाजलि–'हँ, से तऽ सुतबासँ पहिने हम सभ घूर तर हाथ-पैर सेदिते छी । तेँ छत परसँ थोड़ेक जारन-काठी लऽ अबै छी ।'

सातो हुड़ारकेँ कोनो षड्यन्त्रक आभास नहि भेलैक । ओ सभ बेरहसपतियाकेँ छत पर जाय देलकैक !

कनेक कालक बाद बेरहसपतिया अपन तीनू छोटकी बहिन सभकेँ शोर पाड़लक–'गे छौड़ी सभ । एमहर आ ने । कनेक मदति कर ने । एतेक जारन आनब से हमरे बापक दिन थिक ।'

एहि तरहें बाँकी तीनू बहिन सेहो ऊपरे चलि गेलीह ।

एम्हर सातो हुड़ार खा-पी कऽ मुँह-हाथ धो लेलक । तकराबाद घूर तर बैसि हाथ-पैर सेदऽ लागल आ चारू बहिनिक नीचा घुरबाक प्रतीक्षा करऽ लागल।

एक पहर बितलै, दू पहर बितलै, मुदा ओ कन्या सभ नीचाँ नहि उतरलि । आब हुड़ार सभक धीरज जबाब दऽ देने छलै । ओ सभ अपने ऊपर जा कऽ ओकरा सभक खोज-बीन करबाक निश्चय कयलक ।

सभसं पहिने बड़का हुड़ार ऊपर गेल, मुदा ऊपर गेलाक बाद ओकर की भेलैक से नीचाँवला हुराड़ सभकेँ पता नहि लागि सकलैक ।

तखन दोसर हुड़ार ऊपर चढ़ल मुदा फेर ओ अपन मुँह देखयबाक हेतु नीचाँ नहि आबि सकल । ओकरा अलोपित जानि तेसर हुड़ार ऊपर गेल। मुदा ओहो घुरि कऽ नहि आयल ।

आब तँ बाँकी चारू हुड़ार छगुन्तामे पड़ि गेल । ओ सभ गमलक जे जरूर कोनो तेहन बात छैक तेँ बेरा-बेरी ऊपर जायब बुधियारी नहि होयत। एहि बेर चारिम हुड़ार आगू-आगू चलल आ पाछूसँ पाचम, छठम आ सातम हुड़ार ओकर पछोर धयलक । ई तीनू अपन-अपन आगूवला हुड़ारक नाङरि पकड़ने छल ।

जखन चारिम हुड़ार उपरका सीढ़ी पर पहुँचल तँ देखलक जे चारू बहिन शोणित लपेसल पैना लेने ओकरा सभक प्रतीक्षामे बैसलि अछि । यावत् चारिम हुड़ार किछु बजैत तावत् चारू बहिन अपन-अपन पैनासँ ओकरा माथ पर समधानि कऽ चोट कऽ देलक । ओकर माथ फाटि कऽ खण्डी-खण्डी भऽ गेलैक आ ओ अपन तीनू संगीक संग नीचा जे गुड़कल से घूरे पर जा कऽ खसैत गेल । सभ पाकऽ लागल ।

चारिम हुड़ार तँ मरिगे गेल छल मुदा बाँकी तीनू कनैत-कुहरैत लत्ते-पत्ते भागल । तखने चारू बहिन नीचाँ उतरि घरमे ढुकि बिलैया चढ़ा देलक ।

तीनू हुड़ार बुझि गेल जे ई छौड़िया सभ हमरा सभकेँ मूर्ख बनौलक अछि । ओकरा सभकेँ इहो बूझल भऽ गेलैक जे आब ओ सभ चारिटा सहोदरकेँ हेरा चुकल अछि । येह सभ विधुनैत ओकरा सभक क्रोध बढ़ैत गेलैक आ ओ सभ कठमस्त जवानक रूप छोड़ि अपन असली रूपमे आबि गेल । आब ओ सभ अपन भाइ सभक हत्याक बदला लेबाक हेतु जोर-जबरदस्तीसँ घरक दरबज्जा खोलबाक हेतु धक्का मारऽ लागल। मुदा ने चिकरने-भोकरने, ने धक्का मारलासँ, ने चाङुरेक जोर लगौलासँ दरबज्जा टससँ मस भऽ सकलैक ।

हुड़ार सभ कोशिश करैत रहल मुदा केवाड़ बन्दक बन्दे रहलैक ।

ओम्हर घरमे टकुरीक चलबाक आवाज गनगनाइत रहलैक ! मुदा ई आवाज मधुर छलैक । जेना केओ कठहँस्सी हँसि रहल हो ।

ओम्हर तीनू हुड़ार भागि कऽ घरक पछुअतिमे जा जूमल । ओ सभ सोचने छल जे पछिला दरबज्जा तोड़ि कऽ भीतर प्रवेश कऽ जायब आ टकुरी कटनिहार छौड़ी सभकेँ धऽ लेब । मुदा एहू दरबज्जामे टाटी-बेनाठी लागल छलैक । एहिमे एतबो फाट नहि छलैक जे जँ हुराड़ सभ सुइयो सन पातर भऽ जाइत तैओ ओहिमे अँटि सकैत । तेँ ओ सभ अङनइमे बूलैत रहल आ गुर्राइत रहल ।

तखने पाँचम हुड़ारक नजरि आङनमे राखल एकटा माट पर पड़लैक । माटक झपना कने अलगल छलैक आ ओहिमेसँ एकटा कान बाहर दिससँ देखाइ पड़ैत छलैक । कानक करनफूल चमचम कऽ रहल छलैक । ओ हुड़ार ओहि कानकेँ कटैत भागल । ई कान जेठकी बहिनिक छलैक जे धरफड़ीमे माटमे जा कऽ नुका रहलि छलि आ ई नहि बूझि सकलि जे ओकर एकटा कान बाहरे निकलल छैक । ओकर वैह कान हुड़ार काटि कऽ लऽ गेल छलैक । ओ बपहारि तोड़ऽ लागल ।

आङनमे चक्कर कटैत-कटैत छठम हुड़ार देखलक जे एकटा गाछक ठारिसँ कोनो मनुक्खक पैर लटकल छैक । ओ लगले कूदि कऽ ओहि पर दाँत गड़ा देलकैक आ अउँठा काटि कऽ लत्ते-पत्ते पड़ायल ।

वास्तवमे ओ अउँठा दोसर बहिनिक छलैक । ओ ओही गाछ पर जा कऽ नुका रहलि छलि मुदा डरे अपन संतुलन बना नहि सकलि छलि तेँ पैर लटकले छलैक । ई तँ ओकर भाग्य छलैक जे ओ अपन पैर लगले छीपि लेलक जाहिसँ हुड़ारकेँ खाली अऊँठेटा हाथ लगलैक ।

सातम हुड़ार आङनमे चक्कर मारैत-मारैत झोंझमे एकटा पैर देखलक। ओ लगले ओहि पर आक्रमण कऽ देलक आ ओकर ठेहुन धरिक भाग काटि कऽ पड़ायल ।

ओ तेसर बहिन छलि । ओ अपन मुँह झोंझमे नुका लेने छलि मुदा बगुला जकाँ अपन देहक आन अंग सभ नुकायब बिसरि गेल छलि । ओकर पैर शोणितसँ सराबोर भऽ गेल छलैक । घाओ भरबामे सालक धक् लागि गेलैक तैओ ओ नेङरी दू टेङरी बनले रहलि ।

आब देखू जे जेठकी तीनू बहिन जेँ डेरबुक आ खाली अपनटा काज साधबामे प्रवीण स्वार्थी प्रवृत्तिक छलीह तेँ हुनकालोकनिकेँ तकर नीक जकाँ कुफल भोगऽ पड़लनि ।

चारिमसँ सातम धरि बहिन सभ एक संग मिलि कऽ विपत्तिक सामना वीरतापूर्वक कयलनि आ शत्रुकेँ पराभवमे देबामे सफल भेलीह । हुनका सभकेँ अपन-अपन सासुर लऽ जयबाक लेल हुड़ारक एक-एकटा नीक चाम सेहो हाथ लगलनि । स्वार्थ आ परमार्थक बीच, एक पेट आ सात पेटक बीच, एकता ओ अलगे भाड़ फोड़बाक प्रवृत्तिक बीच चलैत संघर्षक ई कथा आइयो मानवक सुख ओ दुःख, प्रेम ओ कलहक कारणक व्याख्या करैत अछि।



मिथिला दर्पण, मैथिली द्वैमासिक, मुम्बईमे क्रमशः मार्च-अप्रील एवं मइ-जून, 2008 अंकमे प्रकाशित

बेनीराम

बेनीराम मिथिलाक दुइ गोट जाति क्रमश नाउ आ करोड़ीक जातीय देवताक रूपमे पूजित छथि । हिनका प्रति एहि दुनू जातिक लोकक आस्था अत्यन्त प्रबल अछि आ लोकविश्वास छैक जे बेनीरामक पूजासँ नहि केवल अन्न-धन-लक्ष्मीकेँ पलटाओल जा सकैछ अपितु डाइन-जोगिन आदिक करिश्मा सँ त्रस्त गाय-गोरु ओ नेनाक सेहो रक्षा भऽ सकैत छैक । लोकमान्यता इहो छैक जे एहि लोकदेवताक पूजासँ बाँझिन पर्यन्तक आँचर भरि सकैत छैक ।

बेनीरामसँ सम्बन्धित अनेको लोकगीतक प्रचार भगतलोकनि आ नारी समाजमे अछि जे पुस्त दर पुस्त कण्ठान्तरित होइत अबि रहल अछि । एहि लोकदेवतासँ सम्बद्ध गीतक संकलनक प्रयास लहेरियासरायक प्रसिद्ध वकील स्व. महावीरठाकुर द्वारा कयल जयबाक सूचना अछि मुदा स्व. ठाकुरक असमय निधनक कारणे ओ गीत सभ अद्यावधि प्रकाशमे नहि आबि सकल अछि । उदाहरणार्थ लोककंठसँ संकलित ई गीत द्रष्टव्य अछि–

उठू उठू कोइली हे चिड़ैयाँ भेलै भिनसार
रूसल जाइ छै बेनीराम दुलरा, दिऔ ने मनाय
तखनी से कहितय रे सेवक दितियौ रे मनाय
रन्था भेल उताहुल रे सेवक जेबै बड़ी दूर
पीबि लेहो आहो दुलरुआ सोहरी गाय के दूध
चाभि लेहो आहो दुलरुआ पाकल बीड़ा पान
नहि पीबौ आरे सेवक सोहरी गायके दूध
नहि चभबै आरे सेवका पाकल बीड़ा पान
छवही महीना हो बेनीराम कयलिअह धेयान
अपना सेवकके दुलरुआ देहो ने आशीष
छवही महीना रे सेवका सेवलें जरूर
ऊँच तोरा करबौ रे सेवक जाय दे बड़ी दूर

दरभंगा व्यवहार न्यायालयक अधिवक्ता श्रीअशोककुमारठाकुर बेनीराम चालीसाक निर्माण कयने छथि जे प्रकाशित अछि । एहि चालीसामे श्रीठाकुरक भक्त हृदयक उद्‌गार भेटैत अछि । तदनुसार बेनीराम नाउ कुलमे जन्म लेने छलाह । ई नेनपनहिसँ अत्यन्त वीर प्रकृतिक छलाह । तत्कालीन शस्त्रास्त्र तीर-धनुष चलयबामे ई निष्णात छलाह आ ताहिसँ चिड़ै-चुनमुनी ओ जीवा-जन्तुक शिकार कयल करथि । जखन ई पैघ भेलाह तँ पओलनि जे भारतीय भूभागमे नेपाल तराइ दिससँ किछु आततायीक समूह आबि आक्रमण कऽ देल करैत अछि आ नहि केवल अन्न-वस्त्रादि ओ संचित निधिटाक लूटपाट करैत अछि अपितु ओलोकनि एहि ठामक नारीक इज्जतिक संग सेहो खेलवाड़ करैत अछि । बेनीरामकेँ जनसमुदायक ई दुर्दशा बर्दाश्त नहि भेलनि। ओ आततायी सभक संहार करबाक बीड़ा उठौलनि आ सैन्य संगठनमे लागि गेलाह। हिनक दुइ गोट सेनापति छलथिन-केतका करोड़ी आ रामा नामक ब्राह्मण । एहि दूनूकेँ संग लऽ ई अपन विशाल वाहिनीक संग धनौजाक मैदानमे युद्ध कयलनि तथा मिथिलामे शान्ति ओ सुव्यवस्था स्थापित कयलनि। हिनक वीरता ओ लोककल्याणक भावनाक कारणे परवर्तीकालमे हिनक पूजाक परम्परा बनल आ कतोक ठाम हिनक गहबर, मन्दिर आदिक सेहो निर्माण भेल । संभवतः ई मिथिलाक इतिहासक अंधकार युगक कोनो वीर पुरुष होथि, से एहि लोकश्रुतिसँ विज्ञात होइत अछि । भऽ सकैछ जे बादमे मिथकीय देवताक रूपमे ई मान्य भऽ गेल होथि ।

एहि लोकदेवताक वार्षिक पूजा चैत सुदी पड़िवा दिन होइत छनि । हिनक मूर्त्तिक संकल्पना विष्णुक चतुर्भुज स्वरूपक छनि जनिक एक हाथमे ध्वज, दोसरमे मशाल, तेसरमे तीरधनुष विराजमान रहैत छनि । चारिम हाथ आशीर्वादी मुद्रामे रहैत छनि । हिनक कानमे कुण्डल, हाथमे बाला ओ माथ पर मुकुट रहैत छनि । ई पीत वस्त्र धारण करैत छथि आ जनऊ पहिरने रहैत छथि । बाघ हिनक सवारी छनि । प्रसादक रूपमे हिनका गाँजा, पान, सिरनी, केरा आदि चढ़ाओल जाइत छनि । कतहु-कतहु हिनक सेनापति केतका करोड़ीकेँ बलि सेहो प्रदान कयल जाइत छैक । हिनक पूजाक अवसर पर छकबाह एके साँसमे पर्याप्त दूध पीबैत देखल जाइत अछि । जनरिया लोकनिकेँ अगबे दूधमे बनाओल तसमइ भोजन कराओल जाइत छनि । भगत आ डलवाह हिनक पूजाक मुख्य आकर्षण होइत छथि । भगत अपन देह पर एहि देवताक आवाहन करैत छथि आ आवाहन भेलाक बाद कारणी सभकेँ

फूल-अक्षत प्रदान कऽ ओकर मनोभिलाषा पूर्ण होयबाक वचन दैत छथि । डलवाह हाथमे फूल-अक्षतक डाली रखने भगतक अनुगमन करैत रहैत छथि। मनरियाक समूह मृदंगक संग भगतक चारू कात नचैत, गीत गबैत रहैत छथि।

बेनीरामक पूजा आरम्भ करबा काल किंवा लोकगाथाक गायन करबासँ पूर्व जे सुमिरन गीत गाओल जाइत अछि तकर स्वरूप एहि प्रकारक अछि–

सुमिरन सुमिरन सुमिरन करै छी
सुमिरन करै छी हे पञ्चन निरंजन भगवान के हो
प्रथम सुमिरन गे मैया माता सरोसत्ती के
रहिहऽ माता कण्ठ असवार हे
सुतले अधरबा मैया कण्ठ मोर बसिहऽ हे
दिहऽ माता वेद के बखान हे
दोसरे सुमिरन गे मैया पिता के चरणियाँ हे
जिनका बून से लेलहुँ हम जनम हे
आरो हम सुमिरी हो पंचन माता के चरणियाँ हे
जिनका ओद्र लेल अवतार हे
आरो हम सुमिरी हे मैया चम्पा बेटी दगरिन हे
जे कयलनि सोइरी प्रतिपाल हे
आरो हम सुमिरी हो भगवान बुढ़िया बकरिया हे
जिनकर दूध सोइरीमे आधार हे
आरो हम सुमिरी गे मैया गुरु के चरणियाँ हे
जिनकर गुण गाबय संसार हे
आरो हम सुमिरी हो पंचन माता भगवत्ती हे
रहु मैया सेवक पर सवार हे
आरो हम सुमिरी गे मैया गुरु गोरखनाथ हे
जिनकर गुणमा गाबय संसार हे
ओझा-गुणी बन्हलौं गे मैया, डाइन घर बन्हलौं हे
दैवा मोर मूसक असवार हे
आरो हम बन्हलियै गे मैया तेली घर मसान हे
जिनकर तेल जरय संसार हे

बेनीरामसँ सम्बन्धित जाहि लोकगाथाक गायन लोकजगतमे होइत अछि तकर स्वरूप ग्राम धनहर-प्रखण्ड-वारिसनगर (समस्तीपुर) निवासी वेदो

ठाकुरसँ प्राप्त भेल अछि जकर आधार पर हुनकासँ सम्बन्धित कथाक स्वरूप ई थिक–

राज परौलीमे लेखा ठाकुर नामक एक गोट नाउ रहै छला । ओ अत्यन्त धर्मात्मा प्रकृतिक छला । नित उठि दिनकर-दीनानाथकेँ अर्घ देथि आ छप्पनो कोटि देवताक पूजा करथि । तकर बादे ई अन्न-जल ग्रहण करथि । हिनक भक्तिक प्रसार सौंसे सुरपुर-नरपुरमे होइत गेल।

एक बेर लेखा ठाकुरक मोनमे ई अभिलाषा जगलनि जे ओ गुरुमुख भऽ जाथि, कारण जे लोक गुरुमुख नहि होइत छथि हुनका मोक्ष नहि भेटैत छनि आ बेर-बेर मृत्युभुवनमे आबऽ पड़ैत छनि । एहन लोक जन्म-मरणक चक्करमे पड़ल कष्ट कटैत रहैत छथि ! लेखा ठाकुर इन्दर कविलास कऽ यात्रा कऽ देलनि ।

घड़िएक चलल हो लेखा ठाकुर
पहर पयरा बितलै हो
चलि देलऽ इन्दर कविलास हो ।

इन्दर कविलासमे लेखा ठाकुर विश्वकर्माजीसँ भेंट कयलनि आ हुनका अपन गुरु बनबाक कृपा करऽ कहलथिन । मुदा विश्वकर्माजीकेँ बूझल छलनि जे लेखा ठाकुर स्वयं भगवानक अंश छथि, महान धर्मात्मा छथि, तेँ ओ हुनका अपन शिष्य बनायब उचित नहि बुझलनि । तथापि लेखा ठाकुरक हठ पर ओ हुनका अपन शिष्यमंडलीमे शामिल कऽ लेलथिन आ अपन भंडार घरक रखबार नियुक्त कऽ लेलथिन । लेखा ठाकुर पूजा-पाठ ओ गुरुभक्तिमे समय बितबऽ लगला ।

एक समय इन्द्रासनमे विष्णु यज्ञक आयोजन भेल । ओहि यज्ञमे समिधा जुटयबाक हेतु एक गोट नाउक आवश्यकता छल । देवतालोकनि लेखा ठाकुरकेँ नाउ होयबाक कारणे ओहि यज्ञमे नियुक्त करऽ चाहै छला, मुदा सूर्यदेव लेखा ठाकुरक अविवाहित होयबाक कारणे आपत्ति कऽ देलथिन । अविवाहित नाउक जुटाओल समिधासँ यज्ञक सफलता बाधित होइत, तेँ ई निश्चय भेल जे लेखा ठाकुरक विवाहक व्यवस्था कराओल जाय । एकर भार सूर्यदेवहिकेँ देल गेलनि ।

ताहि समय मयना-महपुरामे हेमनचन नामक एकटा करोड़ी छल । एहि करोड़ीकेँ एकटा बेटी छलै । ओकर नाम गोधन छलै । ओ बड़ सतवरती छलि । नित्य ओ निरंजन भगवानक पूजा करथि आ तितले अँचरे सूर्यकेँ अर्घ देथि, विधिपूर्वक महादेवक पूजा करथि । हिनक भक्ति देखि हेमनचन राउत

हिनका लेल एकटा अलगे शिव मन्दिर बनबा देने छलथिन आ मन्दिरक चारू कात कपड़कोट लगा देने छलथिन जाहिसँ पूजा काल केओ हुनक अङ्ग पर दृष्टि नहि दऽ सकनि । अङनहिमे कुइआ खुनाओल छल जाहि पर गोधन स्नानादि करै छली । करोड़ीक घुमक्कड़ वृत्तिक कारणे हेमनचनकेँ बेसी काल घरसँ दूरहि रहऽ पड़ैत छलनि । तेँ ओ अपन बेटीक सतीत्वक रक्षाक हेतु सदति चिन्तित रहथि । अपन बेटीकेँ ओ नित्य धर्मक पलड़ा पर जाञ्च करथि आ हुनक ओजन मात्र एक अड़हुलक फूलक बरोबरि पाबि आश्वस्त भेल करथि ।

समय बीतैत गेल । गोधन सती युवावस्थाकेँ प्राप्त कऽ गेल छली। माता-पिताकेँ अपन बिआहक प्रति सकांछ नहि देखि एक दिन गोधन सती शिवसँ प्रार्थना कयलनि–'हे देवाधिदेव महादेव ! अहाँक भक्ति करैत-करैत युग बीति गेल । की एहि सतयुगमे हमरा लेल सामीक अवतारे नहि भेल अछि।' गोधन सतीक प्रार्थना सुनि महादेव प्रकट भऽ हुनका अपन योग्य स्वामी मङबाक आज्ञा देलथिन । सती गोधन हुनका कहलथिन–'हमरा जेहन-तेहन वर नहि चाही । हमरा तँ चाही भक्त आ सतबरता वर आ से एखनुका युगमे लेखाठाकुरेटा भऽ सकैत छथि । ओ इन्द्रक दरबारमे विश्वकर्माक रखबार छथि । हुनकेसँ हमर बिआह कराओल जाय ।' गोधन सतीक वचन सूनि शिव लगले जोगीक रूप धारण कऽ विश्वकर्मा लग जा जुमला । विश्वकर्मा जोगी शिवकेँ चीन्हि डेरा गेला । ओ मनमे विचारलनि जे हमरासँ कोन एहन घटी-कुधटी भऽ गेल जे शिवकेँ कैलाश वास छोड़ि हमरा लग आबऽ पड़लनि । ओ शिवक अयबाक कारण पुछलथिन । मुदा शिव सत्त करौने बिना किछु कहबाक हेतु तैयार नहि भेलथिन । एक सत्त दोसर सत्त तेसर सत्त जे नहि करे अस्सी कुण्ड नरकमे पड़े ।

सत्त भेलाक बाद शिव गोधन सतीक संग विवाह करयबाक हेतु विश्वकर्मासँ हुनक शिष्य लेखा ठाकुरक माङ कऽ बैसलथिन । लेखा ठाकुर अपन गुरुक चरण छोड़ि सांसारिक मायामे लेपटाय नहि चाहैत छलाह । मुदा गुरु वचनबद्ध भऽ गेल छलथिन । तेँ गुरुक आज्ञा पाबि ओ शिवक संग जयबाक हेतु बाध्य भऽ गेलाह । शिव हुनका लऽ कऽ कैलाश दिसि चलि देलनि ।

रस्तामे शिव लेखाठाकुरकेँ कहलथिन–हमर भक्तिन गोधन सती विवाहक हेतु अहींकेँ टेबने छथि । जँ अहाँ हुनका संग विवाह नहि करबनि तँ ओ प्राण हति लेतीह आ अहाँकेँ तिरिया वधक पाप लागत । तिरिया

वधक पाप सात गोहत्याक पापक बरोबरि होइत छैक । तँ नीक जे अहाँ हुनका संग विवाह कऽ ली । लेखाठाकुर हुनक बात मानि लैत छथिन आ अपन धर्मक छूरा आ चमौटी तथा अयनाकेँ जुगता कऽ राखि लैत छथि ।

ओम्हर गोधन सती शिवक मन्दिर पर निशि भाग रातिमे ठोहि पाड़ि कऽ कानि रहल छलीह । हुनक कानब सुनि सुरपुर-नरपुर आ इन्दर कविलास पर्यन्त डोलऽ लागल । संसारक सभटा जीवा-जन्तु करुणा करऽ लागल । ताही समय शिव लेखाठाकुरकेँ लऽ कऽ गोधन सती लग पहुँचलाह आ हुनका कहलथिन-'हे सती, अहाँ जनिका लय रोदना पसारने छी, तनिका हम लऽ अनलहुँ । आब अहाँ दूनू गोटे विआह कऽ लिअऽ जाहिसँ अहाँक मनोरथ पूर्ण हो ।

गोधन सती लेखा ठाकुरकेँ किछु काल धरि देखिते रहि गेलीह । पछाति ओ हुनक सतक परीक्षा लेबाक हेतु हुनका पर कतेको जादू चलौलनि। मुदा लेखाठाकुर पर कोनो असरि नहि पड़लनि । एम्हर लेखाठाकुर एहि असमञ्जसमे छलाह जे हम नाउ कुलक सन्तान छी, एहि करोड़ी कुलक कन्या सँ विवाह करी तँ कोना करी । ताही घड़ी गोधन सती समधानि कऽ एकटा जादू चला देलथिन जाहिसँ लेखाठाकुर विचलित भऽ गेलाह । हुनक छूरा गोधन सतीक माङ पर खसि पड़लनि आ माङक बीचोबीच सोनितक धार बहऽ लगलनि जेना सेनूर कयल गेल हो आ एही तरहें गोधन सतीक सिन्दूरदान सम्पन्न भऽ विवाह भऽ गेलनि ।

विवाहक बाद लेखाठाकुर गोधन सतीकेँ अपन घर राज परौल लऽ जाइत छथिन । ओहि ठाम जुमला पर गोधन सती देखैत छथि जे हुनक सासुर मे दूरा पर चनन्नक गाछ छनि, ओहि गाछ पर मयूर आ कोइली सबद करैत रहैत छनि । हुनक सासु आन्हरि छथिन आ दूरा पर बैसि कऽ हुक्का पिबैत समय बितबैत छथिन । सासु ओ पतिक सेवा करैत गोधनक समय बितैत चल जाइत छनि । समय पाबि गोधन गर्भवती भऽ जाइत छथि ।

किछु समयक उपरान्त लेखाठाकुर राज मोरंग कऽ विदा होइत छथि। हुनका जसिया-बसिया नामक दुइ गोट धामि (जादूगरनी) बजओने छथिन। दूनू लेखाठाकुर पर जोर आजमाइस कऽ हुनका अपन वशमे करऽ चाहैत छली । लेखा ठाकुर सात दिन सात राति धरि लगातार चलैत रहलाक बाद मोरंग राज

जा जूमैत छथि । हुनका आयल बुझि जसिया-बसिया सोलहो शृङ्गार कऽ, बत्तीसो अभरन पहीरि, चीर-चोली झमकाबैत लेखाठाकुर लग पहुँचैत छथि । लेखाठाकुर आ जसिया-बसियाक बीच जादूक युद्ध चलैत अछि । जसिया-बसियाक जादूकेँ लेखाठाकुर नष्ट करैत रहैत छथि । जसिया-बसिया अगिनवाण चला दैत अछि । लेखा ठाकुर गुरुक सुमिरन कऽ ओहि अगिनवाणकेँ नष्ट कऽ दैत छथि । एहि क्रममे एक बेर ओ गुरुक अरधाना करब बिसरि जाइत छथि । सावधान जसिया-बसिया एही बीच हुनका पर सिकिया वाण चला दैत अछि । लेखाठाकुर विचलित भऽ जाइत छथि। जादूक प्रभावसँ ओ सुग्गामे बदलि जाइत छथि । जसिया-बसिया हुनका चट पिजड़ामे बन्न कऽ लैत अछि आ सात हाथ धरती तरमे ओहि पिजड़ाकेँ गाड़ि ओहि पर अस्सी मनक पाथर धऽ दैत अछि । ऊपरसँ ओ हरौती बीट-बाँस रोपि दैत अछि । लेखा ठाकुर जसिया-बसियाक बनिसारमे पड़ि जाइत छथि।

एम्हर गोधन सतीक गर्भ जखन देखार भऽ जाइत छनि, तखन पतिक परोक्ष रहबाक कारणे लोक हुनक गर्भकेँ शक-सुबहाक दृष्टिऐ देखऽ लगैत छनि । गाम-घरक लोक तँ सहजहिँ, एतऽ धरि जे हुनक सासुओ-ननदि हुनका पर आङुर उठाबऽ लगैत छथिन आ ताना मारैत रहैत छथिन । गोधन एहि दुःखक समयकेँ बड़ धैर्यपूर्वक कटैत रहैत छथि ।

नवम मास पूर भेलाक बाद गोधन सतीक गर्भसँ एकटा बालकक जन्म होइत छैक । ओ नेना अद्भुत प्रकृतिक रहैत छैक आ सोइरीए घरमे मायसँ जबाब-सवाल करऽ लगैत छैक । ओ गोधन सतीसँ अपन पिताक हालचाल पूछऽ चाहैत अछि मुदा जखन गोधन सती लेखा ठाकुरक मादे किछु नहि जना पबैत छथिन तँ ओ माइक कोरसँ उछटि जाइत अछि, दूध पीब बन्न कऽ दैत छैक आ कहि उठैत अछि-

गोदिओ ने खेलबौ गे मैया
दूधो नहि पीबौ
जल्दी बता दे पिता के उदेस

गोधन एहि अद्भुत बालकक किरदानीसँ आतंकित भऽ उठैत छथि। हुनका होइत छनि जे ई नेना कोनो भूत-दूत थिक की राक्षस-पिशाच, जे जनमिते पिताक उदेस जानऽ चाहैत अछि । एखन ई नेना अछि । एकर पिता जादूगरनीक जंजालमे पड़ल छथिन । जँ एकरा कहि देबै तँ इहो ने कदाचित् ओहि जंजालमे पड़ि जाय । ताहि ममतासँ ओ किछु नै कहैत छथिन ।

सती गोधन नेनाक भाग-सोहाग जनबाक लेल अपन पुरोहित कारे पंडितकेँ बजयबाक हेतु झिभना खबासकेँ पठबैत छथि । कारे पंडित लेखा ठाकुरक ओहिठाम पुत्र जन्मक खबरि सुनैत देरी पुरना-नवका पतरा लऽ कऽ लगले अपन यजमानक ओतऽ जा जूमैत छथि । हुनका एहि शुभ अवसर पर बेस दान-प्रदान भेटबाक आशा छलनि । ओ पोथी-पतरा उचारि गोधन सतीकेँ कहैत छथिन जे अहाँक बालक साधारण बालक नहि अछि । ई तँ अवतार थिक । एकर नाम बेनीराम राखल जाय । ई वीर होयत । ई सौंसे संसारक लोकक भलाइमे लागल रहत । दुष्ट सभकेँ ई नाश कऽ देत । हिनका सँ डेरयबाक कोनो गप्प नहि । देवताक अंश होयबाक कारणे सोइरीए घरसँ बाजन शुरू कऽ देलनि अछि । गोधन सती नेनाक भोग-लक्षण नीक जानि प्रसन्न भेलीह । ओ सवा हाथ धरती नीपि, करिया कम्बल ओछा ओहि पर पंडितजीकेँ बैसौलनि आ बेनीरामकेँ निहुँछि कऽ बेस दान-प्रदान कयलनि । पंडितजी प्रसन्न होइत घर घुरलाह ।

एमहर बाबा बेनीराम जखन अपन पिताक सम्बन्धमे नित्य खोध -बेध करऽ लगलाह तँ गोधन सती सोचलनि जे नगरक आइ-माइ सभ हमर बेटा पर उदमति चढ़ा देलक अछि । बेनीराम मायकेँ आश्वस्त करैत कहलथिन-'हे माय, हम एक जन्म अहाँक पुत्र भऽ कऽ जन्म लेलहुँ तँ अहाँ हमरा अपन पुत्रटा बुझैत छी । मुदा अहाँकेँ ई नहि बूझल अछि जे हम के छी-

मिथिलामे जन्म लेलियै
अयोध्यामे ठाढ़ भेलियै
कंस मारि केलियै खरिहान
काली दहमे नाग नथलियै
नाम पड़ल कृष्ण भगवान
यमुना तट घटवारी केलियै
नाम पड़लै श्रीनन्दलाल
बाल गोआलिनके दही छीनि खेलियै
लोक कहय नटवर गोपाल

बेनीरामक ई परिचय पाबि सती गोधन अपन पुत्रक अंशावतारक बात बूझि सकदम्म रहि गेलीह । आब हुनका ई जनाबऽमे कोनो भाङठ नहि रहलनि जे बेनीरामक पिता राज मोरंगमे जसिया-बसियाक बनिसारमे पड़ल छथिन ।

पिताक बनिसारक बात सुनैत देरी बेनीरामक तरबाक लहरि मगज पर चढ़ि जाइत छनि । ओ मोरंग जयबाक हेतु ठानि लैत छथि । मोरंगमे संग चलबाक हेतु ओ अपन संगी कारे पंडितक पुत्र झटहा पंडितकेँ बजा अनैत छथि । दुनू मित्र प्रस्थानक तैयारी करैत छथि ।

दूनू मित्रकेँ यात्राक सवारीक हेतु घोड़ा आवश्यक बुझना जाइत छनि। हुनक घोड़ाक नाम छल हंसराज । हंसराज बेनीरामक अवतारसँ पूर्वहिसँ मर्त्यलोकमे पड़ल अपन असवारक बाट ताकि रहल छल । बारह वर्ष बीति चुकल छलैक मुदा ओकर असवार आयले नहि छलैक । परिणाम ई भेल छलैक जे ओ असक्क भऽ गेल छल । ओकर चारू नालक भीतर पीलु फाड़ि गेल छलैक । माता गोधन सती हंसराजक चुमान चँगेरीमे हड़दि, दूभि, अरबा चाउर आदि साँठि कऽ करबाक हेतु तत्पर भेलीह । ताहिसँ पूर्व ओ हंसराजक चारू नालक पीलु सभकेँ कुसक डेफासँ झाड़ि देलथिन आ सुतनीक झाँझसँ ओकर सौंसे देह रगड़ि ओकरा सरयू नदीमे स्नान करा देलथिन । घोड़ा रन-रन करऽ लागल । बेनीराम आ झटहा पंडित ओहिपर सवार भऽ मोरंग राज कऽ चलि देलनि । माय गोधन हुनक अभियानक सफलताक कामना करैत आशीर्वाद देलथिन-**मारने ने मरबय रे बेनीराम, काटने ने कटबय रे, बजर हेतउ तोहर गात रे ।**

जखन हंसराज घोड़ा पर असवार चढ़ि गेल, तखन तँ जेना घोड़ाकेँ पाँखि लागि गेल होइक-**तर छोड़य धरती, ऊपर आसमान, बीचे-बीचे घोड़ा करैये पयान** । से घड़िएक चलल हो बेनीराम पहर पयरा बितलऽ हो, जूमि गेल मोरंग राज हो ।

मोरंग राजक सिमान पर उतरि बेनीराम एकटा मोटगर चनन बिरीछमे घोड़ाकेँ बान्हि देलनि । दुनू मित्र आतहि विश्रामक जोगाड़ करऽ लगलाह । झटहा पंडितकेँ ओहि जङ्लाह क्षेत्रमे बाघ-सापक डर भेलैक, तँ ओ एकटा गाछ पर चढ़ि गेल आ बेनीराम नीचेमे धूनी रमा कऽ निरञ्जन भगवानक भजनमे लागि गेलाह ।

ओहि जंगलमे जसिया-बसियाक पोसल सात सय बाघिन पहरा दैत छल । ओ सभ जखन बेनीराम आ झटहा पंडितकेँ देखलक तँ अति प्रसन्न

भेल । ओकरा सभकेँ ई बूझि पड़लैक जे बारह वर्षसँ एहि जंगलमे रहलाक बादो कहियो कोनो शिकार नहि भेटल मुदा आइ दू-दूटा शिकार अभरल अछि! ओ सभ खूब प्रसन्न भेल आ बेनीरामक आसन दिस चलि पड़ल । बाघ सभकेँ देखि बेनीराम छगुन्तामे पड़ि गेलाह । मुदा छलाह तँ बलवान ! बेरा-बेरी सभटा बाघकेँ पकड़ने जाथि आ कुशक डेफसँ ओकरा सभकेँ नथने जाथि । सातो सय बाघक नथा गेलासँ ओहि जंगलक सभटा बाघिन अपनाकेँ राँड़-मसोमात बूझऽ लागल । बेनीरामक वीरता देखि एकटा लुल्ही बाघिन आ एकटा कनाह बाघ पड़ाकऽ जसिया-बसिया लग पहुँचल आ सभटा बाघक मारल जयबाक वृत्तान्त कहलकैक ।

जसिया-बसिया चौदह सय जादूक पुड़िया जूड़ामे बान्हि, चौदह सय खोइंछामे लटकाय, किछु पिपनी पर तँ किछु सितुहा सन-सन दाँतमे राखि बेनीरामक वासा पर चलि दैत अछि आ बेनीराम पर जादूक वर्षा करऽ लगैत अछि । मुदा बेनीराम पर ओकरा सभक जादूक कोनो असरि नहि होइत छनि। तथापि जसिया-बसियाक आजमाइस चलिते रहैत छैक । एक बेर बेनीराम विचलित भऽ जाइत छथि । जसिया-बसिया अपन जादूक बलें हुनका पाथरक मूरुतमे बदलि दैत छनि । सौंसे दुनिआमे हाहाकार मचि जाइत अछि ।

बेनीरामक पाथर बनि गेने तथा लेखाठाकुरक बनिसार पड़ि गेने गोधन सती पर जेना विपत्तिक पहाड़ टूटि पड़ैत छनि । ओ करुणा करैत जीवन-यापन करऽ लगैत छथि । माइक करुणासँ द्रवीभूत बेनीराम पाथरक रूप त्यागि जसिया-बसिया पर आक्रमण करैत छथि आ हुनका हाथें दूनू जादूगरनी बहिनिक हत्या भऽ जाइत छैक ।

तकर बाद बेनीराम हड़ौती बीट बाँस उखारि, धरती कोड़ि, धरतीक तरसँ सुग्गा बनल अपन पिताकेँ बनिसारसँ छोड़बैत छथि । पिता-पुत्रक मिलन होइत अछि आ दुनू परौली राज कऽ विदा होइत छथि ।

परौली राज घुरलाक बाद दुनू पिता-पुत्र यजमनिका कमाय लगलाह। एहिसँ जे अन्न-द्रव्यादि भेटैत छलनि, ताहीसँ परिवारक गुजर चलऽ लगलनि।

एक बेर जितनी नामक एक गोट धनिकाइन तेलिन अपन पोंताक जगमूड़न ठनलनि । कतोक देवे-सेवे प्राप्त भेल ओहि पोंताक जगमूड़नक अवसर पर दीनानाथक पूजाक आयोजन छलैक । मुदा कोनो भगतीया दीनानाथकेँ अर्घ देबामे आ छाँकी लगयबामे समर्थ नहि भऽ सकल । एतऽ धरि जे पूजा ढारबाक हेतु ओहि समयक नामी-गिरामी भगतलोकनि बजाओल गेल छलाह यथा—कारिख महाराज, भुइञा महाराज, गणीनाथ गोविन्द आदि । एहि भगता सभ पर मोहरी नामक एक गोट चमैनि अपन तन्त्रक प्रयोग कऽ दैत छलीह आ ई सभ बेहोश भऽ जाइत छलाह । चमैनि हिनका सभकेँ बनिसार दऽ दैत छल । एहि तरहेँ ओ ओहि समयक हजारो भगतकेँ अपन बनिसारमे बन्द कयने छल । अन्ततः केश मुड़बामे बाधा देखि बेनीराम मोहरी पर अपन जादू चला ओकर सभटा जादू नष्ट कऽ देलनि आ सभटा भगतकेँ ओकर बनिसारसँ आजाद करा देलथिन । हिनक जय-जयकार होमऽ लागल। जितनीक पोंताक जगमूड़न भलैक, बेनीराम अपनेसँ दीनानाथकेँ अर्घ देलनि आ छाँकी ढारलनि । सौंसे संसारमे हिनक नाम-यश पसरि गेलनि। जितनी प्रसन्न भऽ हिनका पैघ जमीन्दारी प्रदान कयलकनि ।

तकर बादसँ बेनीराम प्रसिद्ध भगतक रूपमे जतऽ-ततऽ दीनानाथक पूजामे बजाओल जाथि ।

एक समय धानसिंह आ मानसिंह नामक राजा राज पगौल पर चढ़ाइ कऽ देलक आ हजारो गाय-गोरूकेँ कटबा देलक । गोहत्याक एहि कृत्यसँ हाहाकार मचि गेल । बेनीरामकेँ जानकारी भेटलनि । ओ मन्त्र पढ़ि सभटा गाय-गोरू पर गंगाजल छीटि देलनि । सभ पहिने जकाँ जीवित भऽ उठल । तहियासँ गाय-गोरूक अस्वस्थ भेला पर बेनीरामकेँ गाय-गोहारिक हेतु सेहो बजाओल जाय लगलनि आ ओ गाय-गोरूक कष्टहरण करऽ लगलाह !

एहिना एक बेर बेनीरामकेँ बाट पर एकटा अबला पर नजरि पड़लनि। ओ हबोढकार भऽ कानि रहल छली । कारण पुछला पर ओ जनौलथिन जे हुनक गौनाक बारह वर्ष भऽ गेल छलनि मुदा एकोटा सखा-पात नहि भेल छलनि । तेँ सासु हुनका मारैत छलथिन आ ननदि ठुनकाबैत रहैत छलथिन । बेनीराम हुनक दुर्दशा पर पसीझि हुनको पर कृपा कयलथिन । बेनीरामक कृपासँ ओहि अबलाक आञ्चर फूजि गेलैक । तहियासँ ओकर वंशज बेनीरामकेँ पूजा देबऽ लगलैक ।

एहिना एक बेर बेनीरामकेँ एकटा एहन स्त्रीसँ भेट भेलनि जकर बच्चा मरि गेल छलैक । बेनीरामक उपचारसँ बच्चा राम-राम कऽ उठि गेलैक।

एहि तरहें बालक-गोहारि, तिरिया-गोहारि, गाय-गोहारिक माध्यमे जनसामान्यक कल्याणमे लागल बेनीरामक जीवन बीतैत गेलनि ।

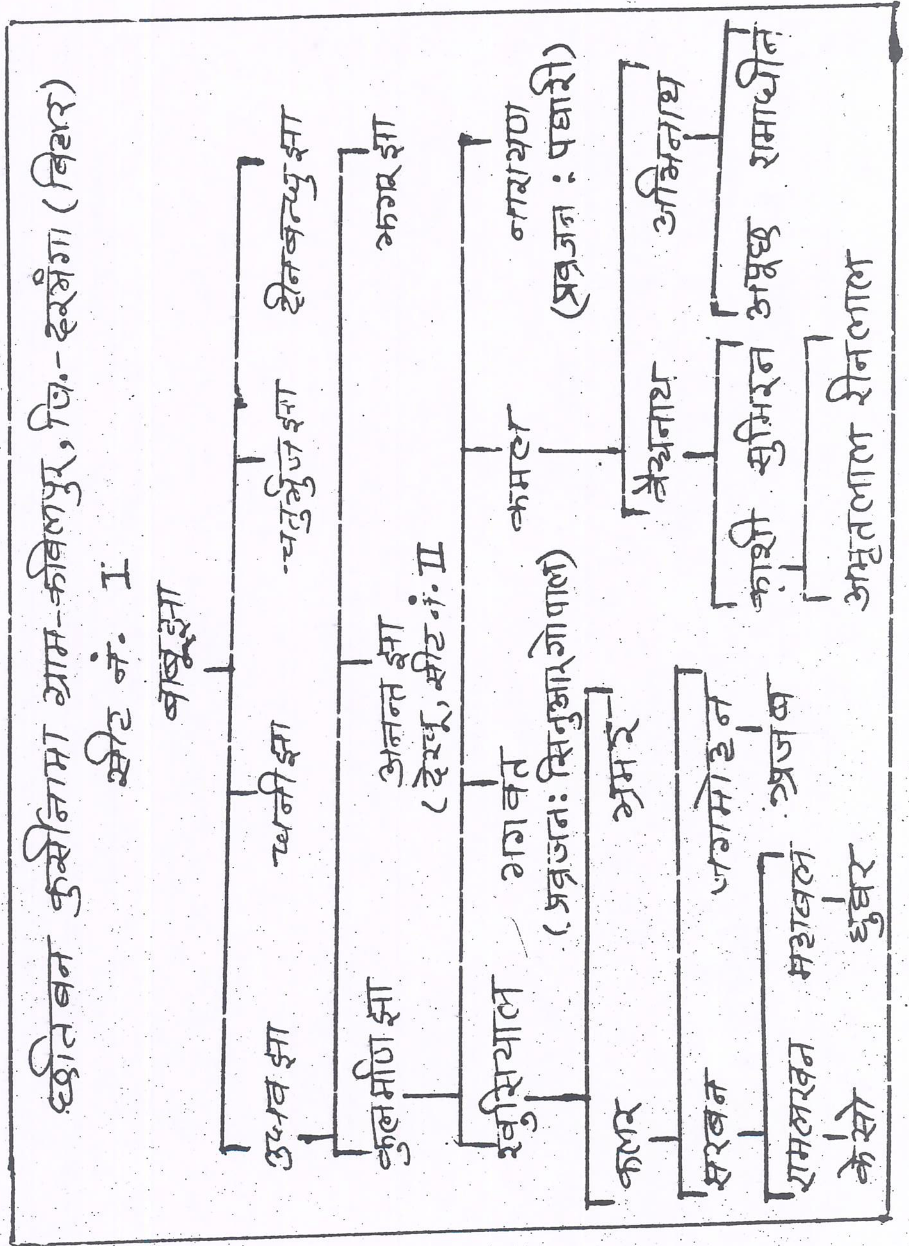
एक बेर राज परौलीक राजा अपन बेटीक विआहक बाद पुतोहुक गौना करबऽ चाहैत छलाह । गौनासँ पूर्व दिन मनयबाक पत्र लऽ बेनीरामकेँ समधिकेँ दऽ अयबाक हेतु पठौलथिन । बेनीराम जंगल दऽ कऽ जा रहल छलाह । जसिया-बसियाक पोसल लुल्ही बाघिन आ कनहा बाघकेँ मौका हाथ लागि गेलैक । ओ हिनका तोड़ि देलक ।

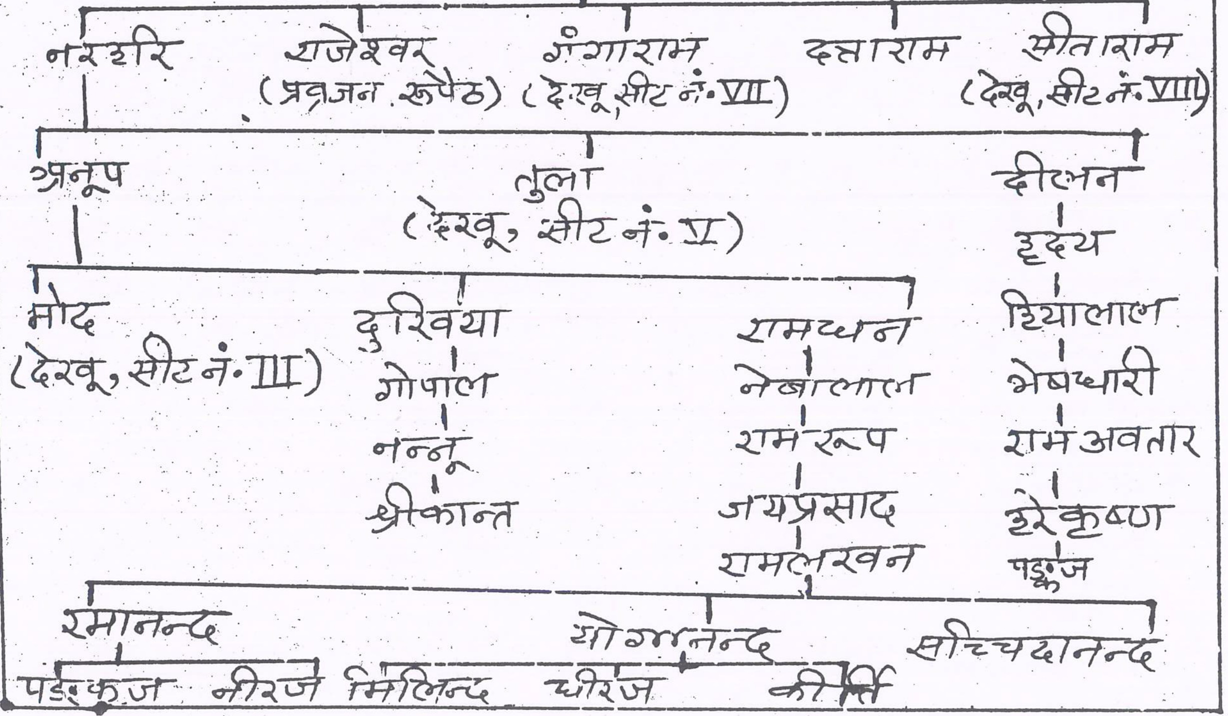
बेनीरामक लहास जंगलमे पड़ल छल । एकटा करोड़ी जंगलमे घुमैत-घामैत हिनका लहासकेँ देखलक । ओहि समयमे कनौजिया नाउ सभक एकटा बरियाती जा रहल छलैक । करोड़ी ओहि बरियाती सभकेँ बेनीरामक लहासकेँ गति प्रदान करबाक हेतु कहलकैक । मुदा कोनो नाउ एहि हेतु तत्पर नहि भेल ! तखन ओ करोड़ी बेनीरामक घर पर समाद देलकैक । समाद सुनि गोधन सती करुणा करऽ लगलीह । अवधिया नाउ सभ जाय बेनीरामक संस्कार कयलक ।

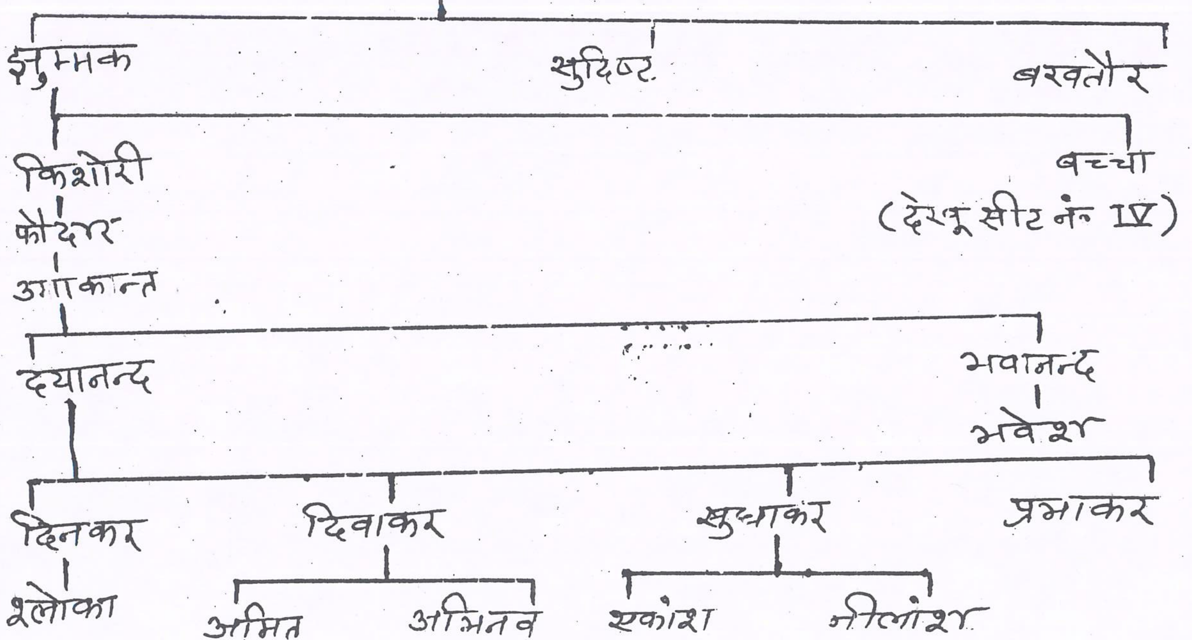
मुदा लोकश्रुति अछि जे संस्कारक बाद जे भोज आयोजित भेलैक ताहिमे बेनीरामकेँ सदेह उपस्थित भऽ पात-भात परसैत देखल गेलनि आ तहियेसँ ओ नाउ आ करोड़ी जातिमे देवताक रूपमे पूजित छथि । हुनक पूजासँ लोककेँ कल्याण होइत रहलैक अछि, एहन विश्वास छैक ।

एहि तरहें बेनीरामक कथामे लोकतत्त्वक संगहि अनेक ऐतिहासिक ओ सांस्कृतिक पक्षक निदर्शन भेटैत अछि । एहि गाथामे मिथिलाक सांस्कृतिक पक्षक गुरुमुख होयबाक अनिवार्यता, यज्ञादिमे नाउ जातिक अनिवार्यता, पुत्र जन्मक अवसर पर पसारी तर्कक उपयोगिता, लोकदेवतामे पौराणिक देवी-देवताक आरोप आदि अनेक तथ्यक उल्लेख भेटैत अछि । ऐतिहासिक दृष्टिसँ ई लोकगाथा बौद्धोत्तरकालीन मिथिलाक गाथा बुझना जाइछ जाहिमे लोकजीवन जादू-टोना आदिसँ ग्रस्त छल, आडम्बर ओ अंधविश्वास लोकजीवनक अंग बनि गेल छलैक । तथापि एकर लोकपक्ष अत्यन्त सबल छैक आ बेनीरांम मिथिलाक प्रमुख जातीय लोकदेवता रूपमे समादृत छथि ।






छोतिबन कुर्सीनामा, ग्राम- कबिलपुर, जि.- दरभंगा (बिहार)
सीट नं. II
अनन्त झा
नरहरि
राजेश्वर
(प्रव्रजन ज्येष्ठ)
गंगाराम
(देखू, सीट नं. VII)
दत्ताराम
सीताराम
(देखू, सीट नं. VIII)
अनूप
तुला
(देखू, सीट नं. V)
दीलन
हृदय
मोद
(देखू, सीट नं. III)
दुखिया
गोपाल
नन्नू
श्रीकान्त
रामधन
नेबालाल
राम रूप
जयप्रसाद
रामलखन
हियालाल
भेषधारी
राम अवतार
हरेकृष्ण
पङ्कज
रमानन्द
योगानन्द
सच्चिदानन्द
पङ्कज
नीरज
मिलिन्द
धीरज
कीर्ति


छोतिबन कुर्सीनामा ग्राम- कबिलपुर, जिला- दरभंगा (बिहार)
सीट नं. III
मोद झा
झुम्मक
सुदिष्ट
बखतौर
किशोरी
बच्चा
(देखू सीट नं. IV)
फौदार
उमाकान्त
दयानन्द
भवानन्द
भवेश
दिनकर
दिवाकर
सुधाकर
प्रभाकर
श्लोका
अमित
अभिनव
एकांश
नीलांश

छतिबन कुसीनामा ग्राम- कबिलपुर, जिला- दरभंगा (बिहार)
सीट नं. IV

- बच्चा झा
  - मोहन
    - सूर्यकान्त
      - नन्दकुमार
        - दीपक
        - चन्दन.
      - मदन
        - निशान्त
      - अश्विनी
        - अमित
  - मकरवन
    - रमाकान्त
      - शिवशंकर
        - रणजीत
          - गुन्जन
      - राजकुमार
        - संजीत
          - मानव
          - गन्धर्व
        - राकेश
          - जित्वर
          - वेदान्त
        - प्रशान्त
  - सिलाई
    - परमानन्द
      - रमण
    - हेरराम
      - सुमन
      - पवन

छतिबन कुसीनामा ग्राम- कबिलपुर, जि. -दरभंगा (बिहार)
सीट नं. V

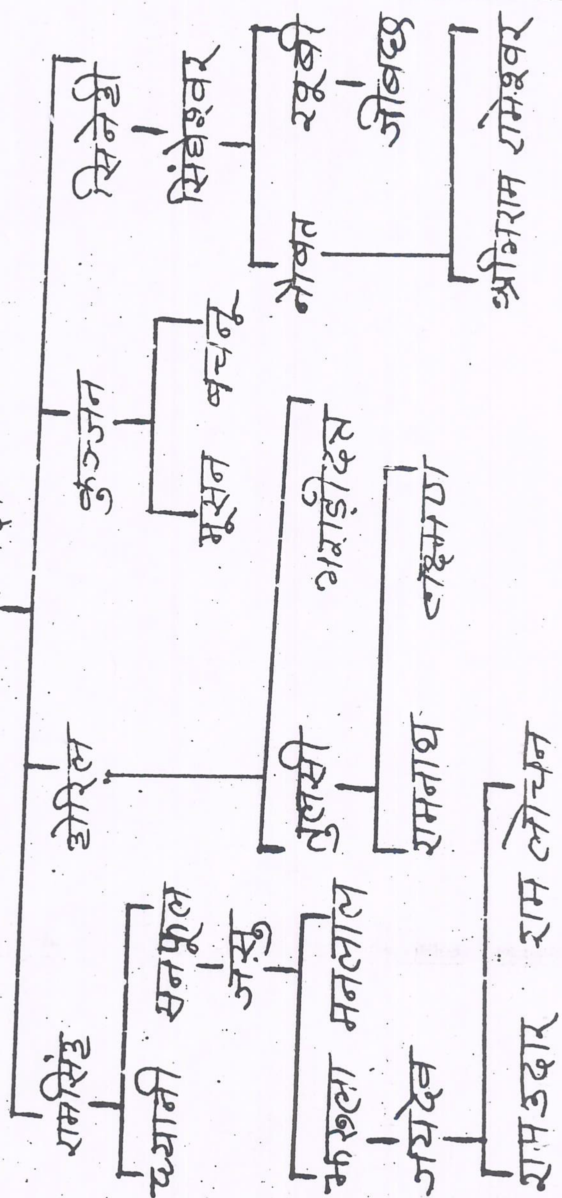
- तुला झा
  - बोतल
    - रघुवीर
      - आनन्दी
        - जनक
          - शत्रुघ्न
            - महानन्द
              - आशीष
              - अविनाश
    - रामबकस
      - मनलाल
        - सुकुमार
          - रामअशीष
            - नागेश्वर
              - विवेक
                - आशीष
              - शंकर
                - अनीश
          - रामस्वरूप
            - अमलेश
              - दुर्गानन्द
          - रामनन्दन
            - केदार
              - संजय
            - नारायण
            - रमेश
            - अशोक
              - जयनिशान्त
          - रामयाद
            - सरोज
              - राहुल
              - हरिओम
        - मूरत
          - रामचरित्र
            - राधेश्याम
              - शैलेन्द्र
                - मयंक
              - अमरेन्द्र
                - आदर्श
              - नवेन्द्र
            - विनोद
              - दिनेश
              - राजेश
  - पारसमणि (देखू सीट नं. VI)

छतिबन कुर्सीनामा ग्राम-कबिलपुर, जिला-दरभंगा (बिहार)
सीट नं० VI

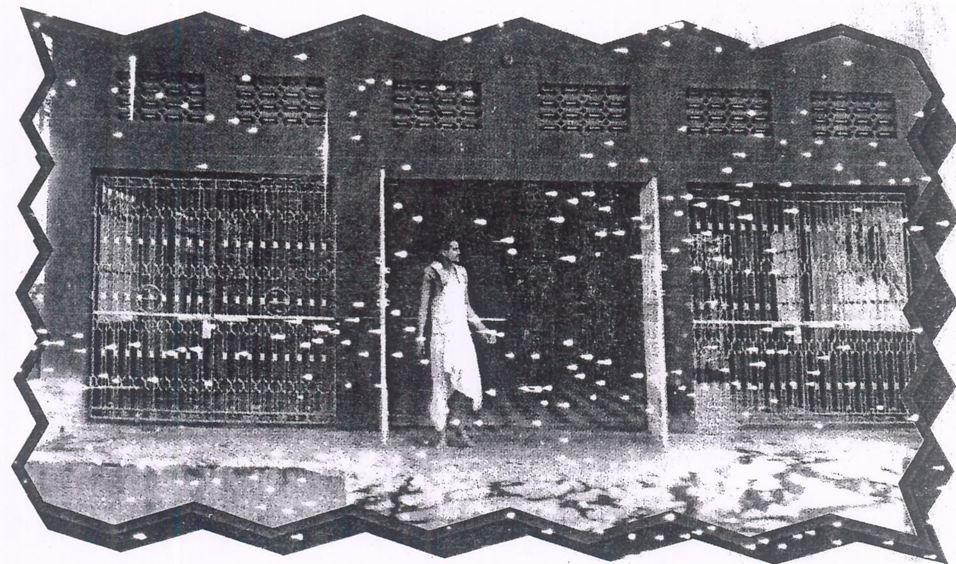
- पारसमणि
  - ललित
    - बचकनि
      - विधाता
        - विशेश्वर
          - रामचन्द्र
            - कमलेश
              - इन्द्रजीत
                - ऋषभराज
              - विश्वजीत
                - नमन
              - चन्द्रजीत
              - सूर्यजीत
              - रणजीत
          - कृष्णचन्द्र
            - धीरेन्द्र
              - धर्मजीत
              - अमरजीत
              - सत्यजीत
            - प्रभात
              - प्रथमजीत
              - कर्मजीत
            - अजय
              - अमनजीत
            - विजय
              - मनजीत
              - अभिजीत
      - महावीर

छतिबन कुर्सीनामा ग्राम-कबिलपुर, जि०-दरभंगा (बिहार)
सीट नं० VII

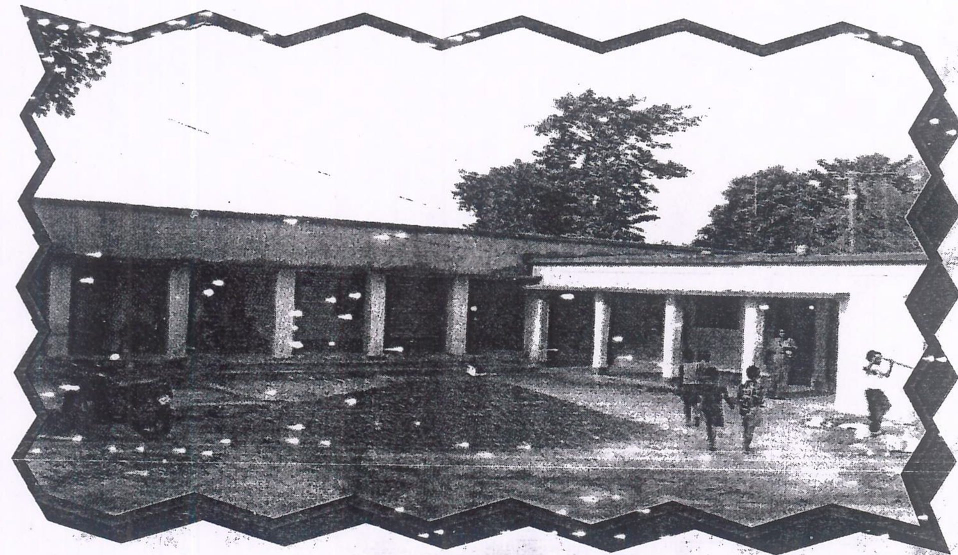
- गंगाराम झा
  - महेश
    - अकलू (प्रव्रजन: भिड़हा)
  - मनसा
    - पोसा
      - बलमन
        - वंशमणि
        - भगीरथ
        - जगत
        - पवित्री
          - रामदर्शन
            - सूर्यनारायण
          - रामकुमार
      - मोहर
        - उत्तिम
          - रामसुरेश
      - हरियाव
    - गणेश
      - रामनाथ
        - मच्छाइ
        - शिवलाल
          - अमीरी
    - हरंगी
      - सुवेश
        - चेथरू
        - श्रीराम
          - शोभित
        - रामजी
          - बहादुर



कबिलपुरक किछु विशिष्ट दर्शनीय स्थल



भगवतीस्थान



कबिलपुर मध्य विद्यालय